वर्ष-6, अंक-14, 16-31 जुलाई, 2021 (पाक्षिक)

चाणक्य वार्ता

राजभाषा हिन्दी की संपूर्ण अंतरराष्ट्रीय पत्रिका

ISSN 2456-1207

मूल्य : 50 रुपये

कुल पृष्ठ 40

इस अंक में पढ़ें

तीन दशक में तीसरी सबसे बड़ी मंत्रीपरिषद, देश के अधिकतर राज्यों को दिया गया प्रतिनिधित्व, अरुण कुमार को मिली संघ-भाजपा के समन्वयक की जिम्मेदारी, भारतीयों के डीएनए पर घमासान, पुष्कर सिंह धामी बने उत्तराखंड के सबसे युवा मुख्यमंत्री, चीन को लगी मिर्ची, जाने संगठन शास्त्र का आधार क्या है, दिमाग अपना हो या दूसरों का आदि महत्वपूर्ण सामग्री। साथ ही पढ़ें देश-विदेश की प्रमुख खबरें तथा सभी स्थायी स्तंभ।

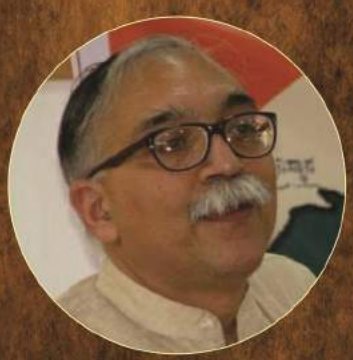

दुर्बल के साथ संधि न करे। ठंडा लोहा लोहे से नहीं जुड़ता।— आचार्य चाणक्य

VISIT…

चाणक्य वार्ता की ऐतिहासिक पहल-देश विदेश के प्रमुख स्थानों पर होगा पत्रिका का संकलन

चाणक्य वार्ता के पांच वर्षों के 120 अंकों के 15 खंड चाणक्य वार्ता के केंद्रीय कार्यालय, नई दिल्ली में संकलित किये गये हैं।

चाणक्य वार्ता के 5 वर्षों के संकलन को विभिन्न पुस्तकालयों में रखा गया है, जिनमें से एक पुस्तकालय जनकपुरी संघ कार्यालय भी है। वहां पर चाणक्य वार्ता के संकलन के साथ वरिष्ठ संघ प्रचारक अजय कुमार व उनके सहयोगी।

चाणक्य वार्ता के पांच वर्षों के 120 अंकों के 15 खंड केंद्रीय हिन्दी संस्थान, नई दिल्ली और आगरा के पुस्तकालयों हेतु केंद्रीय हिन्दी संस्थान के उपाध्यक्ष अनिल शर्मा को भेंट करते हुये विशिष्टजन। इसी दिन झांसी विश्वविद्यालय के पुस्तकालय हेतु भी एक सैट वहां के प्रोफेसर अवनीश कुमार को भी भेंट किया गया।

जैन विद्या संस्थान, श्री महावीर जी (राजस्थान) में रखा गया चाणक्य वार्ता का पांच वर्षों का संकलन।

श्रीमति कांतिदेवी जैन मेमोरियल ट्रस्ट, रामघाट, उ.प्र. के पुस्तकालय में संकलित पत्रिका के पांच वर्षों के अंक।

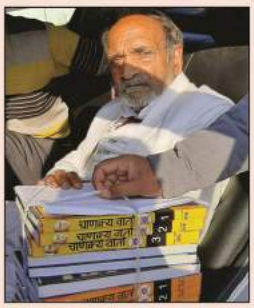

चा.वा. के राष्ट्रीय समंवयक श्री घनराज भम्बी पत्रिका के सैट उदासीन आश्रम पटियाला, पंजाब ले जाते हुये।

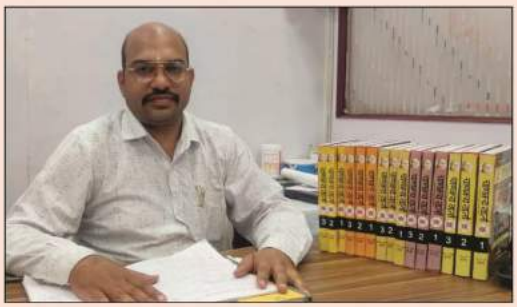

चाणक्य वार्ता के पंचकुला, हरियाणा स्थित कार्यालय में पत्रिका के पांच वर्षों के संकलन के साथ चाणक्य वार्ता के उत्तर क्षेत्र प्रभारी विशाल शर्मा।

चाणक्य वार्ता के जगाधरी, हरियाणा स्थित कार्यालय में पत्रिका के पांच वर्षों के सैट के साथ चाणक्य वार्ता के राष्ट्रीय सोशल मीडिया प्रभारी आदित्य जैन।

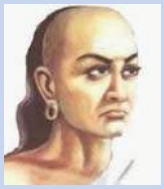

चाणक्य वार्ता

सम्पूर्ण अंतरराष्ट्रीय पत्रिका

वर्ष : 6, अंक : 14, 16-31 जुलाई, 2021

अनुक्रम

5 सम्पादक के नाम पत्र

6 सम्पादक की कलम से

राष्ट्रीय

08 मोदी मंत्रिमंडल का विस्तार, देश के अधिकतर राज्यों को दिया गया प्रतिनिधित्व : धीरेंद्र मिश्र

12 राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय प्रान्त प्रचारक बैठक चित्रकूट में संपन्न : विशाल शर्मा

13 भारतीयों के डीएनए पर घमासान क्यों ? : सारांश कनौजिया

15 संगठन-शास्त्र के दो आधार : वार्तालाप और पत्राचार-1 : लक्ष्मीनारायण भाला

राज्यों से

18 उत्तराखंड—पुष्कर सिंह धामी : उत्तराखंड के सबसे युवा मुख्यमंत्री : इन्द्रमोहन मिश्रा

20 उत्तर प्रदेश—वाराणसी की प्राचीन जैन संस्कृति एवं परम्परा-2 : प्रो. फूलचंद जैन प्रेमी

चिंतन

22 नमक आंदोलन के दौरान संघ-जेल में और बाहर : कांग्रेस और संघ
एक सिंहावलोकन-27 : कृष्णानंद सागर

23 आचार्य चाणक्य की ये बातें - आज भी हैं बड़े काम की : रमेश जैन

विविध

24 जी-7 ने छेड़ा राग, चीन को मिर्ची लगी तो भारत क्या करे : शैलेन्द्र कुमार सिंह

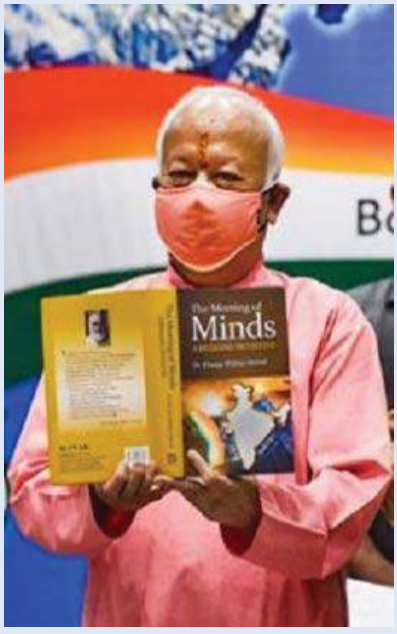

नई दिल्ली कार्यालय
मुख्यालय :
'सन्निधि', ए-28, मनसाराम पार्क, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059
कॉरपोरेट कार्यालय :
321, तृतीय तल, वर्धमान मॉल, प्लॉट-2, सेक्टर-19, द्वारका, नई दिल्ली-110077
सम्पर्क : 09871909808, 08571841127
ई-मेल : **chanakyavarta@gmail.com**

उत्तर क्षेत्र कार्यालय
एस.सी.ओ. 24, द्वितीय तल, सेक्टर-11, पंचकूला, हरियाणा-134112
सम्पर्क : 0172-4672424, 09466988764

पूर्वोत्तर क्षेत्र कार्यालय
116, कॉमर्स हाउस, एम.जी. रोड, फैंसी बाजार निकट ऐक्सिस बैंक, गुवाहाटी, असम-781001
सम्पर्क : 09101834214, 9864337619

दक्षिण क्षेत्र कार्यालय
13, नल्लन्ना मुदली स्ट्रीट, साहुकारपेट, चेन्नई-600 079
सम्पर्क : 9342302248, 9941245660

संरक्षक
डॉ. योगेन्द्र नारायण (पूर्व महासचिव, राज्यसभा)
कुलाधिपति, गढ़वाल विश्वविद्यालय
लक्ष्मीनारायण भाला (वरिष्ठ साहित्यकार)

परामर्श मंडल
ए. सूर्य प्रकाश (पूर्व अध्यक्ष, प्रसार भारती)
पद्मश्री डॉ. श्यामसिंह शशि
(कुलाधिपति, रोमा विश्वविद्यालय)
वेणुगोपालन (वरिष्ठ पत्रकार)

सम्पादक मंडल
सम्पादक : **डॉ. अमित जैन**
राजनीतिक सम्पादक : **ओम प्रकाश पाल**
उप सम्पादक : **सारांश कनौजिया**

राष्ट्रीय समन्वयक
घनराज भम्बी
(वरिष्ठ पत्रकार—रक्षा सेनाएँ एवं अर्द्ध सैनिक बल)

राष्ट्रीय प्रचार-प्रसार प्रभारी
दिलीप बैनर्जी, कोलकत्ता
डा. सु. कृष्णचन्द्र चौरडियां, चेन्नई

आर्थिक सलाहकार मंडल
सी.ए. मन्त्रेश्वर कर्ण
सी.ए. स्वीटी जैन

अन्तरराष्ट्रीय सलाहकार मंडल
धर्मपाल महेन्द्र जैन, टोरंटो, कनाडा

विधि सलाहकार मंडल
योगेश कुमार (चेयरमैन, नेचर व्यू)
अजय नागर (स्वतंत्र पत्रकार)
डॉ. भरत कुमार, (शिक्षाविद्), बनारस

राज्य प्रभारी
उत्तर क्षेत्र प्रभारी—**विशाल शर्मा**, चंडीगढ़
पूर्वोत्तर क्षेत्र प्रभारी—**राजीब अगस्ती**, गुवाहाटी
दक्षिण क्षेत्र प्रभारी—**नवरतन पींचा जैन**, चेन्नई
पश्चिमी क्षेत्र प्रभारी—**आशा सिंह देवासी**, मुम्बई
पूर्वी क्षेत्र प्रभारी—**प्रकाश बेताला**, भुवनेश्वर
कर्नाटक प्रभारी—**हर्ष गोयल**, बेंगलुरु
तमिलनाडु प्रभारी—**जे.पी. ललवानी**, चेन्नई
मध्य प्रदेश प्रभारी—**लखनलाल चौरसिया**, भोपाल
पश्चिमी उ.प्र. प्रभारी—**अंकित जैन**, मेरठ

श्रद्धांजलि

25 श्री राजेन्द्र अरुण, श्री वीरभद्र सिंह

कविताएं

26 गलती : राजेन्द्रप्रसाद
26 झुलस रहा सत्य देश में : ज्ञानीचोर
26 बातों का विस्तार : अवनीश त्रिपाठी
27 युवा : सूर्यदीप कुशवाहा
27 सही वक्त है अभी मना लो : संजीव शर्मा
27 देवेन्द्र दीपक जी : रामस्वरूप दीक्षित
27 सावन की रितु आई : बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

व्यंग्य

28 दिमाग अपना हो या दूसरों का : धर्मपाल महेंद्र जैन

समाचार जगत

29 खबरों में देश-विदेश : सोनम जैन
30 उत्तर भारत की खबरें : विशाल शर्मा/शैलेन्द्र जैन
31 पूर्वोत्तर भारत की खबरें : राजीब अगस्ती/आलोक सिंह
32 दक्षिण भारत की खबरें : नवरतन पिंचा जैन/वेदप्रकाश पांडेय
35 पश्चिम भारत की खबरें : आशा सिंह देवासी/धीरेन बरोट

जॉब अलर्ट

36 सरकारी नौकरी के अवसर : सीए स्वीटी जैन

सबरंग

37 सिनेमा, टेलीविजन, आयोजन : डॉ. महेश्वर

देश भर में 'चाणक्य वार्ता' के प्रतिनिधि

राज्य ब्यूरो चीफ
धीरेन्द्र मिश्र, नई दिल्ली
डॉ. अमर सिंहल, जयपुर, राजस्थान
शैलेन्द्र जैन, लखनऊ, उत्तर प्रदेश
इन्द्रमोहन मिश्रा, हरिद्वार, उत्तराखंड
डॉ. गुलाब सिंह, यमुना नगर, हरियाणा
शरद छिब्बर, चंडीगढ़
रमेश गुप्ता, उधमपुर, जम्मू-कश्मीर
एस.के. व्यास, जलंधर, पंजाब
गुरुवचन सिंह, शिमला, हिमाचल प्रदेश
सतीश सिंह, गुवाहाटी, असम
आलोक सिंह, शिलांग, मेघालय
शुभ्रांशु दाम, धर्मनगर, त्रिपुरा
तुम्बम रीबा 'लीली', ईटानगर, अरुणाचल प्रदेश
हुरई जेलियांग, दीमापुर, नागालैंड
डॉ. ललमुआनओमा साइलो, आईजोल, मिजोरम
किरन कुमार, इम्फाल, मणिपुर
डॉ. छुकी लेप्चा, गंगटोक, सिक्किम
वेद प्रकाश पाण्डेय, बेंगलुरु, कर्नाटक
ईश्वर करुण, चेन्नई, तमिलनाडु
जी. गौरीशंकर, हैदराबाद, तेलंगाना
उमा महेश्वर रेड्डी, विजयवाड़ा, आंध्रप्रदेश
श्रीकांत कण्णन, पुडुचेरी
अरुण लक्ष्मण, तिरुवन्तपुरम, केरल
धीरेन बरोट, अहमदाबाद, गुजरात
अमोस छेत्री, पणजी, गोवा
किशोर आपटे, मुम्बई, महाराष्ट्र
विनायक भिषे, सतारा, महाराष्ट्र
विनोद कुशवाहा, भोपाल, म.प्र.
आदेश ठाकुर, रायपुर, छत्तीसगढ़
सियानंद मंडल, पटना, बिहार
गौतम चौधरी, राँची, झारखंड
दिनेश जैन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल
राजेन्द्रपाल शर्मा, पोर्टब्लेयर, अंडमान निकोबार

नेशनल सोशल मीडिया हेड
आदित्य जैन, यमुनानगर

नेशनल मार्केटिंग हेड
पीयुष जैन, नई दिल्ली

जिला ब्यूरो चीफ
अविनाश पाठक, नागपुर, महाराष्ट्र
अनमोल जैन, मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश
सुनीता गोस्वामी, मथुरा, उत्तर प्रदेश
डॉ. डी.के. अस्थाना, अलीगढ़, उत्तर प्रदेश
संजय सक्सेना, कानपुर, उत्तर प्रदेश
सोनम जैन, दिल्ली
अजय भट्ट, देहरादून
ए. रणजीत, आईजोल, मिजोरम

*नोट : देश के कोने-कोने में आप अपने समाचार पत्र हॉकर के माध्यम से घर बैठे 'चाणक्य वार्ता' पत्रिका मँगा सकते हैं। यदि आपको पत्रिका मिलने में कठिनाई होती है, तो आप 'चाणक्य वार्ता' के मुख्य प्रसार कार्यालय, नई दिल्ली में **08586858185** पर सम्पर्क कर सकते हैं अथवा*

***chanakyavarta@gmaiD.com** पर ई-मेल भी कर सकते हैं।*

—प्रसार प्रबंधक

© सर्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक, प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है। प्रकाशित रचनाओं के विचार से 'चाणक्य वार्ता' पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अंतर्गत विचारणीय रहेंगे।

इंटरनेशनल दिव्य परिवार सोसाइटी, नई दिल्ली का पाक्षिक प्रकाशन

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अमित जैन के लिए विकास कम्प्यूटर एंड प्रिंटर्स, ट्रोनिका सिटी, लोनी, गाजियाबाद से मुद्रित एवं ए-28, मनसाराम पार्क, नई दिल्ली से प्रकाशित।

सम्पादक : अमित जैन।

आवरण व लेआउट : **स्वपन कम्यूनिकेशन, दिल्ली**

वेबसाइट : www.chanakyavarta.com

आप सभी पाठकगण पत्रिका में प्रकाशित लेखों पर अपने विचार या कोई सुझाव हमें हमारी ई-मेल आईडी response50123@gmail.com पर भेज सकते हैं। स्थान की उपलब्धता के अनुसार हम आपके विचारों को शामिल करने का प्रयास करेंगे।
—सम्पादक 'चाणक्य वार्ता'

अमित जी के संपादकीय बहुत ही सधे हुए और अर्थपूर्ण होते हैं। इनकी लेखनी भी और अधिक ताकतवर बने, ऐसी कामना है।

राजेंद्र प्रसाद 'वत्स'
वित्त मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली

चाणक्य वार्ता का संपादकीय बहुत ही सुंदर व सही जानकारियां प्रदान करता हैं। आपके द्वारा लिखित जनता से सहयोग की आशा की बात खरी व उचित लगी। आप अपने सम्पादकीय को मेरे पास भी भेजें, ताकि इसे अन्य पत्र-पत्रिकाओं में भी प्रकाशित किया जा सके।

सुरेन्द्र मुनोत
ब्यूरो चीफ, अहिंसा क्रान्ति, कोलकाता, प.बं.

चाणक्य वार्ता के 1 जुलाई के अंक में कोरोना पर योगेश कुमार गोयल का लेख पढ़ा। इस लेख में उन्होंने कोरोना की तीसरी लहर और इसके नित्य नए आ रहे प्रकारों पर चिंता व्यक्त की। आज भारत ही नहीं पूरा विश्व कोरोना के भय से डरा हुआ है। इसके पीछे का कारण वही है, जिसकी चर्चा लेखक ने की है। भारत के अधिकांश स्थानों पर दूसरी लहर समाप्त हो चुकी है, किंतु इसके बाद भी हम चैन की नींद नहीं सो पा रहे हैं क्योंकि कई विशेषज्ञों के अनुसार तीसरी लहर हमसे बहुत दूर नहीं है। योगेश कुमार गोयल ने इससे जुड़े तथ्यों को प्रमाणिक रुप से रखा है। मेरा मानना है की जिस प्रकार हम पूर्व में मास्क और सोशल डिस्टेंस जैसी गाइडलाइन को फॉलो करते थे, उसी प्रकार करते रहें, तो खतरे को कम किया जा सकता है। अच्छी बात है की भारत की एक बड़ी आबादी को कम से कम कोरोना का एक टीका लग चुका है। इसी अंक में मैंने दीपक जैन का एमएसएमई उद्योग पर लेख पढ़ा। उन्होंने इस लेख में बहुत ही अच्छी तरह से कोरोना की पहली लहर के बाद के एमएसएमई सेक्टर पर प्रकाश डाला है। कोरोना एक बड़ी समस्या बना हुआ है किंतु इस कालखंड में भी उद्योगों से जुड़े कुछ ऐसे कार्य हैं, जिनके माध्यम से समाज सेवा और व्यापार दोनों ही किया जा सकता है। आज के निराशापूर्ण वातावरण में इस प्रकार के लेख हमें नई ऊर्जा से भर देते हैं।

कुमार स्वामी नटराजन
हैदराबाद, तेलंगाना

चाणक्य वार्ता के 1 जुलाई के अंक में रमेश गुप्ता द्वारा दी गयी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ जम्मू-कश्मीर के नेताओं की दिल्ली में हुई बैठक की रिपोर्ट पढ़ी। कई जम्मू-कश्मीर के नेताओं के सुर अलग थे, किंतु अच्छी बात यह है कि ये सभी वार्ता करने के लिए दिल्ली आए। उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी के सामने अपनी बात रखी। मोदी सरकार के द्वारा भी जम्मू-कश्मीर में सक्रिय सभी राजनीतिक दलों को इस बैठक के लिए आमंत्रित करना एक अच्छी पहल है। इससे जम्मू-कश्मीर निवासियों को भी इस बात का एहसास हुआ होगा की केंद्र सरकार उनके राज्य में राजनीतिक गतिविधियों को फिर से शुरू करने की दिशा में लगातार प्रयासरत है। इस बैठक में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने स्पष्ट किया कि जैसे ही जम्मू-कश्मीर का परिसीमन समाप्त हो जाएगा, वहां चुनाव की प्रक्रिया प्रारंभ करने का प्रयास शुरू होगा। यदि कोरोना के कारण हालात खराब नहीं हुए तो इस वर्ष के अंत तक वहां या तो चुनाव हो जाएंगे अथवा चुनाव की तारीख तय हो चुकी होगी। अगले वर्ष 2022 में जम्मू-कश्मीर को भी अपना नया मुख्यमंत्री मिल जायेगा। आशा है कि अब जो भी मुख्यमंत्री बनेगा, वह जम्मू-कश्मीर को भारत से जोड़ने की बात करेगा, न कि तोड़ने की।

केशव कुमार भारतीय
कानपुर देहात, उ.प्र.

चाणक्य वार्ता के 1 जुलाई के अंक में कृष्णानंद सागर की लेख श्रृंखला का 26वां भाग पढ़ा। इसमें उन्होंने जंगल सत्याग्रह में संघ के स्वयं सेवकों की भागीदारी के बारे में बताया है। मेरे लिए यह विषय नया था क्योंकि जितना भी इतिहास में पढ़ाया गया है, उसके अनुसार तो संघ स्वतंत्रता आंदोलन से दूर ही रहा था। इसके पीछे का कारण क्या था मुझे नहीं पता, किंतु कृष्णानंद सागर के लेख से ऐसा लगता है कि संघ के कार्यकर्ता स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रहे, परंतु वामपंथी इतिहासकारों ने उनका उल्लेख इतिहास में नहीं किया, इसीलिये हम इन छिपे हुये स्वतंत्रता सेनानियों से अवगत नहीं हैं।

पं. रमाशंकर चतुर्वेदी
शिमला, हिमाचल प्रदेश

चाणक्य वार्ता के 1 जुलाई के अंक में नंबरों पर डॉ रंजना जायसवाल का व्यंग पढ़ा। उन्होंने शुरुआत कोरोना के कारण मृत्यु को प्राप्त हुये एक व्यक्ति के अंतिम संस्कार के लिए लगी लाइन से की। लेखिका के द्वारा बताया गया कि अंतिम समय पर भी नंबरों ने उनका पीछा नहीं छोड़ा। वास्तव में इस आधुनिक युग की भाग दौड़ में हम हमेशा ही नंबरों के पीछे पड़े रहते हैं। कोई नंबर 1 आने के लिए प्रयासरत रहता है, तो कोई नंबर एक की स्थिति बनाए रखने के लिए। लेखिका ने भी नंबरों के ऐसे ही कुछ अन्य पहलुओं को अपने व्यंग में स्थान दिया है। लेखिका ने बहुत ही मार्मिक एवं सुंदर ढंग से कुछ स्थानों पर नंबरों के चक्कर में आने वाली व्यवहारिक कठिनाइयों को भी अपने व्यंग में पिरोया है। कुल मिलाकर मुझे यह लेख बहुत अच्छा और प्रेरणादायी लगा।

हरेन भाई पटेल
सूरत, गुजरात

चाणक्य वार्ता अपने प्रत्येक अंक में समाचारों को स्थान देती है। जब पत्रिका का 1 जुलाई का अंक मेरे सामने आया तो मुझे लगा की इस विषय में भी बात होनी चाहिए। दैनिक समाचार पत्रों और चैनलों में न्यूज़ एक सामान्य बात है, किंतु चाणक्य वार्ता के द्वारा जिस प्रकार समाचारों को विश्लेषणात्मक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है, वह सबसे अलग है। इसलिए ऐसे समाचार जो हम पहले से पढ़ चुके होते हैं वह भी नये लगते हैं।

नए कलेवर के साथ संपूर्ण देश के समाचारों को प्रस्तुत करना संपादक मंडल की विशेषज्ञता को दर्शाता है। पत्रिका के संपादक और उसके स्थाई स्तंभ के अंतर्गत प्रकाशित समाचारों का संकलन करने वाले सभी सहयोगी इसके लिए धन्यवाद के पात्र हैं। मैं पत्रिका से यह अपेक्षा रखती हूं कि अगले अंकों में कुछ और नए समाचारों को स्थान दें, जो आम जनता तक नहीं पहुंच पाते।

रंजना सूद
द्वारका, दिल्ली

तीन दशक में तीसरी सबसे बड़ी मंत्रिपरिषद

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा नवगठित मंत्रिपरिषद 1990 के बाद मंत्रियों की तीसरी सबसे बड़ी परिषद है। अटल बिहारी वाजपेयी सरकार के तहत दो बार और पहली मनमोहन सिंह सरकार के तहत दो बार प्रधानमंत्री को छोड़कर 80 मंत्री परिषद में शामिल हुए। वर्तमान मंत्रिपरिषद में पीएम को छोड़कर 77 मंत्री शामिल हैं। मोदी सरकार 2.0 में अभी तक 53 मंत्री शामिल थे। 7 जुलाई, 2021 को कैबिनेट में भारी फेरबदल के बाद नरेंद्र मोदी सरकार के नए मंत्रिपरिषद का आकार 53 से बढ़कर 77 हो गया है। वर्तमान परिषद में 30 कैबिनेट मंत्री और 47 राज्य मंत्री शामिल हैं। जबकि पिछली परिषद में 21 कैबिनेट और 32 राज्य मंत्री थे। वर्तमान मंत्रिपरिषद की औसत आयु 58 वर्ष है। वर्तमान परिषद में केवल तीन मंत्री 70 वर्ष से अधिक आयु के हैं, जिनमें राज्य मंत्री सोम प्रकाश की आयु सबसे अधिक 72 वर्ष है, जबकि कूच बिहार से भारतीय जनता पार्टी के सांसद निसिथ प्रमाणिक 35 वर्ष के हैं और मंत्रिपरिषद में सबसे युवा सदस्य हैं। मंत्रिपरिषद में 40 वर्ष से कम आयु के दो मंत्री, 41 से 50 वर्ष की आयु के 10 मंत्री, 51 से 60 वर्ष की आयु के बीच के 26 मंत्री और 61 से 70 वर्ष की आयु के बीच के 36 मंत्री शामिल हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की आयु भी 70 वर्ष है।

मंत्रिपरिषद के 77 मंत्रियों में से उत्तर प्रदेश राज्य का 14 सदस्यों के साथ सबसे अधिक प्रतिनिधित्व है। इसके बाद महाराष्ट्र 9, गुजरात 7, बिहार 6, कर्नाटक 6, मध्य प्रदेश 6, राजस्थान 4, पश्चिम बंगाल 4 और झारखंड से 3 मंत्री हैं। दो-दो सदस्य हरियाणा और ओडिशा से हैं। ये राज्यवार संख्याएं संसद की सदस्यता पर आधारित होती हैं। असम में भी अब दो मंत्री हैं, लेकिन उनमें से एक सर्बानंद सोनोवाल, संसद सदस्य नहीं हैं, उन्हें भी अब शीघ्र ही संसद का सदस्य बनना होगा। विशेष बात यह रही कि प्रधानमंत्री ने तमिलनाडु राज्य का प्रतिनिधित्व करने के लिए डॉ. एल. मुरुगन जो किसी सदन के सदस्य नहीं हैं, उन्हें भी मंत्रिपरिषद में शामिल करके दक्षिण भारत के मतदाताओं को अच्छा सन्देश दिया है। शेष भारत के अन्य राज्यों के मंत्री भी हैं। कुल मिलाकर 77 मंत्री 24 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों का प्रतिनिधित्व करते हैं। 1990 के बाद से दूसरा सबसे बड़ा प्रतिनिधित्व दूसरी यूपीए सरकार के अधीन था जब 23 राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों के प्रतिनिधियों ने 12 जुलाई, 2011 से 27 अक्टूबर, 2012 तक मंत्रिपरिषद में मंत्री के रूप में कार्य किया था।

नरेंद्र मोदी सरकार में सबसे अधिक महिला मंत्री हैं, जिनकी संख्या 11 है। मोदी के नेतृत्व वाली सरकार का पिछला उच्च स्तर 5 जुलाई 2016 से 2 सितंबर 2017 तक 10 था। इसके उलट यूपीए-द्वितीय सरकार के अंतिम वर्ष में 17 जून, 2013 के बाद से 12 महिलाएं मंत्री परिषद में थीं जो 1990 के बाद सबसे अधिक संख्या थी। मोदी मंत्रिपरिषद में केवल दो महिलाएं हैं, जो कैबिनेट में शामिल हैं, जबकि पहली मोदी सरकार की कैबिनेट में 6 महिला मंत्री शामिल थीं।

जातीय समीकरण के लिहाज से मोदी मंत्रिमंडल की बात करें तो एसटी से 8, एससी से 12, ओबीसी से 27 और 5 अल्पसंख्यक समुदाय और शेष अन्य मंत्री हैं। योग्यता के आधार पर देखें तो इनमें 13 वकील, सात डॉक्टर, पांच इंजीनियर और सात नौकरशाह मंत्रिपरिषद में शामिल हैं। यानि मोदी सरकार में राज्यों की विविधता के साथ ही सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास की झलक दिखाई देती है।

''नरेंद्र मोदी सरकार में सबसे अधिक महिला मंत्री हैं, जिनकी संख्या 11 है। मोदी के नेतृत्व वाली सरकार का पिछला उच्च स्तर 5 जुलाई 2016 से 2 सितंबर 2017 तक 10 था। इसके उलट यूपीए-द्वितीय सरकार के अंतिम वर्ष में 17 जून, 2013 के बाद से 12 महिलाएं मंत्री परिषद में थीं जो 1990 के बाद सबसे अधिक संख्या थी।''

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नई टीम गवर्नेंस रीबूट और सियासी समीकरणों पर आधारित है। टीम मोदी के बड़े फेरबदल में कई दिग्गज मंत्रियों रविशंकर प्रसाद, प्रकाश जावड़ेकर, डॉ. हर्षवर्धन, रमेश पोखियाल निशंक सहित 12 मंत्रियों को हटाया गया है, जिनको कोई और जिम्मेदारी दिए जाने की चर्चा है। वहीं नए चेहरे शामिल करके जाति, युवाओं, महिलाओं और चुनावी राज्यों के प्रतिनिधित्व के मिश्रण पर जोर दिया गया है। प्रधानमंत्री द्वारा लगभग तीन दर्जन नए चेहरों को अपनी मंत्रिपरिषद में शामिल किया गया है। नए मंत्रिमंडल में पूर्व केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, सर्बानंद सोनोवाल, नारायण राणे, राजीव चंद्रशेखर, भूपेंद्र यादव, आरसीपी सिंह, अश्विनी वैष्णव जैसे अनुभवी और कद्दावर लोगों को जगह दी गयी है।

नए चेहरों से पता चलता है बीजेपी अपनी भविष्य की राजनीतिक योजना पर काम कर रही है। यही वजह है कि मंत्रिमंडल विस्तार में पार्टी के चुनावी विचार के अलावा भाजपा के राजनीतिक हितों का पूरी तरह से ख्याल रखा गया है। बतौर उदाहरण शिव सैनिक से कांग्रेसी और अब भाजपा नेता बने नारायण राणे को शिवसेना के विकल्प के रूप में, सिंधिया को मध्य प्रदेश में कांग्रेस को समाप्त करने के लिए, वहीं अनुप्रिया पटेल, आरसीपी सिंह, पशुपति पारस और रामदास अठावले को उत्तर प्रदेश व बिहार से जोड़कर मंत्रिमंडल में स्थान दिया गया है। वहीं पश्चिम बंगाल से चार मंत्री बनाकर प्रधानमंत्री ने साफ कर दिया है कि ममता बनर्जी के लिए सरकार चलाना आसान नहीं होगा। ऐसा इसलिए कि जॉन बारला बंगाल विभाजन के समर्थक हैं, जिन्हें बीजेपी ने मंत्री बनाया है।

वहीं सोशल इंजीनियरिंग के तहत मोदी की नई टीम में युवाओं, महिलाओं एवं अनुभवी प्रतिनिधियों को शामिल करके देश के विकास को नई गति देने का प्रयास प्रधानमंत्री के द्वारा किया गया है। निश्चित रूप से इसका लाभ भाजपा को आगामी चुनावों में मिलेगा।

—डॉ. अमित जैन

हरियाणा सरकार

हरियाणा में खुशहाल बागवानी

किसानों के लिए अनुदान का प्रावधान

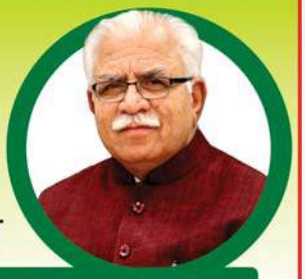

श्री मनोहर लाल, मुख्यमंत्री, हरियाणा

नर्सरी की स्थापना
40 से 50 प्रतिशत
(7.50 लाख रुपये से
40 लाख रुपये तक)

नए बागों की स्थापना
50 प्रतिशत
(50 हजार रुपये प्रति एकड़ तक)

सब्जियों की खेती
40 प्रतिशत
(8000 रुपये प्रति एकड़ तक)

मशरूम उत्पादन इकाई,
कम्पोस्ट मेकिंग
इकाई व स्पॉन मेकिंग इकाई
40 से 50 प्रतिशत
(6 लाख रुपये से
8 लाख रुपये तक)

सामुदायिक तालाब
100 प्रतिशत
(20 लाख रुपये तक)
व्यक्तिगत तालाब
70 प्रतिशत
(7 लाख रुपये तक)

संरक्षित संरचना
65 प्रतिशत
(11.70 लाख रुपये से
32.78 लाख रुपये तक)

मधुमक्खी के बक्से व कालोनी
85 प्रतिशत
(1.87 लाख रुपये
प्रति 50 बक्से एवं 50 कालोनी)

पैक हाउस/कोल्ड स्टोरेज/ग्रेडिंग इत्यादि
एकल : 35 से 50 प्रतिशत (2 लाख रुपये तक)
एफ.पी.ओ. : 70 से 90 प्रतिशत
(35 लाख रुपये से 5.40 करोड़ रुपये तक)

बागवानी उपकण
25 प्रतिशत से 50 प्रतिशत
(300 रुपये से लेकर
1.50 लाख रुपये तक)

नोट

किसानों से निवेदन है कि वे ऑनलाइन आवेदन निम्नलिखित लिंक पर करें।
www.hortharyana.gov.in / www.hortnet.gov.in / www.hortharyanaschemes.in
विभाग की सभी योजनाओं व अधिक जानकारी के लिए किसान अपने जिला उद्यान अधिकारी एवं खंड स्तर पर उद्यान विकास अधिकारी से संपर्क करें।

उद्यान विभाग

उद्यान भवन, सेक्टर-21, पंचकूला, हरियाणा-134112
ई-मेल :- horticulture@hry.nic.in, mdmidhharyana@gmail.com, वेबसाइट :- www.hortharyana.gov.in

सूचना, जन सम्पर्क एवं भाषा विभाग, हरियाणा । www.prharyana.gov.in @Cmohry @DiprHaryana

मोदी मंत्रिमंडल का विस्तार, देश के अधिकतर राज्यों को दिया गया प्रतिनिधित्व

धीरेन्द्र मिश्र

सात जुलाई को केंद्रीय मंत्रिपरिषद का विस्तार होने के बाद नवनियुक्त मंत्रियों ने अपने-अपने मंत्रालय का कामकाज संभाल लिया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की मंत्रिपरिषद में 43 नेताओं को मंत्री पद की शपथ दिलाई गई है। इनमें कैबिनेट विस्तार में 7 मंत्रियों का प्रमोशन किया गया, जबकि मंत्रिपरिषद में 36 नए चेहरों को शामिल किया गया। इनमें से आठ नए चेहरों को मोदी कैबिनेट में जगह मिली है। इसके साथ ही मंत्रिपरिषद में प्रधानमंत्री मोदी को छोड़कर कुल 77 मंत्री शामिल है।

नरेंद्र मोदी सरकार में 36 नए मंत्रियों को शामिल किया गया है। इसके पीछे दो बड़े कारण हैं। एक तो पीएम मोदी की सियासी स्तर पर व्यावहारिक मजबूरियां और दूसरा महामारी के बाद जनता को जमीनी काम दिखाने की जरूरत। ताकि 2022 और 2024 में इसका लाभ उठाया जा सके। दरअसल, प्रधानमंत्री मोदी ने जून में सभी मंत्रालयों की समीक्षा की थी। सभी के कामकाज का 360 डिग्री रिव्यू किया गया था। इस दौरान पीएम मोदी ने तय किया कि किस-किस मंत्री को हटाना है और मंत्रिपरिषद में किसे रखना है। पीएम मोदी के लिए यह जरूरी हो गया था। लोग केवल यही देखते हैं कि सरकार ने काम क्या किया है। अपनी इसी इमेज को बरकरार रखने के लिए प्रधानमंत्री मोदी ने अपने मंत्रिमंडल का विस्तार किया है।

मंत्रिपरिषद में शामिल 43 नए मंत्री

कैबिनेट मंत्री : नारायण राणे, सर्बानंद सोनोवाल, अनुराग ठाकुर, ज्योतिरादित्य सिंधिया, हरदीप सिंह पुरी, मनसुख मंडाविया, भूपेंद्र यादव, अश्विनी वैष्णव, आरके सिंह, किरेन रिजिजू, डॉ. विरेंद्र कुमार, राम चंद्र प्रताप सिंह, पशुपति कुमार पारस, राज कुमार सिंह, पुरुषोत्तम रुपाला और जी किशन रेड्डी।

राज्य मंत्री : पंकज चौधरी, अनुप्रिया सिंह पटेल, डॉ. एसपी सिंह बघेल, राजीव चंद्रशेखर, डॉ. एल मुरुगन, शोभा करांदलाजे, भानू प्रताप सिंह वर्मा, दर्शना विक्रम जर्दोश, मीनाक्षी लेखी, अन्नपूर्णा देवी, ए. नारायणस्वामी, कौशल किशोर, अजय भट्ट, बीएल वर्मा, अजय कुमार, देवुसिंह चौहान, भगवंत खुबा, कपिल मोरेश्वर पाटिल, प्रतिमा भौमिक, डॉ. सुभाष सरकार, भागवत किशन राव कराड, डॉ.राजकुमार रंजन सिंह, भारती प्रवीण पवार, विशेश्वर टुडु, शांतनु ठाकुर, डॉ. मुंजापारा महेंद्र भाई, जॉन बारला, निशीथ प्रमाणिक।

इस्तीफा देने वाले मंत्री : रविशंकर प्रसाद, प्रकाश जावड़ेकर, डॉ. हर्षवर्धन, रमेश पोखरियाल निशंक, संतोष गंगवार, बाबुल सुप्रियो, सदानंद गौड़ा, रतन लाल कटारिया, प्रताप सारंगी, देबोश्री चौधरी, थावरचंद गहलोत, संजय धोत्रे और राव साहेब दानवे पाटिल।

इन पर जताया मोदी ने भरोसा : मोदी सरकार के कैबिनेट मंत्री

नारायण राणे : नारायण तातू राणे महाराष्ट्र से राज्यसभा सांसद हैं। वह इससे पहले महाराष्ट्र में 6 बार विधायक और 1 बार एमएलसी रह चुके हैं। श्री राणे महाराष्ट्र सरकार में कैबिनेट मंत्री और बाद में मुख्यमंत्री के रूप में कार्यरत रहे हैं। मोदी मंत्रिमंडल में उन्हें एमएसएमई मंत्री के रूप में शामिल किया गया है।

सर्बानंद सोनोवाल :सर्बानंद सोनोवाल असम के मुख्यमंत्री के रूप में 2016 से 2021 तक तैनात रहे हैं। उनके समय में असम राज्य ने काफी प्रगति की। मुख्यमंत्री से पहले सोनोवाल ने मोदी सरकार में कौशल विकास, उद्यमिता, खेल और युवा मामले के मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) के रूप में भी कार्य किया था। इस बार प्रधानमंत्री ने उन्हें जहाजरानी और आयुष मंत्रालय देकर सक्रिय रूप से कार्य करने के लिए कहा है।

अनुराग ठाकुर : पूर्व बीसीसीआई अध्यक्ष अनुराग ठाकुर को देश का नया सूचना एवं प्रसारण तथा खेल मंत्री बनाया गया है। अनुराग ठाकुर इससे पहले वित्त राज्य मंत्री के रूप में कार्य कर रहे थे। अनुराग ठाकुर मई 2016 और फरवरी 2017 के बीच बीसीसीआई अध्यक्ष भी रहे। अनुराग ठाकुर के सूचना एवं प्रसारण मंत्री बनने पर मीडिया जगत ने प्रसन्नता व्यक्त की है।

ज्योतिरादित्य सिंधिया : ज्योतिरादित्य सिंधिया मध्य प्रदेश से राज्यसभा सांसद हैं। सांसद के रूप में ये उनका 5वां कार्यकाल है। यूपीए सरकार में वो केंद्रीय विद्युत राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) रह चुके हैं। साथ ही केंद्रीय वाणिज्य और संचार राज्य मंत्री भी रहे हैं। इससे पहले मध्य प्रदेश क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष के रूप में भी सिंधिया जिम्मेदारी संभाल चुके हैं। स्टैनफोर्ड से एमबीए और हार्वर्ड विश्वविद्यालय से ग्रैजुएट

पासआउट ज्योतिरादित्य सिंधिया को मोदी सरकार में नागरिक उड्डयन मंत्री बनाया गया है, जो वर्तमान में चुनौतीपूर्ण कार्य है।

हरदीप सिंह पुरी : हरदीप सिंह पुरी भारतीय विदेश सेवा के पूर्व अधिकारी हैं। उन्हें मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल में एविएशन और शहरी विकास मंत्री बनाया गया था। अब कैबिनेट विस्तार के बाद पुरी को पेट्रोलियम मंत्रालय के साथ ही शहरी विकास मंत्रालय की भी जिम्मेदारी दी गई है।

मनसुख मांडविया : मनसुख मांडविया पहले स्वतंत्र प्रभार वाले राज्य मंत्री के रूप में शिपिंग (जहाजरानी) मंत्रालय संभाल रहे थे और रसायन एवं उर्वरक विभाग के भी मंत्री थे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा उन्हें स्वास्थ्य विभाग जैसा महत्वपूर्ण पद भार सौंपा गया है। साथ ही उन्हें रसायन एवं उर्वरक मंत्री भी बनाया गया है। लो प्रोफाइल और शांत आचरण के लिए जाने-जाने वाले गुजरात के 49 वर्षीय इस भाजपा नेता का अक्सर एक ऐसे व्यक्ति के रूप में वर्णन किया जाता है जिस पर एक साथ कई लोग निर्भर कर सकते हैं। यह एक ऐसा गुण है जो स्वास्थ्य मंत्री के रूप में उनके लिए बहुत काम आने की उम्मीद है।

भूपेंद्र यादव : भूपेंद्र यादव राजस्थान से राज्यसभा सांसद हैं। ये उनका दूसरा कार्यकाल है। उन्हें कई संसदीय समितियों में नेतृत्व के लिए जाना जाता है। अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत करने से पहले, वह एक वकील थे। सुप्रीम कोर्ट और सरकारी वकील के रूप में उन्होंने लम्बे समय तक काम किया है। वे सार्वजनिक जीवन में 2 दशकों से अधिक समय से हैं। मोदी सरकार में उन्हें पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन तथा श्रम मंत्रालय के मंत्री के रूप में नियुक्त किया गया है।

अश्विनी वैष्णव : अश्विनी वैष्णव ओडिशा से राज्यसभा सांसद हैं। वे 1994 बैच के पूर्व आईएएस अधिकारी हैं। बुनियादी ढांचे में पीपीपी मॉडल लाने के लिए उनका प्रमुख योगदान रहा है। उन्होंने प्रमुख वैश्विक कंपनियों में भी नेतृत्व की भूमिका निभाई हैं। उन्होंने व्हार्टन स्कूल, पेनीसिल्वेनिया विश्वविद्यालय से एमबीए किया और आईआईटी कानपुर से एमटेक पासआउट हैं। मोदी सरकार में उन्हें रेल मंत्रालय के साथ ही संचार एवं प्रौद्योगिकी मंत्री के रूप में नियुक्त किया गया है।

आर.के. सिंह : आर.के. सिंह ने कैबिनेट मंत्री के रूप में शपथ ली। आरा, बिहार से सांसद श्री आर.के. सिंह इससे पहले मोदी सरकार में राज्य मंत्री थे। मोदी सरकार में केंद्रीय विद्युत, नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा, कौशल विकास और उद्यमिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)का प्रभार संभालने वाले आर.के. सिंह भी पूर्व नौकरशाह (आईएएस) हैं। आरके सिंह को मोदी सरकार में ऊर्जा मंत्रालय के साथ ही नवीनीकरण ऊर्जा विभाग की भी जिम्मेदारी दी गई है।

किरेन रिजिजू : किरेन रिजिजू को केंद्रीय मंत्रिमंडल में कैबिनेट मंत्री के रूप में प्रोन्नत किया गया है। इससे पहले वह युवा मामलों के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) और अल्पसंख्यक मामलों और आयुष विभागों के राज्य मंत्री के रूप में कार्यरत थे। पिछली सरकार में रिजिजू केंद्र में गृह राज्यमंत्री रहे हैं और इस बार प्रधानमंत्री ने उन्हें देश का कानून मंत्री बनाया है।

डॉ. वीरेंद्र कुमार : डॉ. वीरेंद्र कुमार मध्य प्रदेश के टीकमगढ़ से लोकसभा सांसद हैं। सांसद के रूप में उनका ये 7वां कार्यकाल है। उन्होंने इससे पहले मोदी सरकार में केंद्रीय महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री और अल्पसंख्यक मामलों के राज्य मंत्री के रूप में काम किया। डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय से बाल श्रम में पीएचडी करने वाले डॉ. वीरेन्द्र कुमार को मोदी सरकार में सामाजिक न्याय एवं आधिकारिता मंत्री बनाया गया है।

पशुपति कुमार पारस : पशुपति कुमार पारस हाजीपुर से लोकसभा सांसद हैं। वे बिहार में 7 बार के विधायक और 1 बार के एमएलसी रहे हैं। बिहार सरकार में मंत्री के रूप में भी उन्होंने कार्य किया है। सार्वजनिक जीवन में 45 से अधिक वर्षों तक उनकी सेवा को देखते हुए प्रधानमंत्री मोदी ने उन्हें खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री नियुक्त किया है।

रामचंद्र प्रसाद सिंह : रामचंद्र प्रसाद सिंह ने देश के नए इस्पात मंत्री का पदभार संभाल लिया है। श्री सिंह जनता दल यूनाइटेड (जेडीयू) नेता हैं और राज्यसभा में बिहार का प्रतिनिधित्व करते हैं। उन्होंने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से एमए में डिग्री हासिल की है।

जी किशन रेड्डी : जीकिशन रेड्डी तेलंगाना के पहले ऐसे नेता हैं जो तेलंगाना के निर्माण के बाद कैबिनेट मंत्री बने हैं। कैबिनेट मंत्री बनने से पहले किशन रेड्डी को भी भारत सरकार में साल 2019 में गृह राज्य मंत्री का पदभार सौंपा गया था। अब उन्हें केंद्रीय संस्कृति, पर्यटन मंत्री और पूर्वोत्तर विकास मंत्रालय का पदभार दिया गया है। 1980 में बीजेपी की स्थापना के बाद से ही वे पार्टी से जुड़े हुए हैं। साल 2002 से 2005 के बीच बीजेपी युवा मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे रेड्डी बीजेपी के ऐसे नेता हैं जिन्होंने आन्ध्र प्रदेश में भी जीत दर्ज की थी।

पुरुषोत्तम रुपाला : पुरुषोत्तम रुपाला को डेयरी, मत्स्य पालन मंत्री के रूप में नियुक्त किया गया है। रूपाला गुजरात में प्रभावशाली पटेल समुदाय से आते हैं। किसानों की आय बढ़ाने और कृषि से संबंधित गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए 2019 में गठित नए मंत्री के रूप में उनको नियुक्त किया गया है। रूपाला इससे पहले केंद्रीय मंत्रिमंडल में कृषि राज्य मंत्री थे।

डॉ. एल मुरुगन सूचना और प्रसारण, मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के राज्य मंत्री बनाए गए हैं। डॉ. एल मुरुगन ने 15 साल पहले मद्रास उच्च न्यायालय में एक वकील के रूप में अपने कैरियर की शुरुआत की थी। वह 2017 से 2020 तक राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग के उपाध्यक्ष भी रह चुके हैं। मद्रास विश्वविद्यालय से कानून में एलएलएम और पीएचडी की उपाधि प्राप्त करने वाले मुरुगन तमिलनाडु भाजपा के अध्यक्ष भी हैं और उन्होंने तमिलनाडु में भाजपा को लोकसभा चुनाव जिताने में अपनी अहम भूमिका निभाई है।

मोदी सरकार में राज्य मंत्री

निशीथ प्रमाणिक : निशीथ प्रमाणिक को गृह, युवा मामले और खेल मंत्रालय में राज्य मंत्री बनाया गया है। श्री प्रमाणिक पश्चिम कूचबिहार से लोकसभा सांसद हैं। सांसद के रूप में उनका पहला कार्यकाल है। उन्होंने एक प्राथमिक विद्यालय में सहायक शिक्षक के रूप में भी काम किया है। उनके पास बीसीए की डिग्री है।

डॉ. एल मुरुगन : डॉ. एल मुरुगन सूचना और प्रसारण, मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय के राज्य मंत्री बनाए गए हैं। डॉ. एल मुरुगन ने 15 साल पहले मद्रास उच्च न्यायालय में एक वकील के रूप में अपने कैरियर की शुरुआत की थी। वह 2017 से 2020 तक राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग के उपाध्यक्ष

भी रह चुके हैं। प्रसिद्ध मद्रास विश्वविद्यालय से कानून में एलएलएम और पीएचडी की उपाधि प्राप्त करने वाले मुरुगन तमिलनाडु भाजपा के अध्यक्ष भी हैं और उन्होंने तमिलनाडु में भाजपा को लोकसभा चुनाव जिताने में अपनी अहम भूमिका निभाई है।

जॉन बारला : जॉन बारला को अल्पसंख्यक मामलों के मंत्रालय में राज्य मंत्री बनाया गया है। जॉन बारला पश्चिम बंगाल में अलीपुरद्वार से लोकसभा सांसद हैं। सांसद के रूप में उनका पहला कार्यकाल है। उन्होंने चाय बागान श्रमिकों के अधिकारों के लिए अथक प्रयास किया है।

डॉ. मुंजापारा महेंद्रभाई : डॉ. मुंजापारा महेंद्रभाई को महिला एवं बाल विकास और आयुष मंत्रालय में राज्य मंत्री बनाया गया है। मुंजापारा महेंद्रभाई सुरेंद्रनगर से लोकसभा सांसद हैं। सांसद के रूप में उनका पहला कार्यकाल है। अपने राजनीतिक जीवन से पहले उन्होंने 3 दशक लंबे समय तक कार्डियोलजिस्ट और मेडिसिन के प्रोफेसर के रूप में कार्य किया है। गुजरात विश्वविद्यालय से सामान्य चिकित्सा और चिकित्सा विज्ञान में उन्होंने एमडी की उपाधि प्राप्त की है।

शांतनु ठाकुर : शांतनु ठाकुर को बंदरगाह, जहाजरानी और जलमार्ग मंत्रालय में राज्य मंत्री की जिम्मेदारी सौंपी गई है। शांतनु ठाकुर पश्चिम बंगाल के बनगांव से लोकसभा सांसद हैं। सांसद के रूप में उनका पहला कार्यकाल है। वह मटुआ समुदाय के वरिष्ठ नेता हैं। कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय से उन्होंने अंग्रेजी में बीए किया है और आतिथ्य प्रबंधन में डिप्लोमा भी प्राप्त किया है।

बिश्वेश्वर टुडू : बिश्वेश्वर टुडू जनजातीय मामलों और जल शक्ति मंत्रालय में राज्य मंत्री बने हैं। मयूरभंज से लोकसभा सांसद के रूप में उनका पहला कार्यकाल है। वो उड़ीसा के कटक क्षेत्र से ताल्लुक रखते हैं। अपने राजनीतिक जीवन से पहले उन्होंने जल विभाग में एक वरिष्ठ अभियंता के रूप में काम किया। श्री टुडु ने उत्कलमणि गोपबंधु इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग, राउरकेला से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा भी किया है।

डॉ. भारती प्रवीण पवार : डॉ. भारती प्रवीण पवार को स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री की जिम्मेदारी मिली है। वह डिंडोरी से लोकसभा सांसद हैं। सांसद के रूप में उनका पहला कार्यकाल है। नासिक जिला परिषद के सदस्य के रूप में वे कार्य कर चुकी हैं। सार्वजनिक जीवन में शामिल होने से पहले वह एक मेडिकल प्रैक्टिशनर थीं। उन्होंने एनडीएमवीपीएस मेडिकल कॉलेज नासिक से सर्जरी में एमबीबीएस की डिग्री हासिल की है।

डॉ.राजकुमार रंजन सिंह : डॉ. राजकुमार रंजन सिंह को विदेश और शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री बनाया गया है। श्री सिंह मणिपुर से लोकसभा सांसद हैं। अपने राजनीतिक जीवन से पहले उनका 4 दशक का लंबा करियर एक कार्यकर्ता के रूप में था। उन्होंने गुवाहाटी विश्वविद्यालय से भूगोल में एमए और पीएचडी की है।

डॉ. भागवत किशनराव : डॉ. भागवत किशनराव कराड को वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री बनाया गया है। महाराष्ट्र से वे राज्यसभा सांसद हैं। सार्वजनिक जीवन में वह औरंगाबाद नगर निगम के मेयर रह चुके हैं। मराठवाड़ा कानूनी विकास निगम के अध्यक्ष भी रहे हैं। किशनराव पेशे से एक डॉक्टर हैं। उनके पास एमबीबीएस, एमएस (सामान्य सर्जरी), एमसीएच (बाल चिकित्सा सर्जरी) और एफसीपीएस (सामान्य सर्जरी) की डिग्री है।

डॉ. सुभाष सरकार : डॉ. सुभाष सरकार को शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री बनाया गया है। पश्चिम बंगाल के बांकुरा से लोकसभा सांसद के रूप में उनका यह पहला कार्यकाल है। वह एक स्त्री रोग विशेषज्ञ और एम्स कल्याणी के बोर्ड सदस्य हैं। सार्वजनिक जीवन में लगभग 5 दशक से सक्रिय डॉ. सुभाष सरकार ने कलकत्ता विश्वविद्यालय से अल्ट्रा सोनोग्राफी, बांझपन और लैप्रोस्कोपी में एमबीबीएस की डिग्री प्राप्त की है। शिक्षाविभाग को नई ऊंचाई प्रदान करने के लिए प्रधानमंत्री ने उनका चयन किया है।

प्रतिमा भौमिक : प्रतिमा भौमिक सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय में राज्य मंत्री बनाई गई हैं। त्रिपुरा पश्चिम से लोकसभा सांसद के रूप में उनका यह पहला कार्यकाल है। त्रिपुरा विश्व विद्यालय के महिला कॉलेज से जैव-विज्ञान में स्नातक की डिग्री प्राप्त करने वाली प्रतिमा भौमिक पूर्वोत्तर का महिला चेहरा हैं, जिसे केन्द्रीय मंत्रिमंडल में शामिल किया गया है।

कपिल मोरेश्वर पाटिल : कपिल मोरेश्वर पाटिल को पंचायती राज मंत्रालय में राज्य मंत्री की जिम्मेदारी सौपी गई है। वह भिवंडी से लोकसभा सांसद हैं। सांसद के रूप में उनका दूसरा कार्यकाल है। ग्राम पंचायत के सरपंच से लेकर ठाणे जिला परिषद के अध्यक्ष की जिम्मेदारी भी उनके पास रही है।

भगवंत खुबा : भगवंत खुबा को नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा तथा रसायन और उर्वरक मंत्रालय में राज्य मंत्री बनाया गया हैं। कर्नाटक में बीदर से लोकसभा सांसद भगवंत खुबा ने सिद्धगंगा प्रौद्योगिकी संस्थान तुमकुर से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में बीटेक की डिग्री हासिल की है।

चौहान देवुसिंह : चौहान देवुसिंह को संचार मंत्रालय में राज्य मंत्री का दर्जा दिया गया है। गुजरात के खेड़ा से लोकसभा सीट से सांसद देवुसिंह का यह दूसरा कार्यकाल है। वे गुजरात विधान सभा में 2 बार विधायक रहे हैं।

अजय कुमार : अजय कुमार को गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री बनाया गया है। उत्तर प्रदेश के खीरी से लोकसभा सांसद के रूप में यह उनका दूसरा कार्यकाल है। वे उत्तर प्रदेश विधानसभा में विधायक भी रह चुके हैं और उससे पूर्व खीरी जिला परिषद के सदस्य भी रहे हैं। सार्वजनिक जीवन में उन्हें 3 दशक का अनुभव है। उन्होंने कानपुर विश्वविद्यालय से बीएससी, एलएलबी की पढ़ाई की है।

बीएल वर्मा : बी एल वर्मा उत्तर पूर्वी क्षेत्र के विकास और सहकारिता मंत्रालय में राज्य मंत्री बने हैं। उत्तर प्रदेश से राज्यसभा सांसद हैं। उन्होंने सार्वजनिक जीवन में 35 से अधिक वर्षों तक

सेवा की है। श्री वर्मा संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी के छात्र रहे हैं।

अजय भट्ट : अजय भट्ट को रक्षा और पर्यटन मंत्रालय में राज्य मंत्री बनाया गया है। वह नैनीताल-उधमसिंह नगर से लोकसभा सांसद हैं। श्री भट्ट उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड विधानसभा में 3 बार विधायक रहे हैं। उनके पास संसदीय कार्य, स्वास्थ्य, आपदा जैसे प्रमुख विभाग थे। सार्वजनिक जीवन में 25 वर्षों से सक्रिय अजय भट्ट उत्तराखंड भाजपा के अध्यक्ष भी रहे हैं।

कौशल किशोर : कौशल किशोर को मोदी मंत्रिपरिषद में आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय में राज्य मंत्री की जिम्मेदारी मिली है। उत्तर प्रदेश के मोहनलालगंज से लोकसभा सांसद के रूप में यह उनका दूसरा कार्यकाल है। उन्होंने उत्तर प्रदेश विधान सभा में विधायक के रूप में कार्य किया है। वे उत्तर प्रदेश सरकार में राज्य मंत्री रहे हैं। कौशल किशोर ने सार्वजनिक जीवन में 3 दशकों से अधिक समय तक सेवा की है।

ए नारायणस्वामी : ए नारायणस्वामी सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय में राज्य मंत्री बने हैं। चित्रदुर्ग से लोकसभा सांसद हैं। वे कर्नाटक विधान सभा में 4 बार विधायक रहे हैं। वे कर्नाटक सरकार में कैबिनेट मंत्री भी रह चुके हैं। सार्वजनिक जीवन में 3 दशकों से अधिक समय तक उन्होंने सेवा की है।

अन्नपूर्णा देवी : अन्नपूर्णा देवी शिक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री बनी हैं। झारखंड में कोडरमा से लोकसभा सांसद हैं। वह झारखंड और बिहार से 4 बार विधायक भी रह चुकी हैं। उन्होंने झारखंड सरकार में कैबिनेट मंत्री के रूप में कार्य किया है। 30 साल की उम्र में उन्होंने बिहार सरकार में खनन और भूविज्ञान राज्य मंत्री के रूप में भी कार्य किया है। उन्होंने रांची विश्वविद्यालय से इतिहास में एमए किया है।

मीनाक्षी लेखी : मीनाक्षी लेखी को विदेश और संस्कृति मंत्रालय में राज्य मंत्री की जिम्मेदारी मिली है। नई दिल्ली से लोकसभा सांसद के रूप में दूसरी बार चुनी गई मीनाक्षी लेखी भाजपा की प्रवक्ता भी रही हैं। उन्हें सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता के रूप में भी जाना जाता है।

दर्शना विक्रम जरदोश : दर्शन विक्रम जरदोश कपड़ा और रेल मंत्रालय में राज्य मंत्री बनी हैं। सूरत से लोकसभा सांसद हैं। गुजरात से सांसद के रूप में उनका तीसरा कार्यकाल है। वह सूरत नगर निगम की पार्षद भी रह चुकी हैं। गुजरात समाज कल्याण बोर्ड के सदस्य के रूप में कार्यरत रही दर्शना सार्वजनिक जीवन में 4 दशकों से सक्रिय हैं।

भानु प्रताप सिंह वर्मा : भानु प्रताप सिंह वर्मा को सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय में राज्य मंत्री बनाया गया है। वे जालौन से लोकसभा सांसद हैं। उत्तर प्रदेश से सांसद के रूप में उनका यह पांचवां कार्यकाल है। वे उत्तर प्रदेश विधान सभा में विधायक भी रहे। उन्होंने सार्वजनिक जीवन में 3 दशकों से अधिक समय तक सेवा की है।

शोभा करंदलाजे : शोभा करंदलाजे को कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री बनाया गया है। कर्नाटक में उडुपी चिकमगलूर से सांसद के रूप में उनका यह दूसरा कार्यकाल है। वह कर्नाटक में 1 बार विधायक और 1 बार एमएलसी भी रही हैं। छात्र जीवन से ही वे सार्वजनिक जीवन में सक्रिय हैं।

राजीव चंद्रशेखर : राजीव चंद्रशेखर कौशल विकास और उद्यमिता, इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय में राज्य मंत्री बनाए गए हैं। कर्नाटक से राज्यसभा सांसद हैं। सांसद के रूप में उनका तीसरा कार्यकाल है। उन्होंने विभिन्न संसदीय स्थायी समितियों में कार्य किया है। उन्होंने हार्वर्ड विश्वविद्यालय के इलिनो इस संस्थान से कंप्यूटर विज्ञान में एमटेक की उपाधि प्राप्त की है।

डॉ. एसपी सिंह बघेल : डॉ. सत्य पाल सिंह बघेल को कानून और न्याय मंत्रालय में राज्य मंत्री का दर्जा दिया गया है। आगरा से लोकसभा सांसद हैं। सांसद के रूप में उनका 5वां कार्यकाल है। इससे पूर्व श्री बघेल ने उत्तर प्रदेश सरकार में पशुपालन एवं मत्स्य पालन और लघु सिंचाई मंत्री के रूप में भी कार्य किया है।

अनुप्रिया पटेल : अनुप्रिया पटेल को वाणिज्य मंत्रालय में राज्य मंत्री पद की जिम्मेदारी मिली है। वह यूपी के मिर्जापुर से लोकसभा सांसद हैं। इससे पहले वह पीएम नरेंद्र मोदी की सरकार में केंद्रीय स्वास्थ्य राज्य मंत्री के रूप में काम कर चुकी हैं। उन्होंने उत्तर प्रदेश में एक विधायक के रूप में भी काम किया है।

पंकज चौधरी : पंकज चौधरी को वित्त राज्य मंत्री बनाया गया है। महाराजगंज से लोकसभा सांसद के रूप में उनका यह छठा कार्यकाल है। सार्वजनिक जीवन में 3 दशकों से अधिक समय से सक्रिय श्री चौधरी ने गोरखपुर विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि प्राप्त की हैं।

लेखक चाणक्य वार्ता के दिल्ली ब्यूरो चीफ हैं।
ई-मेल : response50123@gmail.com

मोदी मंत्रिमंडल में कई मंत्रियों के मंत्रालयों में महत्वपूर्ण परिवर्तन

जहां एक ओर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने मंत्रिमंडल में कई नये चेहरों को जगह दी है और कुछ पुराने अनुभवी नेताओं को पदमुक्त किया है, वहीं कुछ वर्तमान मंत्रियों के मंत्रालयों में भी महत्वपूर्ण परिवर्तन किया गया है। गृह मंत्री अमित शाह को नये सहकारिता मंत्रालय का कार्य भी दिया गया है। प्रधानमंत्री का मानना है कि सहकारिता के माध्यम से आम जनमानस को उद्योगों से जोड़ा जा सकता है। इससे लोग नौकरी मांगने के स्थान पर नौकरी देने की क्षमता प्राप्त कर सकेंगे। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी के पास पहले की भांति ही सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय का ही कार्य रहेगा। उनके पास से एमएसएमई मंत्रालय हटा दिया गया है, जिससे वो देश के आधारभूत ढ़ांचे को मजबूत करने के लिये और अधिक समय दे सकें। नरेंद्र सिंह तोमर के पास अब सिर्फ कृषि मंत्रालय ही है, इससे उन्हें भी किसानों से जुड़ी समस्याओं के बारे में विचार कर समाधान निकालने के लिये अधिक समय मिलेगा। इसी प्रकार स्मृति ईरानी से कपड़ा मंत्रालय लेकर पीयूष गोयल को दिया गया है।

पीयूष गोयल के पास वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय पहले से है। अत: वो कपड़ा मंत्रालय का कार्य अपेक्षाकृत आसानी से कर सकेंगे। पीयूष गोयल से रेल मंत्रालय वापस ले लिया गया है, जिससे वो उद्योगों से जुड़े विषयों पर और अधिक समय दे सके। धर्मेंद्र प्रधान को पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय के स्थान पर अब शिक्षा मंत्रालय का कार्य दिया गया है। शिक्षा को लेकर प्रधानमंत्री सबसे अधिक चिंतित हैं, इसीलिये उन्होंने धर्मेंद्र प्रधान को शिक्षा मंत्री बनाकर और उनके सहयोग के लिये तीन राज्य मंत्रियों को नियुक्त करके शिक्षा व्यवस्था को और सुदृढ़ता प्रदान करने का कदम उठाया है। ज्ञातव्य है कि देश भर से पूर्व शिक्षा मंत्री रमेश पोखरियाल निशंक को लेकर अनेक शिकायते निरंतर मिल रही थीं। उनके ऊपर अनेक आरोप-प्रत्यारोप भी लग रहे थे। इसके कारण संगठन और सरकार उनसे नाराज थी। शायद इसी बात के कारण उनकी वापसी हुई है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय प्रान्त प्रचारक बैठक चित्रकूट में संपन्न

विशाल शर्मा

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय प्रान्त प्रचारक बैठक चित्रकूट के आरोग्य धाम सभागार में आयोजित हुई। प्रतिवर्ष यह बैठक सामान्यत: जुलाई माह में होती है, परंतु पिछले वर्ष चित्रकूट में ही आयोजित बैठक कोरोना की परिस्थितियों में नहीं हो पायी थी। इसलिए इस वर्ष चित्रकूट में ही यह बैठक संपन्न हुई। कोरोना के नियमों के अनुसार संख्या को नियंत्रित करने हेतु कुछ अधिकारी यहाँ प्रत्यक्ष रूप से व कुछ आभासी (ऑनलाइन) माध्यम से जुड़े।

दिनांक 9-10 जुलाई को 11 क्षेत्रों के 'क्षेत्र प्रचारक' तथा सह क्षेत्र प्रचारकों की बैठक चित्रकूट में हुई। इसमें विशेष रूप से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहनराव भागवत, सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले, सहसरकार्यवाह डॉ. कृष्णगोपाल, अरुण कुमार, डॉ. मनमोहन वैद्य, मुकुंद सी.आर. व रामदत्त चक्रधर उपस्थित रहे। साथ ही संघ के सातों कार्य विभाग के अखिल भारतीय प्रमुख व सह प्रमुख भी इस बैठक में उपस्थित थे।

12 जुलाई को देश भर की संघ रचना के अनुसार सभी 45 प्रांतों के प्रांत प्रचारक एवं सह प्रांत प्रचारक आभासी (ऑनलाइन) माध्यम से जुड़े। 13 जुलाई को विविध संगठनों के अखिल भारतीय संगठन मंत्री आभासी माध्यम से बैठक में सहभागी बने। यह बैठक सामान्यत: संगठनात्मक विषयों पर केंद्रित रही। साथ ही कोरोना के संक्रमण से पीड़ित लोगों की सहायता हेतु स्वयंसेवकों द्वारा किये गये देशव्यापी सेवा कार्यों की समीक्षा की गई तथा संभावित तीसरी लहर के प्रभाव का आंकलन करते हुए, इस हेतु आवश्यक कार्य योजना पर विचार हुआ। इस दृष्टि से आवश्यक प्रशिक्षण एवं तैयारियों पर भी विचार किया गया।

अनलॉक की प्रक्रिया में धीरे-धीरे सामान्य हो रहे जनजीवन को देखते हुए संघ शाखाओं के संचालन की समीक्षा तथा योजनाओं पर बैठक में चर्चा की गई। संघ शिक्षा वर्ग तथा विभिन्न प्रकार के संघ कार्यों का आंकलन करते हुए नई योजनाओं पर विचार किया गया।

बैठक में संघ प्रमुख एवं अन्य वरिष्ठ अधिकारियों के प्रवास की योजना भी बनाई गयी।

सह सरकार्यवाह अरुण कुमार को मिली संघ व भाजपा में समन्वय की जिम्मेदारी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भाजपा के मध्य अभी तक समन्वय स्थापित करने की जिम्मेदारी संघ के सह सरकार्यवाह डॉ. कृष्णगोपाल के पास थी। उन्होंने काफी लम्बे समय तक इस दायित्व का सफल निर्वहन किया। संघ की सामान्य दायित्व परिवर्तन प्रक्रिया के अनुसार अब यह कार्य सह सरकार्यवाह अरुण कुमार को दिया गया है। अरुण कुमार लम्बे समय से संघ के विभिन्न दायित्वों का निर्वहन कर रहे हैं। मूल रूप से दिल्ली निवासी अरुण कुमार बचपन में ही संघ से जुड़ गए थे। दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक करने के बाद वो संघ के प्रचारक बन गए और फिर दिल्ली में ही पहले जिला प्रचारक, फिर विभाग प्रचारक तथा उसके बाद हरियाणा प्रान्त प्रचारक बने। कर्मठ और दूरदर्शी अरुण कुमार को संघ ने जम्मू-कश्मीर में कार्य करने हेतु भेजा और उन्होंने वहां प्रांत प्रचारक के रूप में कार्य करके अपनी एक विशेष छाप छोड़ी। वे जम्मू-कश्मीर राज्य के विशेषज्ञ माने जाते हैं और उनकी प्रेरणा से जम्मू-कश्मीर के अनेक ऐसे विषयों पर अध्ययन चल रहा है, जिसकी जानकारी आम जनता को नहीं है। उनकी प्रेरणा से ही जम्मू-कश्मीर अध्ययन केंद्र का संचालन भी किया जा रहा है। जम्मू-कश्मीर में कार्य करने के उपरांत अरुण कुमार को संघ की अखिल भारतीय कार्यकारिणी में सह संपर्क प्रमुख और प्रचार प्रमुख का भी दायित्व दिया गया और उसके बाद उन्हें सह सरकार्यवाह की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी भी संघ ने सौपी। चित्रकूट बैठक में अरुण कुमार को राजनीतिक समन्वयक का कार्य सौप कर संघ ने नये युग की शुरुआत की है। क्योंकि संघ और भाजपा के मध्य समन्वय का कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण है और संघ चाहता है कि उसकी विचारधारा को पोषित करने वाले व्यक्तियों को राजनीतिक क्षेत्र में उचित स्थान मिले। अटल बिहारी वाजपेयी के प्रधानमंत्री काल में यह जिम्मेदारी वरिष्ठ संघ नेता मदनदास देवी जी के पास थी। उस समय उन्होंने अद्भुत निर्णय लेते हुए अनेक योग्य और दूरदर्शी स्वयंसेवकों को भाजपा में भेजा था, जो आज देश के अनेक सर्वोच्च पदों पर कार्य कर रहे हैं। इसलिए अरुण कुमार के सामने भी ये चुनौती होगी कि वे विचार धारा से जुड़े व्यक्तियों को उचित महत्त्व दिला

शेष पृष्ठ 14 पर

सारांश कनौजिया

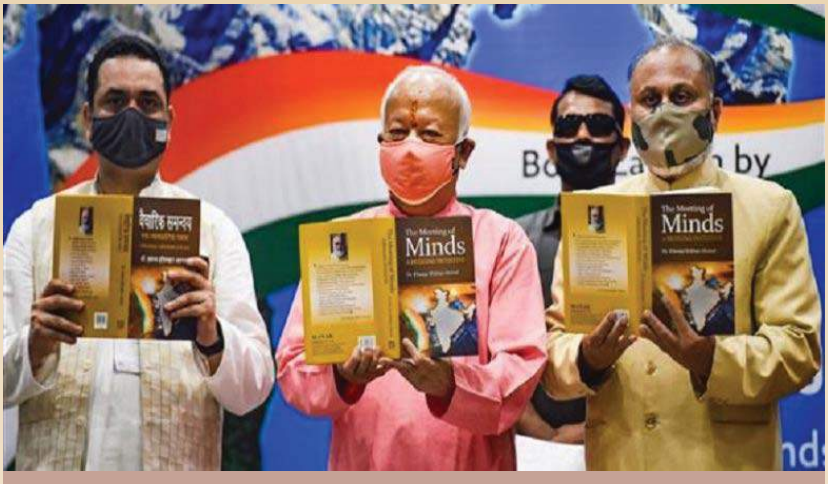

भारतीयों के डीएनए पर घमासान क्यों ?

चार जुलाई, 2021 को गाजियाबाद में मुस्लिम राष्ट्रीय मंच द्वारा आयोजित वैचारिक 'समन्वय : एक व्यवहारिक पहल' पुस्तक के विमोचन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहनराव भागवत ने कहा कि सभी भारतीयों का डीएनए एक है, चाहे वे किसी भी धर्म के हों। डॉ. भागवत ने जोर देकर कहा कि लिंचिंग में शामिल लोग हिंदुत्व के विरोधी हैं। उनके इस बयान पर सियासी बवाल मचा है, पर इसका कोई कारण समझ नहीं आता।

डीएनए पर संघ प्रमुख का बयान

आरएसएस प्रमुख डॉ. मोहनराव भागवत ने गाजियाबाद के मेवाड़ इंस्टीट्यूट में आयोजित मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के कार्यक्रम में कहा कि सभी भारतीयों का डीएनए एक है, चाहे वे किसी भी धर्म के हों। साथ ही उन्होंने एकजुटता का आह्वान करते हुए कहा कि भारत को विश्वगुरु बनाना यह दुनिया की सबसे बड़ी आवश्यकता है, अन्यथा यह दुनिया नहीं बचेगी। संघ की अखिल भारतीय कार्यकारिणी सदस्य एवं मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के संरक्षक इन्द्रेश कुमार की प्रेरणा से प्रकाशित डॉ ख्वाजा इफ्तिखार अहमद की किताब 'द मीटिंग्स आफ माइंड' के विमोचन कार्यक्रम के दौरान आरएसएस प्रमुख डॉ. भागवत ने कहा कि हिंदू-मुस्लिम एकता भ्रामक है क्योंकि वे अलग-अलग नहीं, बल्कि एक हैं। पूजा करने के तरीके के आधार पर लोगों में भेद नहीं किया जा सकता।

भीड़ द्वारा पीट-पीटकर की जाने वाली हत्या (लिंचिंग) में शामिल होने वाले लोग हिंदुत्व के विरुद्ध हैं। देश में एकता के बिना विकास संभव नहीं है। एकता का आधार राष्ट्रवाद और पूर्वजों का गौरव होना चाहिए। हम लोकतांत्रिक देश में रहते हैं। यहां हिंदू या मुसलमानों का प्रभुत्व नहीं हो सकता। केवल भारतीयों का प्रभुत्व हो सकता है।

उन्होंने कहा कि अल्पसंख्यकों के मन में डर बैठा दिया गया है कि आप हिंदू राष्ट्र में रहोगे तो आपके लिए मुश्किल होगी, यह बात गलत है। डॉ. भागवत ने कहा कि दूसरे देशों में एक साथ रहने पर मुश्किल होती होगी, लेकिन भारत में यहां का संविधान सभी की रक्षा करता है। हिंदुस्तान एक राष्ट्र है। उन्होंने कहा कि देश के अनादर की जो बात करेगा उन्हें बाहर जाना पड़ेगा। हमारे भारत मां के पुत्र साथ चलते हैं लेकिन मुस्लिम साथ क्यों नहीं चल सकते हैं? संघ प्रमुख ने कहा कि हिंदू समाज की भावना को संघ प्रकट करता है, जिससे हिंदू समाज का आत्मविश्वास जाग्रत होता है। उन्होंने विशेषकर मुस्लिम समुदाय को संबोधित करते हुए कहा कि सत्ता आती रहेगी, जाती रहेगी लेकिन आप डरो मत। भारत को विश्वगुरु बनाना दुनिया की आवश्यकता है अन्यथा यह दुनिया नहीं बचेगी।

संघ ने कभी कुछ परदे में नहीं रखा

दरअसल, हजारों साल से हम भारत में गंगा-जमुनी तहजीब की बात करते हैं। संघ प्रमुख ने उन्हीं बातों को अपने तरीके से सबके सामने रखा है। खास बात यह है कि संघ ने मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के साथ अपने संबंधों को कभी परदे में नहीं रखा। साल 2002 में जब इसका गठन हुआ तो संघ के तत्कालीन पांचवें सरसंघचालक के.सी. सुदर्शन उस मौके पर मौजूद थे। इस संगठन के संरक्षक की भूमिका संघ के वरिष्ठ प्रचारक इंद्रेश कुमार ने निभाई और लगभग दो दशकों से वे इस संगठन के माध्यम से देश-विदेश के मुस्लिम समाज को राष्ट्रवाद की विचारधारा से जोड़ रहे हैं।

मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के गठन के पीछे संघ का उद्देश्य बहुत स्पष्ट है। भारत के करोड़ों मुसलमान इसी देश की मिट्टी के वंशज हैं। उनकी रगों में भी राम और कृष्ण का खून है। इसलिए इस देश में शांति और प्रगति का एक ही रास्ता है और वह है मुसलमानों में राष्ट्रवाद की भावना भरना। श्री के.सी. सुदर्शन का कहना था कि भारत में रहने वाले हर व्यक्ति की राष्ट्रीयता हिंदू है और अपने भाषणों में उन्होंने क्रिश्चियन्स को ईसापंथी हिंदू और मुसलमानों को मोहम्मदपंथी हिंदू कहना शुरू किया।

अगर इस संदर्भ में डॉ. मोहनराव भागवत के भाषण को सुना जाए, तो समझ में आता है कि डॉ. भागवत ने लगभग उन्हीं बातों को दुहराया है। उन्होंने कहा है कि हिंदू हो, चाहे मुसलमान सबके अंदर एक ही डीएनए है। जाहिर है कि उनका मतलब यही था कि हर मुसलमान के अंदर हिंदू पूर्वजों का ही खून है। जब डॉ. भागवत यह कहते हैं कि मुसलमानों को भारत में नहीं रहने देने की बात करने वाले सच्चे हिंदू नहीं हो सकते, तो दरअसल वह उसी विचार को फिर से दुहरा रहे हैं, जिसके तहत 19 वर्ष पहले संघ ने मुस्लिम राष्ट्रीय मंच की स्थापना की थी। इसी तरह जब डॉ. भागवत यह कहते हैं कि लिंचिंग करने वाले हिंदुत्व विरोधी हैं, तब भी वह संघ के उसी विचार को दुहराते हैं जिसके तहत किसी भी आपदा में संघ के स्वयंसेवक मुसलमानों के लिए भी उसी तरह खाने और कपड़े की व्यवस्था करते हैं, जैसे हिंदु समाज के लिए।

ये बात अलग है कि राम मंदिर आंदोलन और भाजपा के सत्ता में आने के बाद उसका लाभ उठाने वाले इस बात को पचा नहीं पाएं। ऐसा इसलिए कि पिछले तीन दशक में मंडल और कमंडल की राजनीति की वजह से बहुत

कुछ बदला है। इसलिए ऐसे में डॉ. भागवत द्वारा कही गई बातें एक बड़े तबके के लिए पचा पाना मुश्किल हो रहा है। लेकिन इस स्थिति का जवाब भी डॉ. भागवत ने अपने भाषण में ही दिया, जब उन्होंने कहा कि भड़काऊ भाषण देकर वाहवाही लूटना आसान है, लेकिन ऐसे कामों से व्यापक हिंदू समाज कभी आपके पीछे खड़ा नहीं होगा। इतना ही नहीं संघ प्रमुख डॉ. भागवत ने कहा कि संघ का काम एक दिन का नहीं और न ही एक चुनाव का है। यह दशकों का है और इसलिए संघ सिर्फ उन्माद फैलाकर अपना लक्ष्य हासिल नहीं करना चाहता। वह हिंदू समाज की मूल भावना और हिंदू चिंतन के मूल लक्ष्यों के साथ चल रहा है।

फिर बवाल क्यों ?

बवाल की मुख्य वजह यह है कि हजारों सालों से हम भारत में जिस गंगा-जमुनी तहजीब की बात करते आए हैं जब उसी बात को देश के किसी महत्वपूर्ण पद पर बैठा व्यक्ति बोलता है, तो सियासी तूफान मच जाता है। संघ प्रमुख डॉ. मोहनराव भागवत के बयान को भी कांग्रेस सहित विपक्षी दलों के लोग उसी चश्में से देख रहे हैं। आरएसएस प्रमुख ने अपने संबोधन में यही तो कहा था कि हम समान पूर्वजों के वंशज हैं और ये विज्ञान से भी सिद्ध हो चुका है। हमारा डीएनए समान है। भारतीय कौन हैं, हिंदू कौन हैं, भारतीयता क्या है? इन सवालों पर संघ प्रमुख पहले भी अपना मत साफ कर चुके हैं। पहले भी डॉ. भागवत के बयानों को रूडीवादियों ने विवाद का विषय बनाया है, लेकिन जब भी भारतीयता की बात होती है डॉ. भागवत विवादों की अनदेखी कर अपना मत अवश्य रखते हैं।

भारतीय कौन हैं? इस सवाल पर डॉ. मोहनराव भागवत का यह बयान आरएसएस की सोच को और साफ करता है। डॉ. भागवत का बयान उस दकियानूसी सोच को आईना दिखाता है जो भारतीयता को धर्म और जन्म के खांचे में बांटकर देखती है। यही बातें सियासी दलों के एक बड़े तबके को हजम नहीं होती हैं। घमासान मचने के पीछे की वजह भी यही है।

किसने क्या कहा ?

एआईएमआईएम प्रमुख और लोकसभा सांसद **असदुद्दीन ओवैसी** ने अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि जिन व्यक्तियों को गाय और भैंस में फर्क नहीं पता होता, उनके लिए कत्ल करने के लिए जुनैद, अखलाक, पहलू, रकबर, अलीमुीन के नाम ही काफी थे। ये नफरत हिंदुत्व की देन है। इन मुजरिमों को हिंदुत्ववादी सरकार का संरक्षण हासिल है। 6 दिसंबर 1992 को जिन्होंने बाबरी मस्जिद गिरायी, उनका डीएनए क्या था? दिल्ली की सड़कों पर सिखों का कत्लेआम किया गया, उनका डीएनए क्या था? आप किसकी आंखों में धूल झोंक रहे हैं। उनके बयान का मकसद तो मैं समझता हूं।

कांग्रेस नेता **दिग्विजय सिंह** ने कहा कि मोहन भागवत जी यह विचार क्या आप अपने शिष्यों, प्रचारकों, विश्व हिंदू परिषद व बजरंग दल के कार्यकर्ताओं को भी देंगे? क्या यह शिक्षा आप मोदी-शाह और भाजपा मुख्यमंत्रियों को भी देंगे? यदि आप अपने व्यक्त किए गए विचारों के प्रति ईमानदार हैं तो भाजपा में वे सब नेता जिन्होंने निर्दोष मुसलमानों को प्रताड़ित किया है, उन्हें उनके पदों से तत्काल हटाने का निर्देश दें। इसकी शुरूआत नरेंद्र मोदी व योगी आदित्यनाथ से करें।

एनसीपी नेता **नवाब मलिक** ने डॉ. भागवत के बयान का स्वागत करते हुए कहा कि डॉ. भागवत के हिंदू-मुस्लिम एकता और डीएनए वाले बयान को सियासी दल नफा-नुकसान के हिसाब से अलग-अलग चश्मे से देख रहे हैं, लेकिन धर्म और वर्ण के आवरण से अलग संघ प्रमुख वो बात कर रहे हैं जो इतिहास का हिस्सा है। ये मिथ नहीं अतीत का वो सच है, जो दस्तावेजों में दर्ज है। संप्रदाय और धर्म के चश्मे को एक तरफ रखकर जिसने भी डॉ. भागवत के बयान को परखा उसे यही लगा कि उनका बयान ऐतिहासक सच का ही हिस्सा है। बंद दिमाग और तंग दिल से न तो बड़ी बातें कही जाती हैं और न ही उसे समझा जा सकता है, इसलिए जो तथ्य इतिहास में दर्ज है उसे भी कहने और समझने के लिए बड़ा नजरिया और बड़ा दिल होना चाहिए। जब-जब हिंदू और हिंदुत्व का जिक्र हुआ है आरएसएस ने इसे भारत और भारतीयता के रूप में व्यापक और सर्वमान्य रूप देने की कोशिश की है।

केंद्रीय अल्पसंख्यक मंत्री **मुख्तार अब्बास नकवी** ने कहा कि शुरू से ही संघ का ऐसा ही विचार रहा है, लेकिन कुछ लोग लगातार गुमराह करने में जुटे रहते हैं। संघ के कार्यक्रम सार्वजनिक तौर पर होते हैं और उसका विचार लोगों तक आसानी से पहुंचता है।

लेखक 'चाणक्य वार्ता' के उप-संपादक हैं।
ई-मेल : response50123@gmail.com

पृष्ठ 12 का शेष भाग

सकें जो संघ विचारधारा को पुष्ट कर सकें।

वर्तमान में लग रहीं हैं 39,454 शाखाएँ जिसमें 12,288 ई-शाखाएं

संघ की 27,166 शाखाएँ अब पुन: मैदान में प्रारंभ हो गयी है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ कोरोना की संभावित तीसरी लहर का सामना करने हेतु देशव्यापी 'कार्यकर्ता प्रशिक्षण' का आयोजन करेगा तथा ये प्रशिक्षित कार्यकर्ता लगभग 2.5 लाख स्थानों पर पहुँचेंगे। यह प्रशिक्षण अगस्त माह में पूर्ण किया जाएगा तथा सितंबर से जनजागरण द्वारा हर गाँव व बस्ती में कई स्वयंसेवी लोगों व संस्थाओं को इस अभियान में जोड़ा जाएगा। इस प्रशिक्षण में कोरोना से बचाव हेतु बच्चों व माताओं के लिए विशेष रूप से आवश्यक सावधानियाँ व उपायों को शामिल किया गया है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय प्रांत प्रचारक बैठक में संगठनात्मक गतिविधियों की चर्चा के साथ ही कोरोना की दूसरी लहर से उत्पन्न परिस्थितियों की व्यापक रूप से चर्चा हुई तथा प्रांतों में हुए सेवा कार्यों की समीक्षा की गयी। स्वयंसेवकों द्वारा संचालित वैक्सीन के टीकाकरण हेतु सुविधा केंद्र व प्रोत्साहन के अभियानों की भी समीक्षा की गयी।

जैसे-जैसे कोरोना के प्रकोप के पश्चात स्थितियाँ सामान्य हो रही है, संघ शाखाओं का संचालन भी मैदान में प्रारंभ हुआ है। बैठक में प्राप्त जानकारी के अनुसार देशभर में वर्तमान में कुल 39,454 शाखाएँ संचालित हो रही है, जिसमें 27,166 शाखाएँ अब मैदान में लग रही है तथा 12,288 ई-शाखाएँ है। साथ ही साप्ताहिक मिलन कुल 10,130 है, जिसमें प्रत्यक्ष रूप से मैदान में 6510 पुन: प्रारंभ हुए तथा ई-मिलन 3620 है। कोरोना के लॉकडाऊन काल में विशेष रूप से प्रारंभ हुए कुटुंब मिलन देश भर में 9637 है।

लेखक चाणक्य वार्ता के उत्तर क्षेत्र प्रभारी हैं।
ई-मेल : response50123@gmail.com

संगठन-शास्त्र के दो आधार : वार्तालाप और पत्राचार-1

लक्ष्मीनारायण भाला 'लक्खीदा'

'आपसी संवाद' किसी भी संगठन का प्राणतत्व कहलाता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने इसी प्राणतत्व के महत्व को समझते हुए प्रारम्भ से ही आपसी संवाद के लिए वार्तालाप एवं पत्राचार की व्यवस्था को अपनाया है। प्रथम सरसंघचालक परम पूजनीय डॉक्टर जी ने संगठन शास्त्र के जिन तत्वों को अपने आचरण के द्वारा प्रस्थापित किया था, उनमें पत्राचार का स्थान अग्रणी था। संगठन के अधिकारियों का प्रवास-क्रम, बैठकों की जानकारी आदि के सूचना पत्रकों को यथासमय प्रेषित करना कार्यालयीन कार्य की एक औपचारिक व्यवस्था है परन्तु किसी कार्यकर्त्ता द्वारा अपने मन की बात किसी वरिष्ठ कार्यकर्त्ता तक पहुँचाने के लिए उनसे मिल कर वार्तालाप करना अथवा पत्र के द्वारा उन तक अपनी बात पहुँचाना यह एक अनौपचारिक क्रिया है। यद्यपि औपचारिक व्यवस्था का अपना महत्व है परन्तु यह अनौपचारिक क्रिया उस औपचारिक व्यवस्था के क्रियान्वयन को ऊर्जा प्रदान करती है। द्वितीय सर संघचालक परम पूजनीय श्री गुरूजी के कार्यकाल में पत्र लेखक के नाते विशेष व्यवस्था स्थापित की गई थी। कालान्तर में इसी ऊर्जा को तत्कालीन सरकार्यवाह माननीय हो. वे. शेषाद्रि जी किस प्रकार संचारित करते थे उसका एक उदाहरण है हम दोनों के बीच हुआ यह पत्राचार।

अपने प्रवास की व्यस्तता में भी केवल पांच सप्ताह के अन्तराल में, सन 1995 में, जिस समय आज जैसा तेज गति का संवाद-प्रेषण उपलब्ध नहीं था, उस समय का यह प्रसंग निश्चित ही प्रेरणादायक है। दिनांक-7/10/1995 को लिखे हुए मेरे पत्र का 15/10/1995 के दिन उत्तर देना और फिर मेरे 23/10/1995 के पत्रोत्तर का 13/11/1995 के दिन पुन: उतर देना, इस प्रसंग ने मुझे उस समय तो ऊर्जा प्रदान की ही थी, आज उसका स्मरण भी मुझे ऊर्जा दे रहा है। आईये उस पत्राचार को देखें।

श्रद्धेय शेषाद्रि जी, गुवाहाटी
सादर प्रणाम 7/10/1995

आशा है स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे। विगत 26 वर्षों से मैं प्रचारक हूँ। प्रत्यक्ष संघ कार्य में 6 वर्ष, भूमिगत कार्य में 1 वर्ष, विद्यार्थी परिषद में 10 वर्ष तथा अब विद्या भारती में 10 वर्ष होने को है। सभी स्थानों पर प्रसन्नचित्त से काम करते हुए मुझे आत्म संतोष प्राप्त होता रहा है। सन् 1968 में परम पूजनीय श्री गुरुजी एवं 1986 में स्वर्गीय यशवंतराव केलकर से मार्गदर्शन पाने के लिए लिखे हुए पत्रों के अतिरिक्त कभी किसी अधिकारी को पत्र लिखने की आवश्यकता भी मैंने अनुभव नहीं की। जब-जब कोई प्रश्न या समस्या मन को बेचैन करती है, किसी अनुभवी कार्यकर्त्ता या ज्येष्ठ अधिकारी से उसका समाधान भी मुझे समय-समय पर मिलता रहा है। मैं अपने आप को बड़ा भाग्यवान समझता हूँ कि परम पूजनीय श्री गुरुजी, स्वर्गीय बाबासाहेब आप्टे, स्व.भाऊराव देवरस, स्व.यशवंतराव केलकर, स्व.रामदास कलसकर, स्व.दत्ताजी डिडोलकर, स्व. बालाभाऊ पाण्डे, प.पू. श्री बालासाहेब देवरस, मा. दतोपंत ठेंगडी, मा.वसंतराव भट्ट, मा.मदनदास जी, मा. बाबुराव वैद्य, मा.बंसीलाल जी सोनी, मा.शरदराव चौथाईवाले, आदि श्रेष्ठ जनों से कई बार व्यक्तिगत बातचीत का अवसर प्राप्त हुआ। मन में उठने वाले प्रश्नों का समाधान भी मिलता रहा। फलस्वरूप अपने काम में भी दिन-प्रतिदिन आनंद का ही अनुभव करता रहा हूँ।

पत्र लिखने का विशेष कारण यह है कि मेरे समान कार्य करने वाले सैकड़ों कार्यकर्ताओं से मिलने पर एवं उनके अंतर्मन को टटोलने पर इसके विपरीत अनुभव आता है। उनके मन के आनंद एवं उमंग की कृत्रिमता हताशा पूर्ण शब्दों में प्रकट होती है। क्या हम अपना स्वप्न साकार होते हुए देखेंगे या सब चकनाचूर हो जायेगा? विजया दशमी के उत्सव में नागपुर के कुछ दिग्भ्रमित स्वयंसेवकों द्वारा किये गए प्रदर्शन ने उनकी इस हताशा को और भी बढाया है। यह घटना निश्चित ही चिंताजनक है। समय रहते इस चित्र को बदलना आवश्यक है अन्यथा 'अब पछताए होए क्या जब चिड़िया चुग गई खेत' की स्थिति से हमें गुजरना पड़ेगा।

मैं 'संघ-शाखा' को सब कामों का मूलाधार मानता हूँ एवं सभी क्षेत्रों का कार्य 'संघ कार्य' ही है यह मेरी निष्ठा है। इसी सन्दर्भ में संघ कार्य की आज की स्थिति का विचार करते हुए कुछ बातें ध्यान में आती है, जो आप तक पहुँचाने की आवश्यकता महसूस करता हूँ।

1. 'संघ कार्य' की संख्यात्मक वृद्धि हुई है, निकट भविष्य में बहुत अधिक मात्रा में यह वृद्धि होगी, समय अनुकूल है।
2. इस अनुकूलता का लाभ उठाने के लिए जितनी मात्रा में कार्यकर्त्ता चाहिए उतनी संख्या हमारे पास नहीं है।
3. संख्यात्मक वृद्धि के कारण गुणात्मक कमी आई है, जो अस्वाभाविक तथा असंतुलित है।
4. इस असंतुलन का प्रमुख कारण है स्वयंसेवक एवं कार्यकर्ताओं के क्षेत्रानुकूल तथा युगानुकूल प्रशिक्षण का अभाव।
5. यद्यपि संघ कार्य बढ़ा है परन्तु संघ कार्य को बाधा पहुँचाने वाले कार्य उससे भी अधिक मात्रा में बढ़ रहे है जो कि परोक्ष रूप में राष्ट्र की प्रगति के लिए भी बाधक बनते जा रहे है।
6. कुछ कार्यकर्ताओं की कथनी एवं करनी का अंतर भी मन को कष्ट पहुँचाता है एवं निश्चित ही चिंतनीय है।

इन सभी परिस्थितियों में यथाशीघ्र परिवर्तन लाने हेतु कुछ सुझाव मन में उठ रहे है जिन्हें शब्दों में बाँधने का प्रयत्न कर रहा हूँ। प्रत्यक्ष

भेंट होने पर आवश्यक विस्तार के साथ विचार विमर्श भी करना चाहूँगा।

1. संघ कार्य का मूल आधार है 'दैनिक शाखा' आज तक इसका कोई विकल्प हम खोज नहीं पाए है अत: उसे निष्ठा पूर्वक चलाना यही एक मात्र मार्ग है। यदपि एक घंटे की शाखा अपेक्षित है परन्तु वह अप्रासंगिक ही होती जा रही है आज के व्यस्त जीवन के साथ शाखा का 'ताल-मेल' बैठाते हुए प्रभात शाखा 30 मिनट की एवं सायं शाखा 45 मिनट की कर दी जाए। संघ अधिकारी 'प्रार्थना' का समय क्या है यह पूछना छोड़ दे एवं 'शाखा' लगने का समय या ध्वजारोहण का समय क्या है? यह पूछना आरम्भ करे। कथनी एवं करनी का अंतर शाखा की कार्यप्रणाली के द्वारा ही मिटाया जा सकता है।
2. संघ शिक्षा का प्राथमिक वर्ग 8 दिन, प्रथम वर्ष 25 दिन, द्वितीय वर्ष 20 दिन, तृतीय वर्ष 15 दिन का ही रहे।
3. विभिन्न क्षेत्रों में क्षेत्रानुसार प्रशिक्षण की निश्चित व्यवस्था हो एवं प्रशिक्षण प्राप्त कार्यकर्ताओं को ही दायित्व देने की परम्परा विकसित करे। इन प्रशिक्षण वर्गों में 'संघ शाखा' अनिवार्य रहे।
4. राजनैतिक क्षेत्र समाज के हर अंग को प्रभावित करता है अत: उस क्षेत्र के कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण की आधुनिकतम व्यवस्था रहे। जन समस्याओं को समझना, आंदोलन करना, प्रशासनिक व्यवस्था को समझना, सत्ता को समाजोन्मुख करना, सत्ता की मर्यादा निर्धारित करना, चुनाव प्रक्रिया में संशोधन करना, जनसंघ के पुराने कार्यकताओ का यथोचित सम्मान करना, एकात्म मानववाद को सहज एवं बोधगम्य स्वरूप देते हुए चर्चाएँ आयोजित करना, टीम स्पिरिट 'समूह भाव' से काम करने का स्वभाव बनाना, आर्थिक व्यवहार में स्वच्छता एवं शुद्धता अपनाना आदि कई बातें इस प्रशिक्षण का अंग बन सकती है।
5. संघ द्वारा राजनैतिक क्षेत्र में दिए जाने वाले कार्यकताओं को केवल शाखा कार्य का अनुभव पर्याप्त नहीं होता, किसी जनसंगठन का अनुभव आवश्यक है अत: कुछ वर्ष तक मजदूर संघ, विद्यार्थी परिषद, वनवासी कल्याण आश्रम, ग्राहक पंचायत, विश्व हिन्दू परिषद, विद्या भारती आदि संगठनों में कार्यरत कार्यकर्ताओ को उस क्षेत्र में दिया जाए तथा उनका भी उसी क्षेत्र के कार्यकर्ताओं के मार्गदर्शन में प्रशिक्षण हो। इन कार्यकर्ताओं में सत्ता से दूर रहकर केवल 'किंग मेकर' की भूमिका का निर्वाह करने की मानसिकता विकसित की जाए।
6. यद्यपि संगठन शास्त्र के हम कुशल कारीगर है परन्तु राजनैतिक दृष्टि से हम आज भी अपरिपक्व एवं अकुशल ही प्रमाणित होते आ रहे है। इस दृष्टि से सी.पी.एम. से हमें कुछ बाते सीखनी चाहिये।
   क. 'ग्रास रूट' के (अंतिम कड़ी के) कार्यकर्ताओ की एक दुसरे से पहचान एवं राष्ट्रीय स्तर के कार्यकर्ताओ तक उनकी पहुँच का निर्धारित मार्ग अथवा सूत्र निश्चित हो।
   ख. सत्ता पर रहते हुए भी सत्ता पर अंकुश रखने की सांगठनिक व्यवस्था।
   ग. सत्ता का उपयोग व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए न करते हुए संगठन के लिए करने की परम्परा का निर्माण।
7. शस्त्र एवं कानून को अपने हाथ में लेना समाज के लिए सर्वथा अहितकर एवं संघ संस्कारो के लिए हानिकारक है अत: इस प्रकार के संगठनों को बढ़ावा न देकर शस्त्र एवं कानून के रक्षकों के हाथ मजबूत करने हेतु कदम उठाए जाए। प्रशासन, पुलिस एवं सेना में अधिकाधिक स्वयंसेवकों को भेजने हेतु विशेष प्रशिक्षण का प्रावधान किया जाये उसके द्वारा ही यह कार्य संभव हो पायेगा।
8. आधुनिकतम प्रचार माध्यम दूरदर्शन के द्वारा अपने विचार, शिक्षा, दर्शन एवं संस्कार जन साधारण तक पहुँचाने हेतु रोचक कार्यक्रम बनाने की व्यवस्था खड़ी की जाए। जन-प्रियता प्राप्त करने के लिए नग्नता का प्रदर्शन कदापि समर्थन योग्य नहीं है।
9. दैनिक समाचार पत्रों में संवाद प्रेषण, संपादक के नाम पत्र, विचार प्रवर्तक लेख आदि लिखे जाए एवं संपादन कार्य हेतु स्वयंसेवकों को प्रेरित एवं प्रशिक्षित करने की व्यवस्था हो।
10. डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान तथा स्वामी विवेकानंद सेवा सम्मान जैसे कुछ पुरस्कार खेल-कूद, साहित्य, कला, विज्ञान आदि क्षेत्रों में भी देने की योजना बनायीं जाए।
11. 'राजनैतिक हिन्दू' एवं 'कर्मकांडी हिन्दू' की बजाय 'समाज सेवी हिन्दू' की अपनी प्रतिमा को अधिक उजागर किया जाए।
12. शिशु शिक्षा में मातृ भाषा के माध्यम से शिक्षा पर बल दिया जाए तथा आवसीय विद्यालयों की मालिका देश भर में खड़ी की जाए जिनके माध्यम से हिन्दू संस्कार घर-घर तक पहुँचाना सहज ही संभव हो पाता है।
13. 'संघ कार्य' में सम्पूर्ण समय देने वाले कार्यकर्ताओं के अंतर्मन को समझने हेतु अखिल भारतीय अधिकारियों के साथ अनौपचारिक 'खुली चर्चा' एवं आपसी विचार-विमर्श के अवसरों कों बढ़ाया जाए। संगठन के स्वस्थ विकास के लिए यह बहुत ही आवश्यक है। यह क्रम विभाग प्रचारक के स्तर पर भी अपनाया जाए।
14. संघ की निर्णय प्रक्रिया बहुत धीमी है इसे तीव्र करने हेतु आवश्यकतानुसार परिवर्तन करते हुए आधुनिक संसाधनों का प्रयोग किया जाए।
15. कार्य एवं कार्यकर्त्ता के मूल्यांकन की देशव्यापी व्यवस्था निर्माण की जाए जो अति-विश्वसनीय ढंग से संचालित होती रहे।

आशा है देश के इस संक्रमण काल में हम अति विश्वास के वायुमंडल में अपनी सतर्कता न खो दे, हमारी थोड़ी सी असावधानी देश के लिए घातक सिद्ध हो सकती है। छोटे मुँह बड़ी बात की धृष्टता के लिए क्षमा चाहते हुए पत्र समाप्त करता हूँ। शेष शुभ।

स्नेहाकांक्षी
लक्ष्मीनारायण भाला

भागलपुर : 15/10/1995

मित्रवर श्री भाला,
सप्रेम नमस्कार

आपका 7/10 का प्रदीर्घ पत्र पाया। काफी व्यापक तौर पर सोचकर ही ये सारे सुझाव-अवलोकन आपने प्रस्तुत किये है। पढ़ने के बाद मेरा मन भी अंतर्मुख हुआ। आपने जो बातें लिखी है उनमें बहुतांश हम सभी प्रमुख सहकारियो

की भी चिंता एवं चिंतन के मुद्दे बनें हुए है। अन्यान्य जगहों पर उन को ध्यान में रखकर कम-अधिक प्रमाण में प्रयास भी शुरू हुआ है।

मुझे यह भी तीव्रता से लगना शुरू हुआ है कि मैं अपने से ही शुरू करूं। आवश्यक परिवर्तन किये जाने की दृष्टि से मेरी चिंतन-शैली में, बोलचाल में क्या-क्या बदल लाना आवश्यक है? मेरे कारण से तो कही समस्या खड़ी नहीं हो रही है? परोपदेश पांडित्य का तो मैं शिकार नहीं बन रहा हूँ?

एक और पद्धति मैंने पहले से अपनाई है। मेरा निजी अभिमत/अनुभव कुछ भी अपने वरिष्ठों के वचन पर पूर्ण श्रद्धा रखकर उसी के प्रकाश में चलने का प्रयास करते आया हूँ।

शेष कुशल-मंगल।

भवदीय
हो.वे. शेषाद्रि

गुवाहाटी : 23/10/1995

श्रद्धेय शेषाद्रि जी,
सादर प्रणाम

आपका पत्र मिला। मन की चिंता को दूर कर प्रेरणा देने वाला तो था ही परन्तु उससे भी अधिक मेरी आत्म-निरीक्षण, आत्म-चिंतन एवं आत्म-समीक्षा की प्रक्रिया को आपके पत्र ने चालना देकर मुझे और भी अधिक अन्तर्मुखी होने की प्रेरणा दी। अहंकार का जो बीज मन में अंकुरित होने जा रहा था उसे समय रहते ही आपने दिखा दिया, बहुत-बहुत धन्यवाद।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि अहंकार के इस अंकूर को समाप्त करने का साहस एवं आत्मबल मुझे प्राप्त होता रहे। आपका मार्गदर्शन एवं सान्निध्य निश्चित्त ही इस कार्य में सहायक होगा।

सन 1972 में चिंता के ऐसे ही किसी क्षण में अपने आपको समझाते हुए मैंने जो लिखा था उसका स्मरण हो आया। आपके अवलोकनार्थ एवं 'स्वांत सुखाय' उसी कविता को उद्धृत कर रहा हूँ।

धृष्टता के लिए क्षमा चाहते हुए पत्र समाप्त करता हूँ। धन्यवाद।

शेष शुभम्।

स्नेहाकांक्षी
लक्ष्मीनारायण भाला

प्यारे चिंतक
तू कर चिंतन प्यारे चिन्तक
पर चिंतित क्यों?॥धृ॥

माथे किरीट है हिम मंडित,

पद पूजा में सागर सिंचित,
गल-माला है सरिता अंकित,
पर हाय! भुजाओ से वंचित,
माता का है गौरव खंडित,
गौरव-पथ है कंटक संचित,
पर ध्येय अटल तो पथ के इन-
काँटों से मन आतंकित क्यों?
प्यारे चिन्तक.... ॥1॥

पद विश्व-गुरु माँ से वंचित,
है आज पड़ा सूना-शंकित,
जिसके कारण मानव कम्पित,
है मानवता भी आतंकित,
उज्ज्वल अतीत कर आशंकित,
हम करें इसे आसन-मंडित,
फल प्राप्ति हेतु बलिदानों से
ऐ कर्मयोगी! भय कल्पित क्यों?
प्यारे चिन्तक... ॥2॥

जिस मन में है माता अंकित,
माँ की गौरव गाथा अंकित,
गौरव-प्राप्ति का प्रण अंकित,
प्रण-पूर्ति का है पथ अंकित,
पथ दर्शाता दर्शक अंकित,
पथ-दर्शक में श्रद्धा अंकित,
ऐसे तन-मन जब कार्य प्रवण,
तेरा मानस आशंकित क्यों?
प्यारे चिन्तक.... ॥3॥

दिल्ली : 13/11/1995

प्रिय मित्र श्री भाला

तुम्हारा दि. 23/10 का पत्र मिला।

तुम्हारा भावात्मक एवं आत्म-निरिक्षणात्मक दृष्टिकोण हृदयस्पर्शी लगा।

तुम्हारी काव्य प्रतिभा का परिचय पहली बार हुआ। पढ़कर अतीव प्रसन्नता हुई। क्या इसका राग भी बना हुआ है? स्वयंसेवको के बीच कभी गायी भी गई है क्या?

आज ही उदयपुर से यहाँ लौट आया। आगामी 3 माह तक लगातार प्रवास-क्रम बना हुआ है।

शेष कुशल। सभी स्वयंसेवक बंधूगण को सप्रेम नमस्कार।

सस्नेह
हो.वे. शेषाद्रि

25 वर्ष बीत जानें के बाद आज जब इन पत्रों को मैं देखता हूँ तो कई बातें आज भी प्रासंगिक लगती है तथा उन समस्याओं का समाधान खोजने की आज भी आवश्यकता अनुभूत होती है।

इस पत्राचार के बाद सन् 1996 के संघ शिक्षा वर्ग (मई-जून) में हुई भेंट के दौरान उनसे वार्तालाप का भी अवसर मिला जिसमें कुछ सहमति के बिन्दुओं पर तो कुछ असहमति के बिन्दुओं पर भी बात हुई। परिणामत: सारे ही बिंदु सहमति के दायरे में आना स्वाभाविक ही था। यथा संघ शाखा एक घंटे की ही हो परन्तु विशेष कारणवश या परिस्थितिवश यदि उसे कभी किसी स्थान पर कम समय की करनी हो तो वह नियम नहीं अपवाद के रूप में ही मान्य की जाए। संघ शिक्षा वर्ग के लिए कम से कम 20 दिन का समय अवश्य ही चाहिए अत: उससे कम दिनों का वर्ग ना किया जाए।

कार्यकर्ताओं का आपसी संवाद कितना उपयोगी एवं ऊर्जा प्रदान करने वाला होता है इस बात का प्रत्यक्ष उदाहारण थे माननीय हो. वे. शेषाद्रि जी। क्रमश:

लेखक वरिष्ठ साहित्यकार एवं स्तंभकार हैं।
ई-मेल : response50123@gmail.com

पुष्कर सिंह धामी : उत्तराखंड के सबसे युवा मुख्यमंत्री

इन्द्रमोहन मिश्रा

''मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के बाद धामी दिल्ली पहुंचे और उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहित कई वरिष्ठजनों से मिलकर उनका आभार व्यक्त किया। मुख्यमंत्री ने शीर्ष नेतृत्व को विश्वास दिलाया कि विकास के नाम पर आगामी विधानसभा चुनाव में पार्टी की जीत तय है। 2022 में होने वाले विधानसभा चुनावों के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि सभी के सहयोग से वह न केवल हर चुनौती को पार करेंगे बल्कि अपने पूर्ववर्तियों द्वारा किए गए कार्यों को भी आगे बढ़ाएंगे।''

उधमसिंह नगर जिले के खटीमा से भाजपा विधायक पुष्कर सिंह धामी ने 4 जुलाई 2021 को उत्तराखंड के मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। 45 साल के पुष्कर सिंह धामी उत्तराखंड के अब तक के सबसे युवा मुख्यमंत्री हैं। छात्र राजनीति से जुड़े रहे धामी महाराष्ट्र के राज्यपाल और प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री भगत सिंह कोश्यारी के अत्यंत करीबी हैं। भगत दा ने ही उन्हें उंगली पकड़ कर राजनीति की शिक्षा दी है। चर्चा इस बात की भी है कि अगले साल उत्तराखंड में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं, जिसे देखते हुए बीजेपी ने युवाओं को आकर्षित करने के लिए पुष्कर सिंह धामी को मुख्यमंत्री के रूप में चुना है।

मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के बाद धामी दिल्ली पहुंचे और उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहित कई वरिष्ठ जनों से मिलकर उनका आभार व्यक्त किया। मुख्यमंत्री ने शीर्ष नेतृत्व को विश्वास दिलाया कि विकास के नाम पर आगामी विधानसभा चुनाव में पार्टी की जीत तय है। 2022 में होने वाले विधानसभा चुनावों के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि सभी के सहयोग से वह न केवल हर चुनौती को पार करेंगे बल्कि अपने पूर्ववर्तियों द्वारा किए गए कार्यों को भी आगे बढ़ाएंगे। धामी का कहना है कि उनकी प्राथमिकता जनता की सेवा है जिसके लिए वह पूरे मन से काम करेंगे। श्रावण में कांवड़ यात्रा को लेकर उन्होंने कहा कि हम नहीं चाहते कि कोरोना की वजह से किसी की जान जाए। हमारी चिंता लोगों की सुरक्षा है। इस बारे में मैंने उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, हरियाणा, पंजाब की सरकारों से बात करके इस वर्ष यात्रा को स्थगित कर दिया है।

दिल्ली से ये मंत्र लेकर लौटे धामी

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से जब यह पूछा गया कि वह केंद्रीय नेतृत्व से कौन सा मंत्र लेकर लौटे हैं, तो उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का एक ही मंत्र है 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास'। मुझे भी इसी मंत्र को लेकर उत्तराखंड का विकास करना है। मैं निश्चित तौर पर पीएम मोदी, गृहमंत्री अमित शाह और पार्टी नेतृत्व की उम्मीदों पर खरा उतरूंगा। मैं सभी चुनौतियों को स्वीकार करता हूं और पार्टी को आगे बढ़ाने के लिए मैं दिन-रात काम करूंगा।

प्रधानमंत्री और गृहमंत्री से मुलाकात के बाद मुख्यमंत्री धामी ने दिल्ली आये अपने राजनीतिक गुरु और महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी का आशीर्वाद लिया। उसके बाद उन्होंने केंद्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव से शिष्टाचार भेंट की। मुख्यमंत्री ने उनसे उत्तराखंड से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की। उन्हें पर्यावरण मंत्रालय में राज्य के लंबित मामलों के संबंध में जानकारी देते हुए इनके शीघ्र निस्तारण का अनुरोध किया। सड़कों की अंतिम स्वीकृति के प्रस्ताव को तेजी से मंजूरी देने का आग्रह भी मुख्यमंत्री ने किया। केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव ने मुख्यमंत्री को उत्तराखंड के

विकास में हर संभव सहयोग देने का आश्वासन दिया।

पुष्कर सिंह धामी का प्रारंभिक जीवन

पिथौरागढ की ग्राम सभा टुण्डी कनालीछीना, तहसील डीडीहाट में पुष्कर सिंह धामी का जन्म शेर सिंह धामी और विश्ना देवी के घर हुआ। सैनिक पुत्र होने के नाते राष्ट्रीयता, सेवा भाव एवं देशभक्ति को ही उन्होंने धर्म के रूप में अपनाया। आर्थिक अभाव में जीवन यापन कर सरकारी स्कूलों से प्राथमिक शिक्षा ग्रहण की। तीन बहनों के बाद अकेला पुत्र होने के नाते परिवार के प्रति जिम्मेदारियां हमेशा उनके ऊपर बनी रहीं। इनकी माता विश्ना देवी एक धर्मपरायण, मृदुभाषी और अपने परिवार के प्रति समर्पित घरेलू महिला थीं। धामी को बचपन से ही स्काउट गाइड, एनसीसी, एनएसएस आदि शाखाओं में प्रतिभाग करने और समाजिक कार्यो में भाग लेने में रूचि रही। लखनऊ विश्वविद्यालय में छात्रों को एक जुट करके निरंतर संघर्षशील रहते हुए उनके शैक्षिणक हितों की लड़ाई लड़ते हुए उनके अधिकार दिलाने के लिए भी धामी सक्रिय रहे तथा शिक्षा व्यवस्था के संचालन में उन्होंने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लखनऊ विश्वविद्यालय से उन्होंने मानव संसाधन प्रबंधन में पीजी और एलएलबी की शिक्षा हासिल की है।

राजनीतिक जीवन

सन 1990 से 1999 तक धामी ने जिले से लेकर राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर तक अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद में विभिन्न पदों पर रहकर कार्य किया। इसी दौरान अलग-अलग दायित्वों के साथ-साथ प्रदेश मंत्री के तौर पर लखनऊ में हुए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय सम्मेलन में उन्होंने संयोजक एवं संचालन कर्ता की प्रमुख भूमिका निभाई। राज्य की भौगोलिक परिस्थितियों को नजदीक से समझते हुए क्षेत्रीय समस्याओं की समझ और उत्तराखंड राज्य गठन के बाद राज्य के दूसरे मुख्यमंत्री भगत सिंह कोश्यारी के विशेष कार्याधिकारी के रूप में उन्होंने पूरी लगन से कार्य किया। दो बार भारतीय जनता युवा मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष रहते हुए धामी ने सन् 2002 से 2008 तक छः वर्षो में लगातार पूरे प्रदेश का भ्रमण करके युवाओं को संगठित किया। उन्होंने बेरोजगार युवकों को संगठित करके अनेकों विशाल रैलियां और सम्मेलन आयोजित किए। तब की सरकार से राज्य के उद्योगों में युवाओं को 70% आरक्षण दिलाने की घोषणा कराना उनकी बहुत बड़ी उपलब्धि थी।

पुष्कर सिंह धामी एक परिचय

पिता का नाम : शेर सिंह धामी
माता का नाम : श्रीमती विश्ना देवी
पत्नी का नाम : श्रीमती गीता धामी
शैक्षिक योग्यता : स्नातकोत्तर
व्यावसायिक शिक्षा: मानव संसाधन प्रबंधन और औद्योगिक संबंध में मास्टर डिग्री
जन्म तिथि : 16.09.1975
राजनीतिक दल का नाम : भारतीय जनता पार्टी
विधानसभा का नाम : खटीमा

उत्तराखंड में कौन कितने समय के लिए रहा मुख्यमंत्री ?

1. **नित्यानंद स्वामी** : 9 नवंबर 2000 से 29 अक्टूबर 2001 (354 दिन)
2. **भगत सिंह कोश्यारी** : 30 अक्टूबर 2001 से 1 मार्च 2002 (122 दिन)
3. **नारायण दत्त तिवारी** : 2 मार्च 2002 से 7 मार्च 2007 (5 साल 5 दिन)
4. **भुवन चन्द्र खंडूड़ी** : 7 मार्च 2007 से 26 जून 2009 (2 साल 111 दिन)
5. **रमेश पोखरियाल निशंक** : 27 जून 2009 से 10 सितंबर 2011 (2 साल 75 दिन)
6. **भुवन चन्द्र खंडूड़ी** : 11 सितंबर 2011 से 13 मार्च 2012 (184 दिन)
7. **विजय बहुगुणा** : 13 मार्च 2012 से 31 जनवरी 2014 (1 साल 324 दिन)
8. **हरीश रावत** : 1 फरवरी 2014 से 18 मार्च 2017 (3 साल 2 दिन)
9. **त्रिवेन्द्र सिंह रावत** : 18 मार्च 2017 से 10 मार्च 2021 (3 साल 357 दिन)
10. **तीरथ सिंह रावत** : 10 मार्च 2021 से 2 जुलाई 2021 (114 दिन)
11. **पुष्कर सिंह धामी** : 04 जुलाई 2021 को नियुक्त

खटीमा से लगातार दो बार से हैं विधायक

खटीमा से पुष्कर सिंह दामी लगातार 2012 से अब तक विधायक के रूप में कार्यरत हैं। उनका कहना है कि मुख्यमंत्री के रूप में क्षेत्र और राज्य की जनता से मेरा यही निवेदन है कि अपनी समस्याओं को समय-समय पर मुझे बताते रहें, जिससे मैं उनका निराकरण तुरंत करा सकूं। मेरे द्वार आम जनता के लिए सदैव खुले हैं। मुख्यमंत्री ने सभी लोगों, सभी वर्ग, सभी क्षेत्रों और धर्म-जाति के लोगों का आह्वान करते हुए कहा कि आप सभी के सहयोग से ही हम नया उत्तराखंड बनाने में सफल हो सकते हैं।

लेखक चाणक्य वार्ता के उत्तराखंड ब्यूरो चीफ हैं।
ई-मेल : response50123@gmail.com

प्रो. फूलचन्द जैन प्रेमी

वाराणसी की प्राचीन जैन संस्कृति एवं परम्परा-2

गतांक से आगे

जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथ की जन्मस्थली वाराणसी नगरी उस समय काशी देश के अन्तर्गत ही थी। तीर्थंकर महावीर के समय काशी, कौशल आदि अट्ठारह गणराज्यों का उल्लेख जैन साहित्य में मिलता है। ये सभी तीर्थंकर महावीर के अनुयायी थे और ये सभी भगवान महावीर का निर्वाणोत्सव मनाने के लिए उनके निर्वाण के तुरन्त बाद पावा नगरी में एकत्रित हुए। तत्कालीन काशी नरेश जितशत्रु ने वाराणसी में तीर्थंकर महावीर की वंदना-अर्चना की थी। इस नगर के बाहर कोष्ठक नामक चैत्य में तीर्थंकर महावीर का कई बार समोशरण भी आया था। इस नगरी के चौबीस कोटि मुद्राओं के धनी 'चुलनीपिता' नामक सेठ और 'सुरादेव' नामक धनाढ्य गृहस्थ भगवान महावीर के समय के प्रमुख दस श्रमणोपासकों (गृहस्थ-श्रावकों) में से एक थे। यहाँ के राजा 'लक्ष' को काम महावन चैत्य में महावीर ने अपना शिष्य स्वीकार किया था। इसी नगर के एक और अन्य राजा 'शंख' ने भी उनसे जिन दीक्षा ग्रहण की थी । वाराणसी की राजकुमारी उनकी परमभक्त थी। दिगम्बर परम्परा के तिलोयपण्णत्ति, उत्तरपुराण, आ. पदमकीर्ति कृत ''पासणाह चरित्र, वादिराजकृत एवं आ. सकलकीर्ति कृत पार्श्वनाथ चरित्र में तथा ब्र. नेमिदत्त आराधना कथा-कोश में भी वाराणसी का अच्छा चित्रण मिलता है ।

इस तरह जिस प्रकार हिंदू तथा अन्य धर्मानुयायियों के लिए काशी एक पवित्र तीर्थ है, उसी प्रकार जैन धर्मानुयायियों के लिए भी यह एक पवित्र प्राचीन महातीर्थ है। जहां की भूमि चार-चार तीर्थंकरों के पंचकल्याणकों में से गर्भ, जन्म, दीक्षा और ज्ञान कल्याणक इस तरह प्रत्येक तीर्थंकर के चार-चार कल्याणकों से पवित्र हैं। इनके अतिरिक्त काशी की भूमि पर अन्यान्य तीर्थंकरों और महापुरुषों का निरंतर विहार भी होता रहा है। इसीलिए काशी जैसे विश्व प्रसिद्ध, अति प्राचीन, पवित्र इस तीर्थ से संपूर्ण देश के जैनधर्म के अनुयायियों का असीम श्रद्धायुक्त भावनात्मक लगाव स्वाभाविक है । इसीलिए लाखों जैन तीर्थयात्री इस महातीर्थ के वंदन-पूजन हेतु प्रतिवर्ष आते हैं और अपने जीवन को सार्थक मानते हैं। इधर पुरातात्त्विक महत्व की तीसरी शती तक के अनेक जैन मूर्तियों तथा इनसे संबंधित अन्य पुरावशेष आदि की उपलब्धता भी उक्त अवधारणाओं की सम्पुष्टि करती है कि वाराणसी भी सदा से श्रमण जैन संस्कृति और परम्परा का भी एक महत्वपूर्ण समृद्ध केन्द्र रहा है। बनारस में जन्मे ये चार तीर्थंकर इस प्रकार हैं...

1. सप्तम तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ, जिनकी जन्मभूमि भदैनी मुहल्ले में गंगातट पर स्थित जैनघाट है।
2. अष्टम तीर्थंकर चंद्रप्रभु जिनकी जन्मभूमि है बनारस से लगभग पच्चीस किलोमीटर दूर गंगातट पर स्थित चन्द्रावती ग्राम।
3. ग्यारहवें तीर्थंकर श्रेयांसनाथ जिनकी जन्मभूमि है विश्व प्रसिद्ध सुविख्यात पर्यटक केंद्र सारनाथ।
4. तेइसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ जिनकी जन्मभूमि है बनारस शहर के मध्य भेलुपुर मुहल्ला, जहां तीन भव्य जिनालय सुशोभित हैं।

यहां प्रस्तुत है बनारस में जन्में इन्हीं चार तीर्थंकरों का क्रमश: मंगलमय व्यक्तित्व तथा उनके व्यापक प्रभाव की विशेषताओं का परिचय—

1. सप्तम तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ

जैनधर्म में चौबीस तीर्थंकरों की परंपरा में सप्तम तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ का जन्म अति प्राचीन काल में काशी देश की वाराणसी नगरी के भद्रवनी क्षेत्र, जिसे अब भदैनी मुहल्ला कहते हैं, में गंगातट पर स्थित इक्ष्वाकु वंशी महाराज सुप्रतिष्ठ के राजमहल में महारानी पृथ्वीषेणा की कोख से ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी के दिन अग्निमित्र नामक शुभयोग में अनेक सहस्राब्दियों पूर्व हुआ था।

इन्हीं की जन्मभूमि की स्मृति-स्वरूप भदैनी में गंगातट पर आज भी तीन (दो दिगम्बर एवं एक श्वेताम्बर) जैन मंदिर बने हुए हैं। सहस्त्राधिक श्रेष्ठ विद्वानों की परम्परा का जनक श्री स्याद्वाद महाविद्यालय भी जैनघाट स्थित श्री सुपार्श्वनाथ की जन्म भूमि स्थित जिनालय के परिसर में पिछले 11-12 दशकों से चल रहा है। इसमें पढ़े-लिखे शताधिक विद्वान् आज भी देश, समाज, जैनधर्म-दर्शन, साहित्य एवं संस्कृति की सेवा में संलग्न हैं। वाराणसी में ही तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ के गर्भ, जन्म, तप और ज्ञान-ये चार कल्याणक हुए अर्थात् इन्हें इन चारों की प्राप्ति यहीं हुई।

जैनधर्म में मति, श्रुत, अवधि, मन:पर्यय और केवलज्ञान— इस तरह ज्ञान के पांच भेद हैं। बालक सुपार्श्वनाथ इतने प्रतिभाशाली थे कि उनमें पूर्वोक्त ज्ञान में प्रारंभ के तीन ज्ञान जन्म से ही थे। प्रारंभ से ही सभी प्रकार के सुख-साधनों की संपन्नता के बावजूद वे इनसे उदासीन रहते थे, फिर भी पारिवारिक परंपरा के निर्वाह हेतु उनका यथासमय विवाह हुआ और सुयोग्य पुत्र भी हुए। पिता के बाद आप राज्य के उत्तराधिकारी बने और सुयोग्य शासक (महाराजा) बने। फिर भी आपके मन में सदा आत्मकल्याण की बात ही प्रमुखता से छायी

रहती थी। एक दिन ऋतु परिवर्तन देखकर आप संसार की क्षणभंगुरता जान गए और अपने पुत्र को राज-पाट सौंपकर ज्येष्ठ शुक्ला द्वादशी की संध्या समय विशाखा नक्षत्र में एक सहस्त्र राजाओं के साथ सहेतुक वन में जाकर पंचमुष्ठि केशलुंचन कर वस्त्राभूषणादि सभी परिग्रहों का सदा के लिए त्यागकर मुनि दीक्षापूर्वक संयम ग्रहण किया।

दीक्षा के दूसरे दिन जब आप आहारार्थ विधिपूर्वक निकले, तब प्रथम बार आहारदान का सौभाग्य सोमखेट नगर के महाराजा महेन्द्रदत्त को प्राप्त हुआ। आपकी संयम साधना निरंतर बढ़ती जा रही थी। लक्ष्य था-आत्मकल्याण के साथ-साथ संसारी प्राणियों के कल्याण की प्रबल भावना।

सर्वोत्कृष्ट ज्ञान प्राप्ति के लिए सभी व्रत-उपवासों के साथ ही उत्कृष्ट ध्यान-योग, साधना आपके जीवन का अभिन्न अंग बन चुकी थीं। लोग आश्चर्यचकित हो प्रेरणा ग्रहण करते हुए कहते कि इतने बड़े काशी राज्य के एक लोकप्रिय अधिपति बनकर भी इन्हें राज-पाट के मोह को त्यागने में तनिक भी देर न लगी और अब संयम मार्ग पर आरूढ़ हो निरंतर उग्र तपश्चरण की उनकी दृढ़ता भी कितनी बेजोड़ है। इस प्रकार नौ वर्ष की कठिन साधना (तपस्या) के बाद फाल्गुन शुक्ला सप्तमी के दिन जब आप शिरीष वृक्ष के नीचे ध्यानारूढ़ थे, तभी विशाखा नक्षत्र में आपको केवल- ज्ञान की प्राप्ति हुई। जन-जन में खुशी की लहर दौड़ गई।

देव, इंद्र और संपूर्ण प्रजाजनों ने इस शुभ अवसर पर केवलज्ञान कल्याणक महामहोत्सव बड़े ही उत्साहपूर्वक मनाया। मति, श्रुत आदि पांच ज्ञानों में केवलज्ञान सर्वोत्कृष्ट और अंतिम ज्ञान है। इसमें इंद्रियातीत आत्मज्ञान द्वारा तीनों काल और तीनों लोक के संपूर्ण द्रव्य और उनकी समस्त पर्यायों आदि का एक साथ स्पष्ट और सर्वग्राही ज्ञान दर्पण की तरह हो जाता है।

अत: जैन परंपरानुसार केवलज्ञान प्राप्ति के बाद उस महान् आत्मा को पांच परमेष्ठियों में प्रथम 'अर्हन्त' परमेष्ठी पद की प्राप्ति हो जाती है और वे सर्वज्ञ, सर्वदर्शी बन जाते हैं।

अत: उत्कृष्ट संयम, साधनापूर्वक इस आत्मकल्याण के बाद करुणाभाव से संसार के सभी प्राणियों के कल्याण की तीव्र इच्छा से प्रेरित हो तीर्थंकर भगवान सुपार्श्वनाथ ने समवशरण नामक धर्मसभा के माध्यम से देशना (उपदेश) देना आरंभ किया। तीर्थंकर के समवशरण में देव, मनुष्य, तिर्यंच आदि सभी

''दीक्षा के दूसरे दिन जब आप आहारार्थ विधिपूर्वक निकले, तब प्रथम बार आहारदान का सौभाग्य सोमखेट नगर के महाराजा महेन्द्रदत्त को प्राप्त हुआ। आपकी संयम साधना निरंतर बढ़ती जा रही थी। लक्ष्य था-आत्मकल्याण के साथ-साथ संसारी प्राणियों के कल्याण की प्रबल भावना।''

जीव समभावपूर्वक बैठकर भगवान की दिव्य ध्वनि को सुनते हैं।

काशी, कौशल, मथुरा, मगध आदि देशों के प्राय: सभी प्रमुख गणराज्यों में विहार करते हुए, तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ जन-जन के लिए कल्याणकारी तत्वोपदेश देने लगे। स्वयं की साधना तो चल ही रही थी, धीरे-धीरे मोक्षाभिलाषी जन भी आपसे जुड़ते गए और तत्त्वोपदेश से प्रभावित हो, श्रमण-दीक्षा ग्रहण करते रहे। इस प्रकार आपका एक विशाल संघ बन गया। इस तरह सहस्त्रों मुनि, आर्यिका, श्रावक और श्राविका इनके संघस्थ बने। इनके बल आदि 95 गणधर थे। लंबे समय तक भारत के कोने-कोने में तथा देश के सीमांत प्रदेशों में विहार करके वे जीवों को सत्य तथा अहिंसा के मार्ग पर दृढ़ करते रहे। जीवन के अंत में जब आपकी आयु मात्र एक माह अवशिष्ट रही, तब आपने बिहार राज्य के सम्मेद शिखर जैसे परम पवित्र शाश्वत सिद्ध तीर्थ पर जाकर प्रतिमायोग धारण किया और फाल्गुन कृष्ण सप्तमी को विशाखा नक्षत्र में निर्वाण प्राप्त किया। निर्वाण प्राप्ति की खुशी में सभी देवों और मनुष्यों ने मिलकर बड़ी धूमधाम से आपका निर्वाण महोत्सव मनाया।

जिस तरह आपने संसार के सभी प्राणियों के कल्याण हेतु तत्त्वोपदेश तथा अन्य व्यावहारिक मंगलकारी कार्यों द्वारा जन-जन के हृदय में जो स्थान बनाया, उससे आपकी लोकप्रियता और प्रभाव स्पष्ट है। देश के कोने-कोने में स्थित जिन मंदिरों में आपकी भव्य प्रतिमाएं विराजमान हैं, आपका चिह्न स्वस्तिक है। किंतु पार्श्वनाथ की युक्त मूर्तियों की तरह आपकी प्राचीन मूर्तियां भी सर्प फणावली युक्त भी मिलती हैं। अंतर इतना है कि सामान्यतया जहां पार्श्वनाथ की मूर्तियों में सात संख्या युक्त या इनसे अधिक फणावली मिलती हैं, वहीं सुपार्श्वनाथ की प्रतिमाओं में पांच संख्यावाली फणावली मिलती है। स्वस्तिक मंगलचिह्न तो आपकी प्रतिमा की स्थायी पहचान है ही, साथ ही आपकी परिकर युक्त प्रतिमाओं के साथ वरनन्दिन नामक यक्ष एवं काली नामक यक्षिणी का भी अंकन होता है कहीं-कहीं यक्ष का नाम विजय और यक्षिणी का नाम पुरुषदत्ता भी मिलता है।

लोकव्यापी प्रभाव और उसके पुरातात्विक प्रमाण : शौरसेन प्रदेश के, विशेषकर मथुरा क्षेत्र में, आपका व्यापक प्रभाव रहा है। इसका प्रमाण मथुरा के कंकाली टीले से प्राप्त एक स्तूप का ध्वंसावशेष है। यह काफी प्रसिद्ध स्तूप था। 'विविध तीर्थकल्प' नामक ग्रंथ में आचार्य जिनप्रभ सूरी ने इसका उल्लेख किया है कि इस स्तूप को कुवेरा देवी ने सुपार्श्वनाथ के काल में इसे सोने का बनवाया था और उस पर तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ की मूर्ति स्थापित की थी। यशस्तिलक चम्पू के लेखक आचार्य सोमदेव सूरी ने इस स्तूप के दर्शन किए थे और इसे देवनिर्मित स्तूप बताया है। हरिषेण कथाकोश में वज्रकुमार की कथा के अंतर्गत इस स्तूप को वज्रकुमार के निमित्त विद्याधरों द्वारा निर्मित बताया है जम्बूस्वामी चरित के लेखक महाकवि राजमल्ल के अनुसार इस स्तूप का जीर्णोद्धार साहू टोडर ने भी किया था। कवि ने स्वयं इस स्तूप के दर्शन किए थे। इनके अनुसार वहां उस समय पांच सौ चौदह स्तूप थे। पूर्वोक्त भगवान सुपार्श्वनाथ के स्तूप का एक प्रमाण यह भी है कि कंकाली टीले से एक मूर्ति मिली है, जिसके लेख में इसे देवनिर्मित कहा गया है। कुषाणकालीन (सन 79) का यह पट्ट इस दृष्टि से भी काफी महत्वपूर्ण माना गया है।

इस प्रकार तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ अपने समय के एक प्रभावक, लोककल्याणकारी तीर्थंकर थे। तीसरी शती के आचार्य स्वामी समंतभद्र ने स्वयंभू स्तोत्र में आपकी स्तुति करते हुए कहा है...

सर्वस्य तत्वस्य भवान् प्रमाता, मातेव बालस्य हितानुशास्ता।

गुणावलोकस्य जनस्य नेता मयापि भक्त्या परिणूयसेऽ।।15।।

अर्थात् हे सुपार्श्व जिन्! आप सब तत्वों के प्रमाता हैं। बालक को माता के समान अज्ञानी जनों को हित का उपदेश देने वाले हैं और गुणों की खोज करने वाले जनों के नेता हैं, इसलिए मैं भक्तिपूर्वक आपकी स्तुति कर रहा हूं। क्रमश:

लेखक राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त वरिष्ठ साहित्यकार हैं।

ई-मेल : response50123@gmail.com

कृष्णानंद सागर

नमक आंदोलन के दौरान संघ- जेल में और बाहर

कांग्रेस और संघ : एक सिंहावलोकन -27

अकोला जेल में पहुंचने पर डॉक्टर हेडगेवार जी के जत्थे के सत्याग्रहियों को सरकारी नियम के अनुसार 'ब' व 'स' श्रेणी में बांटा गया। इसके लिए सबको जेल के वरिष्ठ अधिकारी फोर्ड के सामने खड़ा किया गया। फोर्ड ने जब देखा कि उनके सामने सत्याग्रही कैदियों में डॉ. हेडगेवार भी खड़े हैं, तो उन्होंने तुरंत डॉक्टर जी को अपने साथ की कुर्सी पर बिठा लिया। सन् 1921 के असहयोग आंदोलन में डॉक्टर जी जब नागपुर जेल में थे, तो उस समय फोर्ड वहां के अधिकारी थे और वहां उनका डॉक्टर जी से घनिष्ठ परिचय हो गया था। फोर्ड आयरिश मूल के थे, इसलिए स्वतंत्रता आंदोलन के प्रति उनकी सहानुभूति थी।

डॉक्टर जी को 'ब' श्रेणी में रखा गया और शेष सबको 'स' श्रेणी में। 'ब' श्रेणी के लिए एक विशाल बैरक निर्धारित की गयी थी, जो एक सौ फुट लम्बी और तीस फुट चौड़ी थी। इस जेल में आए सत्याग्रहियों का क्योंकि यह पहला ही जत्था था, इसलिए डॉक्टर जी 'ब' श्रेणी की इस लम्बी-चौड़ी बैरक में अकेले ही थे। एक सप्ताह बाद दूसरे जत्थे का भी एक सत्याग्रही जब उसमें आया, तब डॉक्टर जी को किसी दूसरे व्यक्ति से बात करने का मौका मिला। तब तक उन्हें एकांतवास में ही रहना पड़ा था। धीरे-धीरे वहां और कैदी भी आते गए। डॉक्टर जी क्योंकि उसमें प्रथम कैदी थे, इसलिए बाद में आ रहे सभी कैदियों का स्वागत करने का अवसर डॉक्टर जी को मिला। प्रत्येक नए आने वाले से वे अपने स्वभाव के अनुसार अच्छी तरह परिचय कर लेते थे।

सरकारी नियम के अनुसार डॉक्टर जी के बाकी साथियों को 'स' श्रेणी में रखना पड़ा था। किंतु जेल अधिकारी फोर्ड को यह अच्छा नहीं लगा था, क्योंकि 'स' श्रेणी काफी कष्टप्रद होती है। इसलिए उसने अकोला के डिप्टी कमिश्नर के पास उनमें से आठ लोगों को 'ब' श्रेणी देने की सिफारिश भेजी। डी.सी. की ओर से उत्तर आया कि यदि संबंधित लोग लिखित में ऐसी प्रार्थना करें, तो विचार किया जा सकता है। इस प्रक्रिया से कुछ लोगों को 'ब' श्रेणी मिल गई।

आप्पाजी जोशी की दृढ़ता

किंतु आप्पाजी जोशी ने ऐसी मांग नहीं की। वे उस समय कांग्रेस के प्रांतीय मंत्री भी थे और कांग्रेस दल की नीति थी कि शासन से किसी भी प्रकार की सुविधाएं न मांगी जाएं। फोर्ड के कई बार कहने के बावजूद वे टस से मस न हुए। एक दिन फोर्ड ने उनको पूछा - ''आप जेल में नेता बन कर आए है या अनुयायी?''

आप्पाजी ने उत्तर दिया- ''अनुयायी।''

''किसके अनुयायी?'' फोर्ड का अगला प्रश्न था।

''डॉक्टर हेडगेवार जी के''। आप्पाजी का सीधा सा उत्तर था।

''तो फिर डॉक्टर जो कहेंगे, वह करेंगे न?''

''हां, लेकिन वे मुझे ऐसा कुछ करने के लिए कहेंगे ही नहीं।''

''वह मैं देख लूंगा।''- फोर्ड ने कहा।

इसके कुछ दिन बाद फोर्ड ने आप्पाजी को डॉक्टर जी से मिलने के लिए उनकी बैरक में भेज दिया। आप्पाजी ने डॉक्टर जी से कहा - ''फोर्ड कई दिन से मेरे ऊपर जोर डाल रहा है कि मैं 'ब' श्रेणी के लिए आवेदन लिख दूं। इस विषय में मैं आपका मत जान सकूं, इसके लिए उसने मुझे यहां भेजा है।''

डॉक्टर जी ने उनसे कहा—''आप कांग्रेस के मंत्री हैं, अत: इस बारे में जो भी तय करना हो वह आप ही करें। आप गांधीवादी तो हैं नहीं, इसलिए आवेदन करने से कुछ बिगड़ेगा भी नहीं। परंतु जिस आंदोलन में आप यहां आए हैं, उसकी प्रतिष्ठा की रक्षा भी आपको करनी चाहिए। कांग्रेस के प्रांतीय मंत्री होने के नाते आप स्वयं ही इसका निश्चय करें। जो आप निश्चय करें, वही 'मैंने बताया है', ऐसा मैं फोर्ड से कह दूंगा।''

डॉक्टर जी व्यक्तिगत संबंधों के आवेग में नहीं बहे। न ही वे नेता और अनुयायी की भूमिका में आए। अत: उन्होंने इसका निर्णय स्वयं आप्पाजी पर ही छोड़ दिया।

इस भेंट के बाद आप्पाजी ने 'ब' श्रेणी की मांग करने से दृढ़तापूर्वक इंकार कर दिया। इस से फोर्ड चिढ़ गया और उन्हें झुकाने के लिए उसने सजा के तौर पर उन्हें काफी कठिन काम देने शुरू कर दिए। परिणामस्वरुप उनका स्वास्थ्य गिरने लगा और एक दिन वे बेहोश होकर गिर पड़े। इसके बावजूद डगमगाए नहीं। उनकी इस दृढ़ता को देखकर फोर्ड ने भी हार मान ली और एक दिन उसने स्वयं ही उन्हें 'ब' श्रेणी में भेज दिया।

आप्पाजी जोशी इस सत्व-परीक्षा में सफल हुए, यह देख डॉक्टर जी को अत्यंत आनंद हुआ। यही आप्पाजी बाद में संघ के सरकार्यवाह भी रहे।

जेल में पहुंचे सभी सत्याग्रही कैदियों से डॉक्टर हेडगेवार जी ने अत्यंत निकटता के संबंध बना लिए थे। साथ ही उन्हें धीरे-धीरे वे संघ-विचार से भी अवगत कराते रहे। 'भारत प्राचीनकाल से ही मूलत: हिन्दू राष्ट्र है', 'राष्ट्र और देश में क्या अंतर होता है', 'स्वराज्य और स्वातंत्र्य में क्या अंतर है', 'पूर्ण स्वातंत्र्य के लिए हिन्दू-संगठन आवश्यक है' आदि विषयों पर वे सबसे मुक्तकण्ठ से चर्चा करते थे। इन सब चर्चाओं में से उन्होंने जो नवनीत निकाला

वह यह कि ''हिन्दू संगठन केवल नारों या आंदोलनों से होने वाला नहीं। इसके लिए चाहिए नित्य प्रति के संस्कार। नित्यप्रति के संस्कारों के लिए आवश्यक है नित्य संपर्क। नित्य संपर्क व नित्य संस्कार का माध्यम है संघ शाखा।''

इस प्रकार उनमें से अधिकांश सत्याग्रहियों की समझ में यह बात आ गई कि 'सत्याग्रह करके जेल जाना' यह केवल एक नैमित्तिक कार्य है, स्थायी कार्य नहीं। कुछ दिन के लिए जेल में चले जाने से स्वतंत्रता प्राप्त होने वाली नहीं, उसके लिए तो निरंतर व नित्यप्रति कार्य करते रहने की आवश्यकता है। संघ कार्य नित्य प्रति का कार्य है। इसलिए स्वातंत्र्य प्राप्ति के लिए संघ मार्ग ही वास्तविक मार्ग है।

इस प्रकार की मनोभूमि का अनेक साथी कैदियों की बन जाने के बाद डॉक्टर जी ने नित्य प्रात: सबको संघ की पद्धति से खड़ा करके प्रार्थना करना आरंभ किया। प्रार्थना का यह क्रम विजयादशमी के दिन से ही शुरु किया गया, यानी जेल में पहुंचने के लगभग तीन महीने बाद।

तो क्या केवल डॉक्टर जी व उनके साथ के 11 ही संघ कार्यकर्ताओं ने सत्याग्रह किया था? नहीं, उनसे पहले भी कई स्वयंसेवक डॉक्टर जी से अनुमति लेकर सत्याग्रह में जा चुके थे। डॉक्टर जी के जाने के कुछ दिन बाद सरसेनापति मार्तण्डराव जोग भी सत्याग्रह में कूद पड़े। नागपुर के जिला संघचालक आप्पाजी हलदे को तो कांग्रेस ने सत्याग्रह का डिक्टेटर ही नियुक्त कर दिया। चिमूर में सत्याग्रह करने के लिए नागपुर से दो स्वयंसेवक-रामभाऊ बखरे और विट्ठलराव गाडगे गए। जाने से पूर्व नागपुर शाखा में उनका विधिवत् विदाई कार्यक्रम हुआ। चिमूर में सत्याग्रह के समय चिमूर शाखा के दस-पंद्रह और भी स्वयंसेवक पकड़े गए, जिसके कारण वहां कुछ दिन शाखा भी कठिनाई से ही लग पायी थी। मेहकर से दो संघ कार्यकर्ता- राजेश्वरराव देशमुख तथा दादासाहब सोमण - 18 अगस्त को सत्याग्रह करके अकोला जेल ही पहुंचे। उन्हें भी 'ब' श्रेणी की ही बैरक में रखा गया। राजेश्वर देशमुख ने बाद में लिखा - ''...श्रावण के कृष्ण पक्ष का सोमवार था। उस दिन मेरे जीवन का अत्यंत महत्व का क्षण आया। जाते ही सामने मेरे परम पूज्य सरसंघचालक डॉ. केशवराव हेडगेवार बैठे दिखे। (मैंने) एकदम 'दक्ष' में आकर प्रणाम किया। डॉ. ठोसर वहां उपस्थित थे। उन्होंने मेरा और दादासाहब सोमण का परिचय डॉक्टर जी से कराया। पहले का परिचय याद कर उन्हें अत्यंत आनंद हुआ। उन्होंने एकदम कसकर हमारा आलिंगन किया और मेहकर की संघशाखा का हाल एवं कुशल-क्षेम पूछा।...'' (डॉ. हेडगेवार चरित्र, पृष्ठ - 230)

उपरोक्त कथन से यह भी स्वयं ही सिद्ध हो जाता है कि डॉ. ठोसर भी संघ कार्यकर्ता थे।

संघ का सुश्रुषा पथक

सत्याग्रह से पूर्व मई 1930 में नागपुर में एक मास का अधिकारी शिक्षण वर्ग लगा था। उसी वर्ग के समय डॉक्टर जी ने एक 'सुश्रुषा पथक' आरंभ करने की योजना बनायी थी और उसे क्रियान्वित भी किया था। इसके अनुसार नागपुर में एक सौ स्वयंसेवकों को प्रथमोपचार (फर्स्ट एड) की शिक्षा दी गई थी।

सुश्रुषा पथक के ये स्वयंसेवक पूरे सत्याग्रह-काल में सफेद कमीज पहनकर और बाजू पर 'स्वस्तिक चिन्ह' लगा कर प्रत्येक शोभा यात्रा के साथ चलते थे और सभी प्रमुख कार्यक्रमों में भी उपस्थित रहते थे। पुलिस द्वारा लाठी-प्रहार से घायल व्यक्तियों की मरहम-पट्टी तथा बेहोश होकर गिर जाने वालों को पुन: होश में लाने का काम ये स्वयंसेवक तुरंत वहीं पर कर देते थे।

9 सितंबर को कुछ सत्याग्रहियों को बेंत लगाने की अमानुशिक सजा दी गई। बेंत लगाने पर खाल उधड़ जाती थी और खून बहने लगता था। तो भी वे सत्याग्रही इस यातना को हंसते-हंसते सहन कर गए। बाद में संघ स्वयंसेवकों ने उनके गले में पुष्पमालाएं पहनाकर उनका जुलूस निकाला। पश्चात उन सबकी चिकित्सा व्यवस्था तत्कालीन सरसंघचालक डॉ. परांजपे ने स्वयं अपने दवाखाने में ही की।

इससे पूर्व 8 अगस्त को 'गढ़वाल दिवस' था। सरकार ने उस दिन नागपुर में धारा 144 लगा दी। इसके बावजूद जुलूस निकला और जगह-जगह पुलिस से लोगों की भिड़ंत होती रही। फलत: उस दिन सुश्रुषा पथक को दोपहर एक बजे से रात्रि के एक बजे तक काम करना पड़ा।

इस प्रकार संघ भले ही आधिकारिक रूप से इस आंदोलन में सम्मिलित नहीं था, किंतु व्यावहारिक रूप में वह इसमें पूरा समाया हुआ था। पुलिस की पूरी नजर संघ पर थी। कई बार यह भी अफवाह उड़ती थी कि पुलिस संघ कार्यालय की तलाशी के लिए छापा मारने वाली है। अत: कार्यालय से सब कागज-पत्र आदि हटा दिए गए। किंतु स्वयंसेवकों का वहां आना-जाना लगा रहता था। तत्कालीन स्थिति के अनुसार कार्यालय में उपस्थित स्वयंसेवक चरखा

शेष पृष्ठ 37 पर

आचार्य चाणक्य की ये बातें- आज भी हैं बड़े काम की

एमेश जैन

अत्यधिक लाड-प्यार से पुत्र और शिष्य गुणहीन हो जाते हैं और ताडना से गुणी हो जाते हैं। भाव यही है कि शिष्य और पुत्र को यदि ताडना का भय रहेगा तो वे गलत मार्ग पर नहीं जाएंगे। माता-पिता और गुरू की ताडना के पीछे पुत्र और शिष्य को ऊपर उठाने की भावना रहती है। वे उसे शारीरिक कष्ट नही देना चाहते। यदि वे ऐसा करते भी हैं तो भीतर से उनका कोमल हृदय दु:खी होता है। माता-पिता और गुरू की मार-पिटाई के पीछे बच्चे का भविष्य छिपा होता है। यदि वे उसे अधिक लाड-प्यार करें तो वह ढीठ होकर बिगड जाता है। इसलिए उन्हें डांटना-फटकारना उनकी भलाई के लिए ही होता है। अगले श्लोक में आचार्य चाणक्य ने शिक्षा के महत्व को दर्शाया है। उनका कहना है कि मानव-जीवन सभी जीवों में श्रेष्ठ है इसीलिए मनुष्य को अपना जीवन सफल बनाने के लिए अध्ययन, दूसरों की भलाई अथवा दान अवश्य करना चाहिए। उन्होने यह भी कहा है कि जीवन का एक नियम बना लेना चाहिए कि प्रतिदिन चाहे हम आधा अक्षर ही पढें, पर पढें जरूर। स्वाध्याय से ही ज्ञान प्राप्त होता है और ज्ञान से ईश्वर की प्राप्ति होती है। शिक्षा से ही लोक-व्यवहार का रहस्य प्रकट होता है।

लेखक नवभारत टाइम्स में कार्यरत हैं।

शैलेन्द्र कुमार सिंह

जी-7 ने छेड़ा राग चीन को मिर्ची लगी तो भारत क्या करे

कोरोना काल के प्रथम जी-7 शिखर सम्मेलन में जी-7 के राष्ट्रों ने बी3डब्लू की परियोजना को प्रस्तावित कर अगली महा शक्ति बनने की धुन में मदमस्त चीन और भविष्य की महाशक्ति भारत के बीच आर-पार की ऐसी लकीर खिंची है जहाँ से भारत स्वर्ण युग की वापसी के आसपास दिख रहा है और वैसे में अगर चीन को मिर्ची लगे तो भला भारत क्या करे।

2019 तक भूमंडलीकरण, उदारीकरण एवं निजीकरण के उत्कृष्ट दौर में इतराने एवं इठलाने वाली विश्व व्यवस्था, 2020 में कोविड जैसी सर्वव्यापी महामारी से आहत होकर 2021 आते-आते औचक वियुक्त मानवीय सभ्यता के रूप में रूपांतरित होती दिख रही थी। अब तक की तमाम महामारियों में से अपनी कृत्रिम प्रकृति के कारण कोविड सबसे अधिक विध्वंसकारी साबित हो रहा था क्योंकि यह 21वीं सदी को प्रौढ़ावस्था में ही पंगु बना रहा था और खतरे में थी सम्पूर्ण मानवीय सभ्यता। इसी बीच जी-7 से ऐसे संदेशे आते हैं जो चीन को तड़पाते हैं।

पहली बार जी-7 के अधिकांश मुद्दों में चीन प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से केंद्र में रहा, लेकिन अपनी नेकी के लिए नहीं बल्कि बदनीयती के चलते इस सम्मेलन में विकसीत देशों ने एक ओर जहाँ चीन की चौतरफा घेराबंदी की, वहीं दूसरी ओर भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित कर पूरे विश्व को दो-टूक संदेश देने की कोशिश की है कि भारत के लिए यह दौर दरअसल गोल्डन एरा रिटर्न का है। आज समय का पहिया घूमा है, पीछे छूट गयी है नकारात्मक छवि और सोच और भारत पर टिकी है विश्व की निगाहें। हमें ढूँढना होगा सार्थक उत्तर : क्या सचमुच आज का भारत स्वर्णकाल की दहलीज पर खड़ा है? आज भारत एक मृदु विश्व महाशक्ति के रूप में सम्पूर्ण युयुत्सा के साथ बुलंदी पर है और कोरोना की विश्वव्यापी त्रासदी से स्व एवं अन्य को उबारने में नैतिक जिम्मेदारी और शिष्ट आचरण के साथ पूरे विश्व के लिए संकटमोचन बनकर उभरा है। शायद ऐसी ही अदृश्य शक्ति से साक्षात्कार ब्राजील के राष्ट्रपति जेयर वोलसोनारो को हुआ होगा जिन्होंने भारत के प्रति अपनी कृतज्ञता जताने के लिए हनुमान की तस्वीर साझा की थी।

दरअसल चीन जी-7 से तिलमिला उठा है, क्योंकि विश्व के ताकतवर देशों ने भारत एवं क्वाड के अन्य देशों के साथ हाथ बढ़ाकर नई वैश्विक गोलबंदी की शुरुआत की है और इसके खिलाफ एकजुटता का आवाह्न भी किया है। इसी दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने चीन की बेल्ट एंड रोड परियोजना के मुकाबले उच्च गुणवत्ता वाला बी3डब्लू (बिल्ड बैक बेटर वर्ल्ड) प्रस्ताव रखा है जो शक्ल से दरअसल भारत बनाम विश्व व्यवस्था का ही प्रतिरूप है क्योंकि इस कवायद में भारत प्रमुख किरदार और भागीदार के रूप में उभरेगा।

पश्चिमी राजनीतिक गलियारों में लंबे अरसे से वैश्विक स्तर पर चीन के विकल्प का इंतजार था जो आज उन्हें भारत के रूप में स्पष्ट दिखाई दे रहा है क्योंकि ये दोनों अपनी वृहत्तम ऐतिहासिक और भौगोलिक सीमाओं और परिस्थितियों में कमोवेश समानांतर सभ्यताएं थीं। प्रथम सदी से लेकर अठारहवीं सदी तक भारत और चीन विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाएं थी।

एंगस मैडिसन के आंकड़ों के अनुसार 1000 ईस्वी में विश्व की अर्थव्यवस्था में भारत और चीन की कुल हिस्सेदारी 50.5 प्रतिशत थी जो 1600 ईस्वी में 51.4 प्रतिशत से भी अधिक हो गयी थी। रोचक तो यह भी है कि 1700 ईस्वी में विश्व की अर्थव्यवस्था में भारत की हिस्सेदारी चीन से आगे निकलते हुए 24.4 प्रतिशत हो गयी थी। क्या ग्लोबल टाइम्स इस सच्चाई को झुठला सकता है? संभव है क्योंकि साम्यवादी चीन भारत के साथ अपना रिश्ता 1962 के युद्ध से जोड़ता है। अगर वहाँ के साम्यवादियों को किसी अन्य पर विश्वास नहीं होता तो अपने ही महान अन्वेषक, भाषावैज्ञानिक, उपन्यासकार, दार्शनिक, अनुवादक एवं अपने दौर के सबसे प्रभावशाली एवं चर्चित लेखक लिन युथांग की संपादित किताब 'द विज्डम ऑफ चीन एंड इंडिया' में उद्धृत इस कथन को स्वीकार कर लेना चाहिए: 'कल्पनाशील साहित्य एवं धर्म में भारत चीन का गुरू था—एवं त्रिकोणमिति, समीकरण, व्याकरण, ध्वनि विज्ञान, दंतकथाओं, सतरंज, दर्शन में पूरे विश्व का'।

उत्तर कोविड के दौर में चीन में न तो मृदु शक्ति बनने की इच्छाशक्ति है और न तो कठोर शक्ति बनने लायक है—सच तो यह है कि यह एक ऐसी संदिग्ध महाशक्ति के रूप में उभरा है जिससे मानव जाति को ही खतरा है। ज्ञातव्य हो कि भारत का ऐतिहासिक सौन्दर्य पराकाष्ठाओं में छिपा है। विश्व में शायद ही ऐसा कोई देश है जिसने भारत की तरह इतिहास के अच्छे और बुरे पलों के मिश्रित रूपों को भोगा और सहा है। इतिहास साक्षी है कि भारत ने अपने निरंतर इतिहास में स्वर्णिम युग के कई काल खंडों को सँजोया है।

तीसरी से छठी सदी का गुप्त साम्राज्य का काल-खंड सर्वोत्तम स्वर्णिम युग का है क्योंकि कला, खगोल शास्त्र, इंजीनियरिंग, साहित्य, तर्क शास्त्र, गणित, पेंटिंग, दर्शनशास्त्र, धर्म के क्षेत्रों में सर्वाधिक प्रगति करते हुए विश्व को शून्य और दशमलव जैसी संकल्पनाएँ दी। फिर भी भारत का स्वर्णिम काल जहाँ एक ओर अन्य के लिए प्रशंसनीय से कहीं अधिक अनुकरणीय है तो वहीं दूसरी ओर स्व को कोसने से कहीं अधिक अशोभनीय है।

गौरतलब है कि कोरोना की त्रासदी से उबरते

और उबारते हुए भारत का एक सुपर पवार के रूप में उभरना 21वीं सदी की सबसे बड़ी ऐतिहासिक घटना होगी। आज हमें अपने आप को समझाना और मनाना होगा कि भारत में चीन से आगे निकलने की वास्तविक सम्भावनाएं हैं। कोविड-19 सर्वव्यापी महामारी में भारत ने जिस कदर पूरे विश्व की अगुआई की है, पश्चिम के विकसित देशों एवं विश्व के अधिकांश देशों को भी यह समझ में आ चुका है कि मानवीय सभ्यता के समावेशी विकास के लिए आज का भारत चीन से बेहतर विकल्प है।

महासंकट की इस घड़ी में आज सम्पूर्ण विश्व आमतौर पर यह मान चुका है कि विश्व का सबसे पुराना और सबसे अधिक जनसंख्या वाला प्रजातंत्र भारत ने मानवीय इतिहास के जटिलतम संकट से उबरने में अपनी परंपरागत छवि के अनुरूप सकारात्मक भूमिका निभायी है। इस महामारी के दौर में जहाँ एक ओर विकसित देशों में अपनी असफलता के प्रति झल्लाहट और सन्नाटा दिख रहा है, वहीं दूसरी ओर भारत ने अंतरराष्ट्रीय दिलों को जीतने में सफलता प्राप्त की है। यह है नया भारत, जिसने कोरोना की पहली लहर में 25 देशों को हाइड्रोक्लोरोकूईन, 31 देशों को पारासिटामोल की गोलियां सहायता के रूप में प्रदान करते हुए माँग के अनुरूप 85 देशों को इन दोनों दवाइयों की पूर्ति की है, वहीं दूसरी ओर कोरोना की दूसरी लहर में इसने 69 देशों में कोरोना वैक्सीन की 583 लाख डोज दीं जिसमें खुशखबरी की बात यह भी है कि 79.75 डोज मैत्री के तहत मित्रवत देशों में फ्री में पहुँचाई गयी है। एक ओर चीन ने जहाँ सम्पूर्ण मानव जाति को असहनीय पीड़ा दी है, वहीं भारत ने सम्पूर्ण मानव जाति के लिए सहज स्वदेशी दवा देने का कार्य किया है जिसकी पूरी दुनिया में धूम है। सच तो यह है कि स्वातंत्र्योत्तर भारत पहली बार अपने उस शिखर पर पहुँचा है, जहाँ इसकी विरासत वास करती है।

यही अवसर है स्वर्ण युग की वापसी का, जिसकी तैयारी नरेंद्र मोदी जी आत्मनिर्भर भारत के संकल्प से कर रहे है। याद दिलाना आवश्यक है कि स्वप्न देखना आसान है, साकार करना मुश्किल है, परंतु असंभव को विचार और कर्म की कटिबद्धता से संभव में अनूदित किया जा सकता है। इतिहास के इस मोड़ पर जहाँ सभ्यताएं करवट ले रही है, उस समय युवाओं से भरी-पड़ी 1.3 बिलियन आबादी वाले देश को मोदी का नेतृत्व मिलना, यह सुनिश्चित करता है कि 21वीं सदी आम एशिया की नहीं, बल्कि भारत की होगी। सुनहरे भारत की नींव रखी जा चुकी है, जिसे सुदृढ़ करने के लिए हर भारतीय को अपने-आप में यस वी कैन का आत्म-विश्वास जगाना होगा। बदलते भारत के लिए स्वर्ण-युग की वापसी न तो राजनीतिक उद्घोष है और न तो जुमला, बल्कि अपने बीते सुनहरे इतिहास को 21वीं सदी में साकार करने का जुगाड़ क्योंकि पश्चिम अब पस्त है, चीन से सभी त्रस्त है और भारत सबसे सशक्त है। पंडेमिक्स में भारत ने एक दयावान लोकतंत्र की छवि हासिल करने में कामयाबी हासिल की है। नतीजतन, सॉफ्ट पावर की हैसियत से देश ने अपनी उपस्थिति वहाँ भी दर्ज करने में सफलता प्राप्त की है, जहाँ अभी तक इसे नजरअंदाज किया जाता रहा है। पश्चिम अब भारत की प्रशंसा में जुटा है क्योंकि यह विश्वसनीय है। पश्चिमी बौद्धिक जगत ने भारत की सबसे अधिक प्रशंसा तब की थी जब उन्हें संस्कृत में उपलब्ध साहित्य, दर्शन, व्याकरण और ध्वनि विज्ञान का पता चला। उत्तर-कोरोना विश्व व्यवस्था में भारत की सफलता इस बात पर निर्भर करेगी कि यह आखिर वर्तमान में विकास की गति को त्वरित करने और भूत के योगदान को मेक इन इंडिया और मेड इन इंडिया के यथार्थ से किस कदर ताल में ताल मिला पाता है। आए, भारत की सक्रिय भागीदारी और सर्वहितैषी नेतृत्व से एक ऐसी वैकल्पिक विश्वव्यवस्था की नींव रखें जिसमें कोई भी उत्पाती देश कोविड-19 जैसी सर्वव्यापी महामारी उत्पन्न करने के लिए पुन: उत्साहित न हो। यही चिट्ठी आयी है, दिल के पास से और बॉर्डर के उस पार से भी।

लेखक पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग में भाषा विज्ञान विभाग के प्रोफेसर हैं।
ई-मेल : response50123@gmail.com

श्रद्धांजलि

मॉरीशस में रामभक्ति जगाने वाले राजेंद्र अरुण का निधन

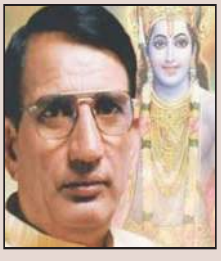

भारत ही नहीं विदेशों में भी राम भक्त लाखों की संख्या में हैं। हमारे देश से निकले महान रामभक्त भी वहां का वातावरण राममय कर रहे हैं। ऐसे ही एक कर्मठ व्यक्तित्व राजेंद्र अरुण का 21 जून 2021 को देहांत हो गया। मॉरीशस में रामायण सेंटर के लिये भूमि आवंटन से लेकर उसके निर्माण तक अपना सक्रिय सहयोग देने वाले श्री अरुण रामभक्ति के लिये देश-विदेश में जाने-जाते थे। यह भी आश्चर्य ही था कि विश्व में पहली बार किसी विदेशी सरकार ने राम के नाम पर अपनी संसद में सर्वसम्मति से भूखंड देने का निर्णय लिया था, जो वर्तमान में एक श्रेष्ठ उदाहरण है। 1973 में मॉरीशस आने के बाद उन्होंने एमबीसी रेडियो पर रामायण पर आधारित साप्ताहिक कार्यक्रम मंथन शुरु किया, जो बाद में मानस मंथन के नाम से प्रसिद्ध हुआ। तब से शुरु हुआ राम भक्ति का क्रम उनके देहांत तक जारी रहा। समय-समय पर श्री अरुण भारत भी आते रहते थे। ऐसे रामभक्त एवं स्वनाम धन्य राजेंद्र अरुण के जाने पर उनके प्रशंसकों में शोक की लहर है। चाणक्य वार्ता परिवार उन्हें शत-शत नमन करते हुये अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

हिमाचल प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह का देहांत

23 जून 1934 को शिमला में जन्मे वीरभद्र सिंह का लंबा राजनीतिक इतिहास रहा है। इंदिरा गांधी के समय राजनीति में आये श्री सिंह छ: बार हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे। वे सबसे पहले 1976 में केंद्रीय पर्यटन और नागरिक उड्डयन मंत्रालय के मंत्री रहे। 1982 में उन्हें केंद्रीय उद्योग मंत्री भी बनाया गया। इसके अतिरिक्त डॉ. मनमोहन सिंह के प्रधानमंत्री काल में उन्हें केंद्रीय इस्पात मंत्री की जिम्मेदारी भी दी गयी थी। इस प्रकार लगभग 5 दशक तक हिमाचल प्रदेश का नेतृत्व करने के बाद कांग्रेस के वरिष्ठ नेता वीरभद्र सिंह का कोरोना से दो बार ठीक हो जाने के बाद भी 8 जुलाई 2021 को निधन हो गया। चाणक्य वार्ता परिवार उनके निधन पर उनको अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

गलती

राजेन्द्र प्रसाद

इंसान गलती का पुतला है
मान ले तो सुधरता है
न माने तो अड़ियल-जिद्दी है
मान अपना तब खोता है।

जब हो गलती सीधी-सीधी
मानने में तब क्या घटता है
भविष्य निखराव का है
कुतर्क से बना बिगड़ता है।

गलती को सही न समझें
सही को और निखारें
जब पकड़ में आती है
फिर बेशर्मी छा जाती है।

गलती स्वीकारना है झाड़ू समान
कूड़ा-कबाड़ सब हट जाता है
कबाड़ा होने से भी बच जाता है
शान का दायरा बढ़ जाता है।

गलती में पछतावा अच्छा है
पर सोचने का ढंग भी बदलना है
सबक तब ज्यादा वजनदार है
जब फिर से न दोहराई जाए।

गलती मिलने पर जो बिदकते हैं
सीख कभी न वे ले पाते हैं
गलतियों का भंडार भरकर
जीवन को नरक बना जाते हैं।

गलती पर गलती की तह जमा
जिंदगी में हिमालय खड़ा कर
सवाल खुद ऐसा बन जाते हैं
मीत किसी का न बन पाते हैं।

आधा सुन, चौथाई समझते
शून्य सोच प्रतिक्रिया ढेर कर जाते हैं
खुद ढेर होने से तब कब बच पाते हैं

दांव-पेंच में खुद को खो जाते हैं।
औरों की गलती खूब मिलती है
पर नहीं मिलती तो अपनी गलती
निकालने के लिए भेजा चाहिए
पर अपनी मानने में कलेजा चाहिए।

कवि वित्त मंत्रालय दिल्ली में कार्यरत हैं।

झुलस रहा सत्य देश में

ज्ञानीचोर

झुलस रहा सत्य देश में
घुट रही साँसें प्रजातंत्र की
चढ़ती ग्लुकोज मँहगाई की
खा रहा सुई भूख मिटने की
आखिर! मैं जिंदा जो हूँ।
रोजगार की लात की ठोकर
मार रहे प्रजातंत्र के सीने पर
आँसू बहते टूटी पीठ से
डिग रही लाठी प्रजातंत्र की
ठप्प तंत्र पर ठप्पों पर ठप्पें।
सीना तान खड़े लूटेरे चौराहे
सत्ता के झूले लटते अपराध
फिर भी लोकतंत्र मजबूत
आज आदमी मुर्दाघर में बैठा
देता दुहाई लोकतंत्र की पहले।
एक टाँग का प्रजातंत्र
नेताओं की बैशाखी पर
धूल फाँकते दफ्तर फाईल
मर गया जीवन चक्कर लगाते
आखिर! यही लोकतंत्र फायदा!

कवि सीकर राजस्थान के साहित्यकार एवं शोधार्थी हैं।

बातों का विस्तार

अवनीश त्रिपाठी

कंकरीट के जंगल
में अब
हर छप्पर लाचार।
थाम नहीं पाई बारिश में
टूट गई है थून
लेखपाल बोले बुधुआ से
रगड़ो सुर्ती चून
अबकी बार तुम्हें
कलोनी
दे देगी सरकार।
दिन कटते हैं तामझाम में
अंदेशे में रात
नहीं सुधरते लेकिन अब भी
मौसम के हालात
टूटी खपरैलों के
कारण
सिसक रही दीवार।
राजनीति में माहिर सारे
घाघ हुए परधान
नल,कलोनी,सोलर लाइट
अपनी अपना मान
बचा खुचा है अब तो
केवल
बातों का विस्तार।

कवि सुलतानपुर उ.प्र. के वरिष्ठ साहित्यकार हैं।

युवा

सूर्यदीप कुशवाहा

युवा सोच युवा जोश,
जिधर चलें रखें होश।
इतिहास बदल जाता,
युवा जिधर मुड़ जाता।
अकेले वह अंगुली सा होता ,
जब साथ कई मुट्ठी बन जाता।
युवा भटके नहीं राह से कभी,
गाठ बांध कर याद रखें सभी।
अपने हौसले के दम पर ही,
वह जीत की इबारत लिखता।
सच की राह काँटों भरी अगर,
पर चमकोगे सूर्य की तरह मगर।

कवि हिंदी अकादमी मुंबई से सम्मानित नवयुवा रचनाकार हैं।

सही वक़्त है अभी मना लो...

संजीव शर्मा

गरीब के लिए कोई द्वार न था,
अमीर ने सारे दरवाजों पर ताले लगा दिए थे,
और चाबियाँ अपने पास रख ली थीं।
द्वार के बाहर गरीब अन्दर जाने की कोशिश करता था,
एड़ियाँ रगड़ता था, सौ बार मरता था।
ऐसी इस अवस्था पर देश की व्यवस्था पर क्या बोलूं,
किससे बोलूं, चुप भी नहीं रहा जाता।
जिनको सुनना है, वो भी अमीरों के कब्ज़े में हैं,
गरीब के हिस्से में, सिर्फ बेबसी है, ख़ुदकुशी है, तकलीफ है, परेशानी है।
मन को समझाता हूँ, ऊपरवाले की नादानी है,
नए युग के मानव को फैसला करना है।
पूंजीवाद और एकात्ममानववाद को लड़ना है,
अमीर को जबाबदार बनना है, आम आदमी का हिसाब करना है।
कोशिश का हथियार लेकर, द्वार के बाहर ये कितने दिन बैठेगा,
तनाव में अन्दर आया तो सबपर एंठेगा।
आखिर को देखने में तो, यह भी अमीर सा लगता है,
एक सा सोता है, एक सा जागता है।
हवा पर इसका भी समान अधिकार है,
सूरज इसके लिए भी समान रूप से उगता है।
जल्दी करो, इसे अन्दर बुला लो...
वक़्त है अभी मनालो...

कवि युवा चिन्तक हैं।

देवेन्द्र दीपक जी

रामस्वरूप दीक्षित

बूढ़ा बरगद
घर है
न जाने कितनी चिड़ियों का
शाम से ही
हो जाता चिंतित
अभी कौन-कौन रह गया आने को
रात भर जागकर
करता है रखवाली
हवा
मत बहो इतना तेज
कि खड़क उठें
मेरे पत्ते
और जाग जाएं
सोती हुई चिड़ियाएं
सो लेने दो
उन्हें नींद भर
आ जाने दो ताकत
उनके पंखों में
कल दिन भर उड़ने लायक
देर रात
खांसी उठने पर
बरामदे में जाकर
खाँसता है
एक बुजुर्ग
कहीं उठ न जाये
दिन भर का
थका हुआ बेटा
बीमार पत्नी
पोते के साथ सोई बहू
बूढ़ा पहाड़
अब भी करता है
उतना ही प्यार
अपने पेड़ों से
पुराने पेड़ों से बतियाते
साझा करता है
नए पौधों की परवरिश की चिंता
सड़क पर
लाठी टेकता
टहल रहा
वो लाठी के ही इशारे से
बता देता है
सही रास्ता
किसी भटके हुए
नौजवान को
अपनी झुर्रियों में समेटे हुए
उम्र के अनुभव की थाती
पीले पड़ गए
जगह जगह से चटके हुए से
कुछ जरूरी पन्ने
आज भी जोह रहे
अपने पढ़े जाने की राह

कवि टीकमगढ़, म.प्र. के वरिष्ठ साहित्यकार हैं।

सावन की रितु आई

बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

बरसे बदरा झम झम झम
सावन की रितु आई।
गोरी को अपने साजन की
याद बहुत सताई।

रिमझिम रिमझिम बरसातो
में
भीग रहा तन मन।
गोरी का देखो कैसे
तरस रहा है यौवन।

कू कू कर कोयलिया
मन में आग लगाए।
तन्हाई में बिन साजन के
कुछ भी ना मन भाए।

वन में नाच रहा है आज
देखो कैसे मोर।
ऐसे में कब आओगे
वो मेरे चितचोर।

फूल सी यह जवानी
आजा तुम्हें बुला रही है।
अपनी खुश्बू हाथों से
तुम पर लुटा रही है।

कवि गोरखपुर के वरिष्ठ साहित्यकार हैं।

धर्मपाल महेंद्र जैन

दिमाग अपना हो या दूसरों का

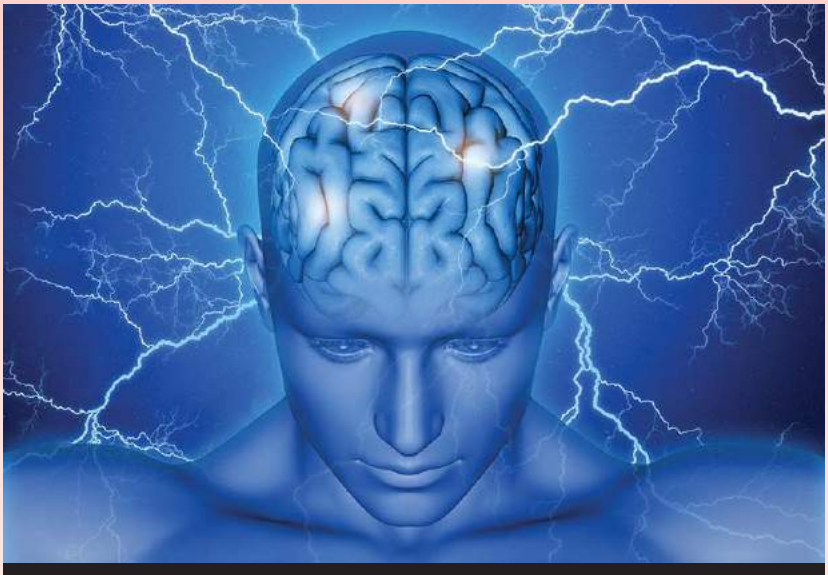

मैं डाक्टर नहीं हूँ पर दिमाग के बारे में पढ़ता रहता हूँ। जो अपने पास नहीं हो उसके बारे में विस्तृत जानकारी रखनी चाहिए। इतनी आलतू-फालतू चीजों के बारे में विशेषज्ञ हूँ। कभी-कभी फालतू चीजें भी काम की निकल आती हैं। दिमाग के बारे में मेरे शिक्षकगण कहा करते थे इसमें भूसा भरा है। पिता निर्णय दे चुके थे कि इसमें गोबर भरा है। 'साहित्य' रचना शुरू किया तो अनपढ़े पाठक कहने लगे कि पेंच ढीला है। संपादकों ने जो कहा वह शिष्ट भाषा में यहाँ लिखना असंभव है। यही वजहें रहीं कि दिमाग के बारे में सही-सही मालूमात की जाए। इच्छा हुई, अपना बोनट खोल कर देख लूँ, कहाँ कट्टा-ढीला करना है, कहाँ कचरा-बगदा हटाना है। कोई मोटर मैकेनिक इसे अच्छी तरह ठोक-पीट कर ठीक कर सकता है। पर मैं डरता हूँ, लेखक का दिमाग वैसे भी कबाड़ से कम नहीं होता। उसका और कबाड़ा कराने से साहित्य अकादमियों को कुछ नया मिलने वाला नहीं है।

सोचा किसी वैज्ञानिक को बता दूँ। कुछ वैज्ञानिकों ने मुझसे पहले दूसरों की खोपड़ियाँ खोलकर देखी थीं। उन्हें दिमाग में बहुत सारी छोटी-छोटी सुरंगें मिली थीं। ऐसी सुरंगें जिनमें घुसकर पाकिस्तानी आतंकवादी कश्मीर की वादियों में घुसपैठ करते हैं। मुझे समझ आ रहा था कि मेरे खाली स्थान में जो बागी विचार आते हैं वे कहाँ से आते हैं। वह तो अच्छा है कि दिमाग में आने वाले हर विचार पर मैं अमल नहीं करता, अन्यथा मेरी तीन-चार सौ प्रेमिकाएँ होतीं और अब तक एक ट्रक में अपनी प्रेम कविताओं की ग्रंथावलियाँ भर कर मैं भारत भवन के सामने खड़ा होता। बहुत हिम्मत करके मैं एक वैज्ञानिक से मिला। वे इतना विस्तार से पूछते हैं जैसे पुलिस वाले पीड़िता से बलात्कार की प्राथमिक रिपोर्ट ले रहे हों। हद तो तब हो गई जब वे मुझे ही ज्ञान देने लग गए। व्यंग्यकार को गाली दे दो तो वह पचा सकता है, पर ज्ञान देने लगो तो उसे अजीर्ण हो जाता है। मुझे समझाते हुए वे बोले कि मनुष्यों का दिमाग चूहों जैसा होता है। दिमागों की तुलना करनी ही थी तो बंदर से कर देते, मेरी भारतीय वंश परंपरा सुदृढ़ हो जाती। चीन वालों की बात अलग है, वे उनके दिमाग की चूहों से लगा कर चमगादड़ तक से तुलना करा सकते हैं।

मैंने जो शोध की है उसके अनुसार दिमाग हाईकमान जैसा होता है। शरीर में कहीं कुछ भी हो जाए, सबसे पहले उसे ही पता चलता है। गुस्सा यदि दिमाग को आए तो भी वह अपनी जगह नहीं छोड़ता। उसके गुप्त संदेश पर दायाँ हाथ उठ कर विपक्षी को ठोक आता है। तत्क्षण, हाईकमान रूपी दिमाग पैरों को आदेश देता है, भागो रे। पैर शताब्दी एक्सप्रेस की तरह बिना रुके दौड़ने लग जाते हैं। वही दिमाग हाथ को शाबाशी देते हुए कहता है अच्छा ठोका। आगे से किसी को ठोकना हो तो हथेली से ठोकने की बजाय कार का दरवाजा भिड़ा देना, सामने वाली की टाँग टूटगी और माथा भी फूटेगा। जो लोग सोचते हैं कि दिमाग घुटनों में होता है, वे सही सोचते हैं। मारपीट कर ऐसे लोग ही सुरक्षित तरीके और द्रुतगति से भाग सकते हैं। जिनका दिमाग केवल ऊपरी हिस्से में होता है वे घायल होने के बाद, रक्त से सने चेहरे वाले अपने फोटो अखबारों में देख रहे होते हैं।

डॉक्टर बताते हैं कि कई लोगों के दिमाग में ज्यादा पानी भर जाता है। ऐसे लोग व्यस्क हो कर भी बुद्धू रह जाते हैं, मंद दिमाग वाले। वे अपनी बुद्धि का मौखिक प्रदर्शन अधिक करते हैं। बेसिर-पैर का बोलते हैं, लोग उन पर हँसे तो वे इसे अपनी प्रशंसा समझते हैं। इस मायावी भ्रम के मारे सृजनपीठ के महाकवि के साथ झोला उठाने वाले खुद को महाकवि समझने लगते हैं, और पदारूढ़ राजनेता के पिछलग्गू हों तो वे राजनेता के घरेलू चप्पल बन जाते हैं। अपना दिमाग आप खुद नहीं खोलें। दिमाग में बहुत सारे तंतु (टिशू) होते हैं जिनकी वायरिंग जटिल होती है। किधर का वायर किधर फिट हो जाए तो बड़े लोचे हो जाते हैं। आपने गौर किया होगा, कुछ लोगों के दिमाग आकार में बड़े पर सोच में छोटे होते हैं। उनकी आसपास की चीजों में रूचि कम होती है। वे सचिवालय से नीचे बात नहीं करते और राजधानी के बाहर नहीं जाते। वे ख्याली पुलाव पकाते हैं कि कब उन्हें सत्ता, भत्ता और पत्ता मिले और वे प्रतिष्ठित घोषित हो जाएँ।

दिमाग के बारे में मैं यह अपार अपने आठ वर्षीय नाती से साझा कर रहा था। उसने किताब खोलकर कहा, नाना इसे पढ़ो— 'वीडियो गेम्स खेलने से दिमाग तेज चलता है। हाथ, पैर और आँखें तालमेल में काम करना सीखते हैं। याददाश्त बढ़ती है। दिमाग कम समय में निर्णय लेना सीखता है।' वह वीडियो गेम्स में मुझे हरा देता है। पाठको, आपके नाती-पोते या बच्चे भी आपको वीडियो गेम्स में पक्का हरा देंगे। इसलिए तेज-तर्रार दिमाग के लिए वीडियो गेम्स खेलिए और हार कर भी खुश रहिए। दिमाग अपना हो या दूसरों का, है ही नहीं तो ताक-झाँक क्या करना!

लेखक वरिष्ठ व्यंग्यकार हैं।
ईमेल : response50123@gmail.com

खबरों में देश-विदेश

■ सोनम जैन

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विश्व को दिया 'वन वर्ल्ड, वन हेल्थ' का संदेश, 142 देशों ने माना कोविन प्लेटफार्म का लोहा

भारत कोरोना महामारी से निपटने के लिए कोविन प्लेटफार्म का प्रयोग कर रहा है। विश्व का सबसे बड़ा वैक्सीनेशन कार्यक्रम इसी प्लेटफार्म की सहायता से चल रहा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कोविन ग्लोबल कांक्लेव को संबोधित करते हुए कोविन प्लेटफार्म को दुनिया के लिए खोलने का ऐलान किया है। इसी के साथ उन्होंने 'वन वर्ल्ड, वन हेल्थ' का नारा दिया। प्रधानमंत्री ने बताया कि किस प्रकार इस प्लेटफार्म का उपयोग करके आसानी से वैक्सीन लगवाने वाले व्यक्ति का वेरिफिकेशन किया जा सकता है और वैक्सीनेशन के बाद उसे डिजिटल सर्टिफिकेट भी प्रदान कर सकते हैं। इसमें व्यक्ति का कोरोनारोधी टीके की पहली व दूसरी डोज से जुड़ा हुआ सभी डाटा संरक्षित रहता है। इस प्लेटफार्म में कोई भी देश अपनी आवश्यकता के अनुसार बदलाव कर सकता है। भारत की ओर से कोविन प्लेटफार्म को दूसरे देशों के लिए उपलब्ध कराने हेतु नरेंद्र मोदी ने इसे डब्ल्यूएचओ के कोविड टेक्नोलॉजी एक्सेस पूल (सी-टीएपी) में शामिल करने का प्रस्ताव रखा है। इस श्रेणी में शामिल होते ही कोविन प्लेटफार्म को दूसरे देशों को उपलब्ध कराना और सरल हो जाएगा। कोविन प्लेटफार्म से जुड़ी तकनीक को समझाने के लिए इस कांक्लेव में अलग से एक सत्र का आयोजन किया गया। इन सारी बातों को सुनने के बाद वियतनाम, साइप्रस, क्रोशिया, जांबिया, मालदीव, मालावी, गुयाना, सिएरा लियोन और लाओ पीडीआर सहित लगभग 142 देशों ने इसमें रुचि दिखाई। इसे भारत की एक बड़ी उपलब्धि माना जा रहा है। वहीं दूसरी ओर यदि वैक्सीनेशन की बात करें तो जल्द ही भारत सरकार रूसी वैक्सीन स्पूतनिक-वी देशवासियों को नि:शुल्क उपलब्ध कराएगी। भारत सरकार की योजना है कि पोलियो अभियान की तरह वैक्सीनेशन के लिए भी गांव-गांव जाकर प्रयास किया जाये, जिससे जो लोग किसी कारण से छूट गए हैं, उनको भी वैक्सीनेट किया जा सके। जहां तक स्पूतनिक-वी का प्रश्न है, तो इसे संरक्षित करने के लिए-18 डिग्री का तापमान चाहिए होता है।

8 राज्यों को मिले नए राज्यपाल, केंद्रीय मंत्री थावरचंद गहलोत को बनाया गया कर्नाटक का राज्यपाल

मोदी सरकार ने अपने दूसरे कार्यकाल के मंत्रिमंडल विस्तार से पहले 4 नए राज्यपालों की नियुक्ति की, वही 4 राज्यपालों के राज्य बदले गए। इस प्रकार 8 राज्यों को नए राज्यपाल मिले। राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की मंजूरी के बाद केंद्रीय मंत्री थावरचंद गहलोत को कर्नाटक का राज्यपाल बनाया गया है। गहलोत अभी तक राज्यसभा सदस्य और केंद्र सरकार में मंत्री थे, इसलिए उन्होंने भारत सरकार से त्यागपत्र दे दिया और अपनी राज्यसभा सीट भी छोड़ दी। इसके अलावा आंध्र प्रदेश के वरिष्ठ नेता डॉ. हरि बाबू कंभमपति को मिजोरम का राज्यपाल बनाया गया है। गुजरात के वरिष्ठ नेता मंगू भाई छगन भाई पटेल मध्य प्रदेश के राज्यपाल बनाये गये है। गोवा के पूर्व विधानसभा अध्यक्ष राजेंद्र विश्वनाथ आर्लेकर को हिमाचल प्रदेश का राज्यपाल बनाया गया है। मिजोरम के राज्यपाल पीएस श्रीधरन पिल्लई को गोवा का राज्यपाल बनाया गया है। हरियाणा के राज्यपाल सत्यदेव नारायण आर्य को त्रिपुरा का राज्यपाल बनाया गया है। त्रिपुरा के राज्यपाल रमेश बैस को झारखंड का राज्यपाल बनाया गया है। हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय को हरियाणा का राज्यपाल बनाया गया है। राष्ट्रपति भवन सचिवालय के अनुसार ये सभी नियुक्तियां राज्यपालों के पदभार ग्रहण करने के दिन से प्रभावी मानी जायेंगी।

पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के लिए भी खड़ा हो सकता है संवैधानिक संकट

टीएमसी प्रमुख ममता बनर्जी की पार्टी को पश्चिम बंगाल में भारी बहुमत मिला, लेकिन स्वयं ममता अपनी सीट हार गई। इस कारण अभी वो विधानमंडल की सदस्य नहीं है। मुख्यमंत्री बने रहने के लिये उन्हें 6 महीने के अंदर विधानमंडल की सदस्यता प्राप्त करना अनिवार्य है। फिलहाल विधान परिषद की कोई भी सीट रिक्त नहीं है। इसके अलावा यदि ममता बनर्जी विधान परिषद की सदस्यता प्राप्त कर मुख्यमंत्री पद को संभालती है, तो विपक्ष हमेशा उन पर इसके लिए तंज कसता रहेगा। यही कारण है कि उन्होंने अपनी पारंपरिक विधानसभा सीट भवानीपुर से चुनाव लड़ने के लिये अपने विधायक का इस्तीफा करवा दिया, किंतु वहां चुनाव कराने की जिम्मेदारी चुनाव आयोग की है, यदि आयोग सही समय पर विधानसभा का उपचुनाव नहीं कराता है, तो ऐसी स्थिति में ममता बनर्जी को मुख्यमंत्री पद से हाथ धोना पड़ सकता है। वही चुनाव आयोग ने पश्चिम बंगाल से खाली दो राज्यसभा सीटों और 7 विधानसभा सीटों पर चुनाव करवाने हेतु पश्चिम बंगाल सरकार से जानकारी मांगी है कि क्या कोरोना की स्थिति को देखते हुए वहां चुनाव कराए जा सकते हैं। ममता बनर्जी का कहना है कि चुनाव आयोग तिथि तय करें, यदि प्रचार के लिए 1 सप्ताह का समय भी मिलता है तो उन्हें कोई दिक्कत नहीं है। यहां यह गौर करने वाली बात है कि पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के दौरान ममता बनर्जी ने दो चरणों के बीच प्रचार के लिए कम दिन दिए जाने पर आपत्ति व्यक्त की थी। फिलहाल चुनाव आयोग के सकारात्मक रूप से ऐसा लगता है कि जल्दी ही वह भवानीपुर सहित अन्य खाली विधानसभा सीटों और राज्यसभा सीटों के लिए चुनाव की तारीखों का ऐलान कर देगा।

उत्तर भारत की खबरें

■ विशाल शर्मा/शैलेन्द्र जैन

पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह की हालत स्थिर, जेपी नड्डा और योगी आदित्यनाथ ने अस्पताल जाकर जाना हाल

राजस्थान के पूर्व राज्यपाल व उ.प्र. के पूर्व मुख्यमंत्री कल्याण सिंह की तबीयत बिगड़ जाने के बाद उन्हें लखनऊ के एसजीपीजीआई में भर्ती कराया गया है। कल्याण सिंह पिछले वर्ष कोरोना से संक्रमित भी हो गये थे। इस बार उनके शरीर में सूजन और बेचैनी की समस्या सामने आने के बाद पहले उन्हें उपचार के लिए लखनऊ के आरएमएल अस्पताल में भर्ती कराया गया था। जहां तबीयत और खराब होने के बाद उन्हें एसजीपीजीआई के आईसीयू में भर्ती कराना पड़ा। एसजीपीजीआई के अनुसार वरिष्ठ चिकित्सा विशेषज्ञों का एक पैनल कल्याण सिंह के उपचार पर नजर बनाए हुए है। फिलहाल उनकी स्थिति नियंत्रण में है। हालांकि समाचार लिखे जाने तक कल्याण सिंह आईसीयू में ही भर्ती थे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कल्याण सिंह के स्वास्थ्य के बारे में जानकारी ली, तो वही भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा, राष्ट्रीय महासचिव संगठन बी.एल. संतोष, उ.प्र. के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, उ.प्र. भाजपा के प्रभारी राधा मोहन सिंह आदि वरिष्ठ नेताओं ने अस्पताल जाकर उनके हालचाल लिए। कद्दावर नेता कल्याण सिंह के शीघ्र स्वस्थ होने के लिये उनके क्षेत्र अलीगढ़ और अन्य स्थानों पर पूजा एवं हवन के आयोजन भी किये जा रहे हैं।

हमारे संयम की परीक्षा ना लें आंदोलनकारी किसान : मनोहर लाल

हाल ही में हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने पत्रकारों से बात करते हुये कहा कि आंदोलनकारी किसान हमारे संयम की परीक्षा ना ले। रास्ता रोकना, उपमुख्यमंत्री या विधायक किसी को भी, कहीं भी आने-जाने ना देना, एक सीमा से आगे बढ़कर कुछ भी करना, यह सब गलत है। किसान एक बहुत ही श्रद्धा और आस्था वाला शब्द है। किसी को भी इसे बदनाम करने की अनुमति नहीं दी जा सकती। इस आंदोलन की आड़ में बहन बेटियों की इज्जत से खिलवाड़ हो रहा है, हत्याएं हो रही हैं, स्थानीय लोगों से वाद-विवाद किया जा रहा है। यह सब बहुत गलत है। किसानों को अपनी जिद छोड़ कर केंद्र सरकार से बात करनी चाहिए और बीच का रास्ता निकालना चाहिए। हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने कहा कि किसान आंदोलन के नाम पर किसानों का ही नुकसान नहीं करना चाहिए। हरियाणा सरकार बाजरा, मूंग, कपास, मक्का, चना, दाल और तिलहन खरीद रही है, जिसका सीधा फायदा किसानों को हो रहा है, लेकिन इस आंदोलन के कारण सीमा से जुड़े किसानों का नुकसान किया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने यह भी आरोप लगाया कि पंजाब में प्रस्तावित चुनाव को देखते हुए राजनीतिक मंशा से इस आंदोलन को इतना अधिक बढ़ाया जा रहा है। कृषि कानूनों के विरोध में प्रदर्शन कर रहे भारतीय किसान यूनियन (चढूनी) हरियाणा के अध्यक्ष गुरनाम सह चढूनी ने अपने एक बयान में मुख्यमंत्री मनोहर लाल को पाकिस्तानी कहा। इस पर स्वयं पंजाबी समाज के लोग ही उनसे सहमत नहीं हैं। गुरुग्राम, फरीदाबाद, पलवल और सोनीपत के विभिन्न पंजाबी समुदाय और साथ ही अन्य संगठनों ने गुरनाम सह चढूनी के खिलाफ अपना रोष व्यक्त किया है। कई जगह पर प्रदर्शन किए गए और चढूनी का पुतला भी जलाया गया।

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने किया हिमाचल प्रदेश का दौरा, बढ़ाया कार्यकर्ताओं का उत्साह

हिमाचल प्रदेश में भाजपा कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाने के लिए पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने प्रदेश का दौरा किया और विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लिया। इस दौरान नड्डा अटल टनल देखने गए। उन्होंने श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती पर श्रद्धांजलि भी अर्पित की। इसके अलावा नड्डा अपनी बुआ गंगादेवी से भी मिले। कुल्लू निवासी गंगा देवी 103 वर्ष की हैं। दरअसल हिमाचल

प्रदेश की मंडी संसदीय सीट और फतेहपुर व जुब्बल, कोटखाई विधानसभा सीटों पर जल्द ही उपचुनाव होने हैं। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष का दौरा इसी को ध्यान में रखते हुए हुआ है। जेपी नड्डा अपने अध्ययन के समय के मित्र जुगल किशोर के परिवार से मिलने भी पहुंचे। जुगल किशोर का निधन कुछ समय पूर्व ही कोरोना वायरस से हुआ था। इसके अतिरिक्त भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने एम्स बिलासपुर का दौरा कर वहां के प्रबंध तंत्र व प्रमुख डॉक्टरों से भी बात की। यहां पर ओपीडी अगले 1 माह के अंदर शुरू होने की संभावना है। इन सभी कार्यक्रमों के बीच जगत प्रकाश नड्डा ने भाजपा के विभिन्न पदाधिकारियों के साथ बैठक की और उन्हें जीत के लिए जुटने का संदेश दिया। इन कार्यक्रमों में मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर के साथ ही प्रदेश सरकार के कई मंत्री व भाजपा पदाधिकारी उपस्थित रहे।

भाजपा को उत्तर प्रदेश जिला पंचायत अध्यक्ष चुनाव में मिली बड़ी सफलता

भारतीय जनता पार्टी ने उत्तर प्रदेश की जिला पंचायत अध्यक्ष की 75 सीटों में से 67 सीटों पर कब्जा कर लिया। इन 67 सीटों में से भी 21 पर भाजपा के प्रत्याशी निर्विरोध चुन लिए गए। बाकी सीटों पर मतदान हुआ। जहां भाजपा के हाथ सफलता लगी। बसपा ने इन चुनावों में अपने प्रत्याशी खड़े नहीं किए थे। भाजपा का मुकाबला सपा, रालोद और कांग्रेस गठबंधन से था। शेष बची 8 सीटों में से 1 सीट पर रालोद, 4 सीटों पर सपा उम्मीदवारों को जीत मिली। इसके अतिरिक्त एक सीट रघुराज प्रताप सिंह उर्फ राजा भैया की पार्टी जनसत्ता दल को मिली। एक सीट पर निर्दलीय प्रत्याशी ने जीत दर्ज की, जबकि एक सीट पर भाजपा-अपना दल का संयुक्त प्रत्याशी विजयी रहा। ऐसा माना जा रहा है की इसमें मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और भाजपा की रणनीति के साथ ही बसपा के चुनाव न लड़ने के निर्णय ने भी पार्टी की जीत में सहयोग दिया है।

पूर्वोत्तर भारत की खबरें

■ राजीब अगस्ती/आलोक सिंह

असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा ने राष्ट्रपति सहित कई केंद्रीय मंत्रियों से की मुलाकात, चाणक्य वार्ता के प्रतिनिधिमंडल से भी मिले

असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा ने राजधानी दिल्ली में राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद, केंद्रीय मंत्रियों स्मृति ईरानी, प्रह्लाद जोशी और अन्य केंद्रीय मंत्रियों से मुलाकात की। उन्होंने असम के पूर्व मुख्यमंत्री सर्वानंद सोणोवाल से मिलकर उन्हें कैबिनेट मंत्री बनाये जाने पर शुभकामनाएं दी। चाणक्य वार्ता के एक प्रतिनिधिमंडल ने असम भवन में मुख्यमंत्री से मुलाकात की और असम में चाणक्य वार्ता की गतिविधियों के बारे में अवगत कराया। पत्रिका के संरक्षक लक्ष्मीनारायण भाला ने अपनी लिखित पुस्तक 'हमारा संविधान : भाव एवं रेखांकन' मुख्यमंत्री को भेंट की, जबकि संपादक डॉ अमित जैन ने अंग वस्त्र और चाणक्य वार्ता के विशेषांक मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सरमा को भेंट किये। मुख्यमंत्री ने उस समय के असम राज्य की चर्चा की, जब राज्य आतंक के दौर से गुजर रहा था और खुलेआम व्यक्तियों का अपहरण और हत्या कर दी जाती थी। उस समय के असम से लेकर वर्तमान असम की विकास यात्रा का स्मरण करते हुये मुख्यमंत्री भावुक हो गये। उन्होंने इस आंदोलन के समय संघ की भूमिका और श्रीमंत शंकरदेव शिशु निकेतन की तारीफ करते हुये कहा कि इन संगठनों के कारण ही आज हम भरा-पूरा असम देख रहे हैं। मुख्यमंत्री ने बताया कि प्रधानमंत्री की पहल पर असम राज्य को निरंतर विकास की ओर अग्रसर किया जा रहा है।

कोरोना से हालात को समझने के लिये केंद्र सरकार त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश और मणिपुर में भेजेगी टीम

जहां एक ओर पूरे देश में कोरोना के मामले तेजी से घट रहे हैं, वहीं दूसरी ओर पूर्वोत्तर भारत इस महामारी से बुरी तरह प्रभावित है। इसके पीछे के कारण को समझने और इसका हल निकालने के लिये केंद्र सरकार एक उच्च स्तरीय चिकित्सा विशेषज्ञों की टीम पूर्वोत्तर के तीन राज्यों त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश व मणिपुर में भेजेगी। यदि कोरोना के सक्रिय मामलों की बात करें तो समाचार लिखे जाने तक मणिपुर में 6700 से अधिक, त्रिपुरा में 4100 से अधिक व अरुणाचल प्रदेश में 3400 से अधिक लोग अपना उपचार करा रहे थे। इसी तरह का हाल पूर्वोत्तर के अन्य प्रदेशों में भी है।

टीके की दोनों डोज लगवाने वालों को ही सिक्किम में मिलेगा प्रवेश

कई देशों की तर्ज पर अब सिक्किम सरकार ने भी देश के अन्य राज्यों के लिये प्रदेश को खोल दिया है, लेकिन इसके लिये कोरोनारोधी वैक्सीन की दोनों डोज लगवाने का सर्टिफिकेट दिखाना अनिवार्य होगा। दरअसल सिक्किम सहित पूर्वोत्तर के अन्य प्रदेशों में बहुत से मनोरम स्थान हैं, जो पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। पिछले कुछ वर्षों में यहां आने वाले पर्यटकों की संख्या भी पहले से बढ़ने लगी थी, लेकिन कोरोना के कारण इन प्रदेशों का पर्यटन उद्योग ठप्प पड़ गया है। सिक्किम में फिलहाल 2000 से अधिक कोरोना के सक्रिय मामले हैं, लेकिन राज्य सरकार प्रदेश की अर्थव्यवस्था को ठीक करने के लिये सावधानी रखते हुये यह जोखिम उठाना चाहती है।

नागालैंड के पूर्व मुख्यमंत्री टी आर जेलियांग ने प्रदेश सरकार पर लगाए गंभीर आरोप

नागालैंड प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री तथा वर्तमान में विपक्ष के नेता टी आर जेलियांग ने प्रदेश के राज्यपाल आर.एन. रवि से मिलकर राज्य सरकार पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उनके द्वारा राज्यपाल को सौंपे गये ज्ञापन में कहा गया कि प्रदेश सरकार कोरोना वायरस से निपटने में पूरी तरह नाकाम रही है।

इस महामारी से निपटने के लिए जिन संसाधनों की आवश्यकता थी, उन्हें उपलब्ध नहीं कराया गया। एक प्राइवेट अस्पताल को महामारी से निपटने के लिए 30 करोड़ रुपये दे दिए गए, जबकि यह धनराशि सरकारी चिकित्सा व्यवस्था को अच्छा करने के लिए खर्च की जानी थी। जेलियांग ने आरोप लगाया कि दीमापुर में बनने वाले एक क्रिकेट स्टेडियम की लागत 25 करोड़ से बढ़ाकर 75 करोड़ कर दी गई। इसमें सीधे-सीधे मुख्यमंत्री के बेटे का हाथ है। यह काम उन्हीं को दिया गया था। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा एक्ट के अंतर्गत भी ठीक से कार्य नहीं हो रहा है।

गरीबों को आवश्यक राशन उपलब्ध नहीं कराया जा रहा है। इसमें भी अनियमितताओं के साथ ही भारी भ्रष्टाचार हुआ है। इसी तरह ग्रीन फील्ड एयरपोर्ट निर्माण में भी गड़बड़ी की गई है। 2009 में इस एयरपोर्ट के लिए आवश्यक जमीन खरीदी गई थी, लेकिन वर्तमान प्रदेश सरकार ने ऊंचे दामों पर और अधिक जमीन खरीदी है, जिसके कारण राज्य पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ पड़ा है। इसे बचाया जा सकता था। कोहिमा मेडिकल कॉलेज पूरे प्रदेशवासियों की उम्मीद है। यह मेडिकल कलेज 2018 में बनकर तैयार हो जाना चाहिए था, किंतु इसमें बहुत अधिक देरी की जा रही है। इस कारण अब उम्मीद है की शायद इस मेडिकल कॉलेज में पढ़ाई 2022-23 से प्रारंभ हो सके।

इसी तरह कोहिमा स्मार्ट सिटी प्रोजेक्ट में भी धांधली की गई है। राज्यपाल से मिलने वाले प्रतिनिधिमंडल में टी आर जेलियांग के साथ ही कई विधायक भी उपस्थित रहे।

दक्षिण भारत की खबरें

■ नवरतन पींचा जैन/वेदप्रकाश पांडेय

मुख्यमंत्री केसीआर ने 1320 घरों का किया उद्घाटन

तेलंगाना के मुख्यमंत्री के. चंद्रशेखर राव (केसीआर) के द्वारा राजन्ना सिरसिल्ला जिले के मांडेपल्ली में डिग्निटी हाउसिंग योजना के अंतर्गत बनाये गये दो रुम वाले 1320 घरों का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर केसीआर ने कहा कि संयुक्त करीमनगर जिले के हर गांव में गोदावरी नदी का पानी जमीन की सिंचाई के लिये उपलब्ध कराया जायेगा। कलेश्वरम परियोजना के पूरा हो जाने के बाद सिरसिल्ला जिला पानी का मुख्य केंद्र होगा। मुख्यमंत्री कार्यालय द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया कि केसीआर के द्वारा शांतिनगर के मांडेपल्ली एंड नर्सिग कॉलेज में इंस्टीट्यूट ऑफ ड्राइविंग, ट्रेनिंग एंड रिसर्च सेंटर (आईडीटीआर) का उद्घाटन भी किया गया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री के द्वारा नर्सिंग छात्रों की छात्रवृत्ति बढ़ाने की घोषणा भी की गयी।

आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री की बहन शर्मिला ने तेलंगाना में बनाई नयी पार्टी

आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री जगन मोहन रेड्डी की बहन वाईएस शर्मिला ने भी राजनीति में अपनी किस्मत अजमाने का निर्णय लिया है। इसके लिये उन्होंने पड़ोसी राज्य तेलंगाना को चुना है। इसके लिये उनके द्वारा वाईएसआर तेलंगाना पार्टी की घोषणा की गई। उनके भाई जगन मोहन ने भी अपनी पार्टी का नाम वाईएसआर कांग्रेस रखा है। वाईएस युदुगुरी संदीप्ति का शार्टकट है। यह शब्द पूरे परिवार की पहचान है।

शर्मिला ने घोषणा की कि वे अपनी पार्टी के गठन के 100 दिन पूरे होने पर तेलंगाना राज्य की पदयात्रा शुरु करेंगी और जमीनी स्तर पर लोगों की समस्याओं को समझने का प्रयास करेंगी। उनके द्वारा तेलंगाना के मुख्यमंत्री केसीआर पर आरोप लगाया गया कि उन्होंने अपने वादे पूरे नहीं किये हैं।

आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री ने कृष्णा नदी परियोजना पर प्रधानमंत्री से मांगी मदद

कृष्णा नदी परियोजना प्रारंभ से ही आंध्र प्रदेश और तेलंगाना राज्य के बीच विवाद का कारण बनी हुई है। एक ओर जहां तेलंगाना इस परियोजना के अंतर्गत हाईड्रो पॉवर सहित विभिन्न कार्य शीघ्र पूरा कर लेना चाहता है, तो वहीं आंध्र प्रदेश को लगता है कि इससे उसे मिलने वाला पानी प्रभावित होगा। इसी कारण आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री जगन मोहन रेड्डी ने इस विषय पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से हस्तक्षेप की मांग करते हुये सहयोग मांगा। आंध्र प्रदेश के सिंचाई मंत्री पी. अनिल कुमार ने आरोप लगाया कि तेलंगाना की सत्ताधारी पार्टी टीआरएस के नेता जगन मोहन रेड्डी के लिये अक्सर ही आपत्तिजनक शब्दों का प्रयोग करते रहते हैं, यह निंदनीय है।

कर्नाटक सरकार कर रही है किराये पर घर देने के संबंध में अधिनियम की तैयारी

मकान मालिक और किरायेदार के मध्य विभिन्न विषयों को लेकर विवाद भारत के लगभग प्रत्येक स्थान पर होता रहता है। कुछ राज्यों ने इन विवादों का सौहार्दपूर्ण समाधान निकालने के लिये नियम बनाये हैं। अब कर्नाटक की येदियुरप्पा सरकार भी इसी तरह का कानून 'मॉडल टेनेंसी कानून' लाने की तैयारी कर रही है। फिलहाल यह कानून अधिनियम के रुप में लागू किया जायेगा। प्रदेश के राजस्व मंत्री आर अशोक ने बताया कि नये अधिनियम में किरायेदारी अधिनियम को और सरल बनाया जायेगा। पहले कर्नाटक में किराया सरकार तय करती थी। अब इसे मकान मालिक और किरायेदार आपसी सहमति से निर्धारित कर सकेंगे। विवाद की स्थिति में संबंधित अधिकारी को 60 दिन में समाधान निकालना होगा।

डॉ. दिलीप धींग द्वारा अनूदित पुस्तिका का विमोचन

भारतीय रक्षाविज्ञान के शिल्पी पद्मविभूषण डॉ. दौलतसिंह कोठारी के 115वें जन्मदिन पर 6 जुलाई को उदयपुर में डॉ. दौलतसिंह कोठारी शोध व शिक्षा संस्थान का उद्घाटन हुआ। पद्मविभूषण डॉ. आर.ए. माशेलकर के मुख्य आतिथ्य में आयोजित समारोह में चेन्नई के वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग द्वारा हिंदी में रूपांतरित पुस्तकाकार विवरणिका एवं संस्थान की स्मारिका का विमोचन किया गया। इससे पूर्व सुखाड़िया विश्वविद्यालय परिसर में डॉ. कोठारी की प्रतिमा के समक्ष पुस्तक वितरण कार्यक्रम में डॉ. कोठारी के बारे में पद्मविभूषण (स्व.) डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी की कविता एवं डॉ. दिलीप धींग द्वारा रचित गीत का पाठ किया गया। इस अवसर पर महाराणा प्रताप कृषि व प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. नरेन्द्र सिंह राठौड़, समाजसेवी राजीव सुराणा एवं डॉ. कोठारी के परिजनों सहित बड़ी संख्या में प्रबुद्धजन उपस्थित थे।

तमिलनाडु के राज्यपाल ने पेरियार विश्वविद्यालय में नए कुलपति को किया नियुक्त

तमिलनाडु के राज्यपाल बनवारीलाल पुरोहित ने प्रदेश के पेरियार विश्वविद्यालय में डॉ. आर. जगन्नाथन को नया कुलपति नियुक्त किया है। उनका कार्यकाल पदभार ग्रहण करने के समय से तीन वर्ष के लिये होगा। इस संबंध में चेन्नई राजभवन से जारी विज्ञप्ति में बताया गया कि डॉ. जगन्नाथन को शिक्षण के क्षेत्र में 39 वर्षों का अनुभव है। वे इससे पूर्व तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय में विभिन्न पदों का निर्वाहन कर चुके हैं। उनके शोध पत्र 55 से अधिक प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। डॉ. जगन्नाथ ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी 14 शोध पत्र प्रस्तुत किये हैं तथा विश्व पटल पर पांच शैक्षणिक अथवा शोध कार्यक्रमों का आयोजन भी किया है। डीन सहित शिक्षा क्षेत्र में उनके द्वारा दिये गये योगदान को देखते हुये उन्हें पेरियार विश्वविद्यालय का कुलपति नियुक्त किया गया है।

हरियाणा सरकार

राष्ट्रीय मधुमक्खी पालन एवं मधु मिशन

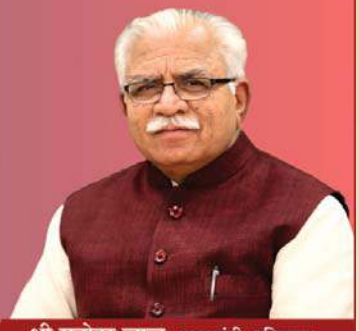

श्री मनोहर लाल, मुख्यमंत्री, हरियाणा

मधुक्रांति पोर्टल पर 'पंजीकरण' हेतु

मधुक्रांति पोर्टल

सभी मधुमक्खी पालकों/एफ.पी.ओ./सोसायटी व शहद विपणन में कार्यरत हितधारकों को सूचित किया जाता है कि भारत सरकार द्वारा शहद व अन्य उत्पाद के स्त्रोत का पता लगाने बारे मधुक्रांति पोर्टल **https://www.allbankcare.in/nbb/** का शुभारम्भ किया गया है, जिस पर मधुमक्खी पालन में जुड़े सभी हितधारक अपना ऑनलाइन पंजीकरण कर सकते हैं।

पंजीकरण अवधि

विभाग द्वारा गठित जिला स्तर पर ब्लॉक स्तरीय टीम द्वारा दिनांक **15.06.2021** से **15.07.2021** तक सभी मधुमक्खी पालकों व अन्य हितधारकों से सम्पर्क करके उनका पंजीकरण किया जाएगा।

पंजीकरण आवेदक

सभी मधुमक्खी पालकों/एफ.पी.ओ./सोसायटी व शहद विपणन में कार्यरत हितधारकों से अनुरोध है कि मधुक्रांति पोर्टल पर अपना पंजीकरण करवायें व विभागीय टीम का सहयोग करें।

पंजीकरण लाभ

मधुक्रांति पोर्टल पर पंजीकृत मधुमक्खी पालक ही भविष्य में विभागीय स्कीमों का लाभ प्राप्त कर सकेंगे।

अधिक जानकारी के लिए सम्बन्धित जिला उद्यान अधिकारी कार्यालय में सम्पर्क करें।

उद्यान विभाग, हरियाणा

उद्यान भवन, सेक्टर–21, पंचकूला, हरियाणा–134112

Email- hortharyana@gmail.com ; Website- www.hortharyana.gov.in

सूचना, जन सम्पर्क एवं भाषा विभाग, हरियाणा । www.prharyana.gov.in @Cmohry @DiprHaryana

www.centuryply.com
CENTURYPLY®
LAMINATES | PLY
CenturyPly and CenturyLaminates come with specially designed surface treatment - ViroKill Technology.
Contains Activated Nanoparticles
Ruptures and kills 99.99% viruses on surface contact
Saves you from contamination
Now With
VIROKILL
Kills 99.99% Viruses
Raho Befikar
Corporate Office: Century House, P-15/1, Taratala Road, Kolkata – 700088
+91 33 39403950
1800-5722-122
customerhelpdesk@centuryply.com
Century Plyboards India Limited
Century Plyboards (India) Ltd.
Century Plyboards India Ltd
Century Plyboards (India) Limited
Century Plyboards (I) Limited

ISO 9001 Certified
SKIPPER
PIPES
FIXED FOR LIFE
COMPLETE RANGE OF PVC PIPES AND BATH FITTINGS
CPVC | UPVC | SWR | UGD | HDPE | BOREWELL | AGRICULTURE
CISTERN | SEAT COVER | BATH FITTINGS
NSF
pw
FOR ENQUIRY : enquiry@skipperlimited.com | Toll Free : 1800 120 6842

पश्चिम भारत की खबरें

■ आशा सिंह देवासी/धीरेन बरोट

राज्यपाल कोश्यारी से मिले भाजपा विधायकों ने उद्धव सरकार को बताया अलोकतांत्रिक

महाराष्ट्र विधानसभा सत्र भले ही इस बार छोटा रहा हो, लेकिन इसमें हंगामा बहुत बड़ा था। दो दिनों के इस मानसून सत्र में भाजपा के 12 विधायकों को 1 वर्ष के लिये सदन से निलंबित कर दिया गया। भाजपा का आरोप है कि उसके सिर्फ चार सदस्य ही वेल तक गये थे, फिर इस आधार पर 12 विधायकों को निलंबित क्यों किया गया। यहां एक बात और ध्यान देने वाली है कि राज्यपाल के पास उद्धव ठाकरे सरकार की ओर से विधानमंडल में मनोनीत किये जाने वाले 12 ही सदस्यों की फाइल लंबित है। इसी विषय को लेकर निलंबित भाजपा विधायकों ने महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी से मुलाकात की। भाजपा विधायक आशिष शेलार ने आरोप लगाया कि हम सभी पर टेबिल प्रेसिडेंट से अपशब्द कहने का आरोप लगाया जा रहा है। लेकिन सोशल मीडिया पर जो वीडियो शेयर किया जा रहा है, उसमें भी कहीं भाजपा के किसी भी विधायक द्वारा सदन का अपमान किये जाने की बात नहीं है। शिवसेना सरकार का यह फैसला पूरी तरह से एकतरफा और अलोकतांत्रिक है। महाविकास अघाड़ी ने लोकतंत्र की शवयात्रा निकाली है। यह बात हमने राज्यपाल श्री कोश्यारी को भी बतायी है। उन्होंने इस विषय को गंभीरता से लेने का आश्वासन दिया है।

भाजपा और शिवसेना के साथ आने की चर्चा अफवाह : उद्धव ठाकरे

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री और शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे ने उन मीडिया रिपोर्ट को खारिज करते हुये कहा है कि उनकी पार्टी और भाजपा एक साथ नहीं आ सकते। भाजपा के विधायकों ने जिस प्रकार विधानसभा में पीठासीन अधिकारी के साथ दुर्व्यवहार किया है, वह अलोकतांत्रिक है। हम पर लोकतंत्र की हत्या का आरोप लगाया जा रहा है। इसे काला दिन कहा गया। जब भाजपा केंद्रीय एजेंसियों का दुरुपयोग करती है, तो उसे क्या सफेद कहना चाहिए। दरअसल शिवसेना के राज्यसभा सांसद और पार्टी के प्रमुख प्रवक्ता संजय राउत के एक बयान के बाद ऐसा माना जा रहा था कि दोनों पार्टियां साथ आ सकती हैं क्योंकि महाविकास अघाड़ी में शामिल तीनों ही दल समय-समय पर आपस में ही एक दूसरे का विरोध करते हुये दिखायी देते हैं। किंतु फिलहाल तो यह गठबंधन टूटता हुआ नहीं दिखायी दे रहा है।

गृह मंत्री अमित शाह ने किया गुजरात का दौरा

केंद्रीय गृह व सहकारिता मंत्री और गांधी नगर से सांसद अमित शाह तीन दिवसीय गुजरात के दौरे पर आये। इस दौरे में उन्होंने कई विकास कार्यों का उद्घाटन व शिलान्यास किया। उनके द्वारा नेशनल फोरेंसिक साइंस विश्वविद्यालय के द्वारा महिला सुरक्षा पर आयोजित सम्मेलन में भाग लिया गया। वे सपरिवार भगवान जगन्नाथ की मंगला आरती में भी शामिल हुये। उनके द्वारा जिन अन्य कार्यक्रमों में भाग लिया गया, उनमें गांधी नगर के पुस्तकालय व सिविक सेंटर का उद्घाटन, साणंद में खेती बाड़ी बाजार समिति भवन, आंगनवाड़ी केंद्र, रोड और स्मार्ट क्लास रुम आदि का शिलान्यास शामिल है। ऐसा माना जा रहा है कि जिस प्रकार गुजरात में सहकारिता का मॉडल रहा है, वैसा ही प्रयास अमित शाह सहकारिता मंत्री बनने के बाद पूरे देश में करेंगे। यद्यपि समाचार लिखे जाने तक उन्होंने इसकी कोई घोषणा नहीं की थी। इस दौरे पर जाने से पूर्व केंद्रीय गृह मंत्री ने गुजरात में हैजा से होने वाली मौतों व बीमार लोगों के प्रति अपनी चिंता व्यक्त की और संबंधित अधिकारियों से भी बात की। इसके बाद स्थानीय प्रशासन सजग हुआ और बीमार व्यक्तियों तक आवश्यक उपचार उपलब्ध कराने का प्रयास शुरु किया।

पहली बार गोवा का कोई नेता बना राज्यपाल, प्रदेश में भी अब पूर्णकालिक राज्यपाल

देश के सबसे छोटे प्रदेशों में से एक गोवा ने बहुत से अनुभवी राजनेता दिये हैं, लेकिन अभी तक इस राज्य से किसी नेता को राज्यपाल बनने का अवसर नहीं मिल पाया। स्वतंत्रता के बाद पहली बार गोवा के प्रमुख समाजसेवी, भाजपा के वरिष्ठ नेता, पूर्व मंत्री और गोवा विधानसभा के अध्यक्ष रहे राजेंद्र आर्लेकर को देवभूमि हिमाचल प्रदेश का राज्यपाल बनाया गया है। गोवा की राजधानी पणजी में 16 मार्च 2019 को कला आकादमी के सभागार में आयोजित चाणक्य वार्ता के गोवा विशेषांक के विमोचन एवं परिचर्चा समारोह में गोवा की तत्कालीन राज्यपाल श्रीमती मृदुला सिन्हा पधारी थीं। इस आयोजन में श्री राजेन्द्र आर्लेकर को आचार्य चाणक्य सम्मान प्रदान किया गया था और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती अनघा देशपांडेय ने समारोह का कुशल संचालन किया था। आर्लेकर परिवार बहुत ही सरल स्वभावी एवं देशभक्त है। वहीं दूसरी ओर गोवा को काफी समय बाद अपना पूर्णकालिक राज्यपाल मिल गया है। इससे पहले राज्य का दायित्व महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी के पास था। अब मिजोरम के राज्यपाल श्रीधरन पिल्लई को गोवा के राज्यपाल की जिम्मेदारी दी गयी है। श्री पिल्लई एक विद्वान व्यक्ति हैं, जिन्होंने लॉकडाउन के बीच भी अपनी दर्जनों पुस्तकें लिखी हैं। उनके संबोधन भी अत्यंत सारगर्भित और प्रमाणिक होते हैं। श्री पिल्लई भी चाणक्य वार्ता द्वारा आयोजित पूर्वोत्तर परिसंवाद के अंतर्गत मिजोरम राज्य की परिचर्चा में मुख्य अतिथि के रुप में भाग ले चुके हैं।

सरकारी नौकरियाँ आज के हर युवा का सपना है। अपने इसी सपने की पूर्ति के लिये हर कोई अपने स्तर पर प्रयासरत है। आपके इसी प्रयास में साथ देने के लिए हमने 'चाणक्य वार्ता' में इस जॉब नोटिफिकेशन को स्थान दिया है, जिससे किसी भी सरकारी नौकरी की सूचना आप तक पहुंच सके। आशा है यह कॉलम आपके लिए लाभदायक सिद्ध हो रहा होगा।

सरकारी नौकरियों में अवसर

सी.ए. स्वीटी जैन

असम टी एम्पलाइज प्रोविडेंट फंड ऑर्गेनाइजेशन
पद : जूनियर असिस्टेंट
संख्या : 25
अंतिम तिथि : 14 अगस्त 2021
वेबसाइट : www.atppf.nic.in

उत्तराखंड अधिनस्थ सेवा चयन आयोग
पद : विभिन्न
संख्या : 513
अंतिम तिथि : 5 अगस्त 2021
वेबसाइट : www.sssc.uk.gov.in

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग
पद : डिप्टी एसपी
संख्या : 15
अंतिम तिथि : 4 अगस्त 2021
वेबसाइट : www.mppsc.nic.in

हैवी वाटर बोर्ड
पद : कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
संख्या : 6
अंतिम तिथि : 2 अगस्त 2021
वेबसाइट : www.hwb.gov.in

ऑयल इण्डिया लिमिटेड
पद : कनिष्ठ सहायक
संख्या : 120
अंतिम तिथि : 15 अगस्त 2021
वेबसाइट : www.oil-india.com

गेल
पद : विभिन्न
संख्या : 220
अंतिम तिथि : 5 अगस्त 2021
वेबसाइट : www.gailonline.com

भारतीय जल सेना
पद : विभिन्न
संख्या : 40
अंतिम तिथि : 30 जुलाई 2021
वेबसाइट : www.joinindiannavy.gov.in

पंजाब अधिनस्थ सेवा चयन बोर्ड
पद : पशु निरीक्षक
संख्या : 866
अंतिम तिथि : 30 जुलाई 2021
वेबसाइट : www.sssb.punjab.gov.in

नेताजी सुभाष यूनिवर्सिटी ऑफ टेक्नोलॉजी
पद : विभिन्न
संख्या : 126
अंतिम तिथि : 31 जुलाई 2021
वेबसाइट : www.nsit.ac.in

हैवी इंजीनियरिंग कार्पोरेशन
पद : विभिन्न
संख्या : 206
अंतिम तिथि : 31 जुलाई 2021
वेबसाइट : www.hecltd.com

संकलनकर्ता 'चाणक्य वार्ता' की आर्थिक सलाहकार हैं। ई-मेल **sjsweetyj@gmail.com**

सूर्या फाउण्डेशन द्वारा पोषण वाटिका हेतु बीज वितरण का कार्यक्रम सम्पन्न

सूर्या फाउण्डेशन एक सामाजिक सुप्रसिद्ध संस्था है जो पिछले 30 वर्षों से देश हित के लिए लगातार कार्य कर रही है। संस्था, आदर्श गाँव योजना के अंतर्गत देश के 18 राज्यों के 400 गाँवों में सेवा कार्य कर रही है। इसके तहत 600 शिक्षकों तथा 50 पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं के द्वारा पाँच आयाम— शिक्षा, संस्कार, समरसता, स्वास्थ्य और स्वावलंबन को आधार बनाकर कार्य चल रहा है।

वर्तमान समय में खेती में ज्यादा से ज्यादा उपज लेने के लिए अधिक से अधिक रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशक दवाओं का उपयोग किया जा रहा है। जिसके कारण रोज नई-नई गम्भीर बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं। बड़ी संख्या में लोग बीमार पड़ रहे हैं। हमारे नागरिकों की आय का एक बड़ा हिस्सा इलाज में चला जाता है।

ग्रामवासियों का स्वास्थ्य अच्छा रहे, कोई बीमार न हो, सबको पोशक भोजन मिले, गाँव का पैसा गाँव में रहे, इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए संस्था के चेयरमैन पद्मश्री जयप्रकाश जी की प्रेरणा से घर-घर पोषण वाटिका अभियान चलाया गया। इस अभियान के अंतर्गत 50 गाँवों के 2000 परिवारों में 10 प्रकार की सब्जियों जैसे—लौकी, तोरई, बैगन, टमाटर, हरी मिर्च, मूली, गाजर, भिंडी, कद्दू और सेम के बीज वितरित किए गए। ये उन्नत किस्म के बीज भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान से खरीदकर वितरित किए जा रहे हैं। साथ ही पोषण वाटिका को जैविक विधि से करने का प्रशिक्षण भी सूर्या फाउंडेशन द्वारा दिया गया।

पहला सुख निरोगी काया के भाव से चलाए गये इस अभियान का परिणाम भी दिखाई दे रहा है। एक ओर जहाँ ग्रामीणों को जैविक ताजी एवं हरी सब्जियाँ मिल रही हैं तो वहीं दूसरी ओर उनके धन की भी बचत हो रही है। महिलाएँ, बच्चे पोषण वाटिका बनाने और उसकी देखभाल में बहुत रुचि ले रहे है। आने वाले दिनों में यह अभियान पूरे गाँव को सब्जियों के विषय में आत्मनिर्भर बनने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

सिनेमा ■ टेलीविजन ■ आयोजन

डॉ. महेश्वर

पृष्ठ 23 का शेष भाग

व तकली चलाते रहते थे तथा सूत कातते हुए ही बैठकें करते रहते थे।

पांच सालों से मोहिते बाड़ा में संघ शाखा लग रही थी। अब ऐसी स्थिति में अंग्रेज अधिकारियों ने मोहिते बाड़े के मालिक साहूकार जैन को भड़काया और उसे वहां घर बनाने का बहाना बना कर संघ कार्यक्रम बंद करने के लिए कहा। कुछ कार्यकर्ताओं ने यह बात राजा लक्ष्मणराव भोंसले को जाकर बताई। लक्ष्मणराव भोंसले डॉक्टर जी के अनन्य मित्र थे। उन्होंने कहा कि ''कोई बात नहीं, तुम शाखा मेरे हाथी खाने में लगाओ।''

इस तरह मोहिते बाड़े वाली शाखा राजा साहब के हाथी खाने में लगने लगी। अंग्रेज अधिकारियों को यह और भी नागवार गुजरा। उन्होंने राजा साहब को कहा कि संघ की सहायता करके आप प्रकारांतर से राजनीतिक गतिविधियों में भाग ले रहे हैं, यह अच्छा नहीं। इस पर राजा साहब ने उत्तर दिया— ''मेरे पूर्वज शिवाजी का जो झण्डा मेरे महल पर फहरा रहा है, वही भगवा झण्डा संघ वाले अपनी शाखा में लगाते हैं, शिवाजी और समर्थ रामदास की जय बोलते हैं, प्रार्थना करते हैं। इस तरह जो काम मेरा है, वह ये करते हैं। अत: संघ धार्मिक कार्य है, यह तो चलेगा ही। जब तक लक्ष्मण भोंसले जिन्दा है, इसे कोई रोक नहीं सकता।'' (कृष्णराव मोहरील, प्रथम संघ शाखा, पृष्ठ-10)

राजा साहब के इस स्पष्ट और दो टूक उत्तर से सरकारी अधिकारी चुप होकर चले गए।

इतना ही नहीं, तो इस वर्ष के विजयादशमी उत्सव की अध्यक्षता भी राजा साहब ने ही की। इस अवसर पर उन्होंने स्वयंसेवकों को उत्साहित करते हुए कहा—''डॉक्टर हेडगेवार द्वारा आरंभ किए गए इस पवित्र कार्य को परिश्रमपूर्वक आगे बढ़ाइए।... संघ के विरोधियों ने इसे गिराने के अधम प्रयत्न न किए होते, तो आज आप जो देख रहे हैं, उससे कहीं अधिक प्रगति हुई होती। आज भी उस प्रकार के प्रयत्न हो रहे हैं।'' (ना.ह. पालकर, डॉ. हेडगेवार चरित्र, पृष्ठ-242)

यह तब था जब डॉक्टर हेडगेवार जी जेल में थे।

विजयादशमी के पथ-संचलन में इस बार नागपुर-कारागृह के सामने से गुजरते समय स्वयंसेवकों ने कारागृह की ओर मुख करके मान-वंदना की। यह मान-वंदना उन सब सत्याग्रहियों के प्रति थी, जो उस समय उस कारागृह में बंद थे। (क्रमश:)

लेखक इतिहासकार व संघ विचारक हैं।
ई-मेल : response50123@gmail.com

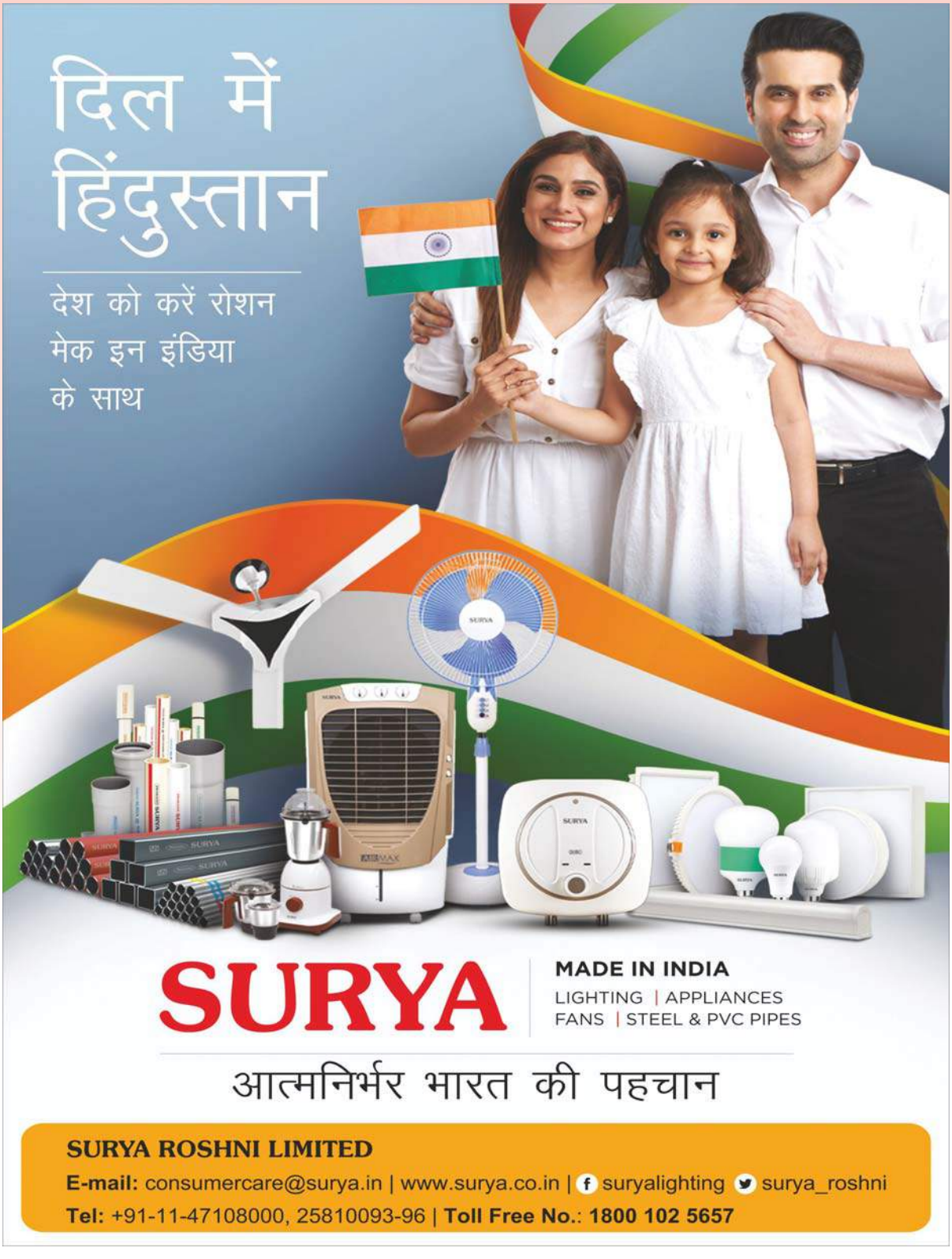
दिल में
हिंदुस्तान
देश को करें रोशन
मेक इन इंडिया
के साथ
SURYA
MADE IN INDIA
LIGHTING | APPLIANCES
FANS | STEEL & PVC PIPES
आत्मनिर्भर भारत की पहचान
SURYA ROSHNI LIMITED
E-mail: consumercare@surya.in | www.surya.co.in | suryalighting surya_roshni
Tel: +91-11-47108000, 25810093-96 | Toll Free No.: 1800 102 5657

HIGH-TENSILE THREADED REBAR

Hot Rolled Threaded Bars
Key features:

- Fully threaded bar - can be cut and coupled at any point
- Robust thread - ideal for use on construction sites
- Coarse pitch thread form with two flats ensures self-cleaning of thread

Metaroll
Leading Steel Manufacturers
www.threadedrebars.com

IDPS
Enlightening lives

International Divya Parivar Society

(Registered with Govt. of National Capital Territory of Delhi, Reg. No.5/WEST/2011 5300145)

LEADING NGO IN SKILL DEVELOPMENT

Handicraft Training

Computer Training

Food Product Training

General Sewing Training

Artificial Jwelary Making Training

Certificate & Cheque Distribution

For any query contact us at : 09718681010

divyaparivar@gmail.com • http://www.facebook.com/divya.parivar • htto://www.twitter.com/divya_parivar

www.divyaparivar.co.in

प्रत्येक माह 1 व 16 तारीख को प्रकाशित
पोस्ट करने की तारीख : 3-4 व 17-18
नई दिल्ली से प्रकाशित
Posted at Delhi RMS - 110006

RNI No. DELHIN / 2016 / 65854
Postal Regn No. DL(W) 10/2230/2019-21
Licensed to Post without Pre-payment
of Postage L.No. U(W)-13/2019-21

हर अंक संग्रहणीय

गौरवशाली प्रकाशन को 6 वाँ वर्ष

देश के 26 राज्यों पर केन्द्रित
विशेषांक प्रकाशित करने वाली
एक मात्र हिन्दी पत्रिका

देश-विदेश की लोकप्रिय पाक्षिक

चाणक्य वार्ता

राजभाषा हिन्दी की संपूर्ण अन्तरराष्ट्रीय पत्रिका

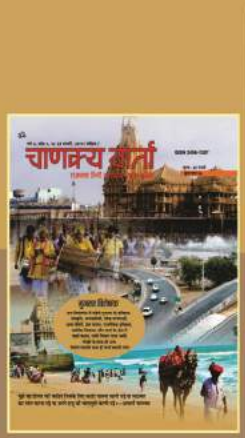

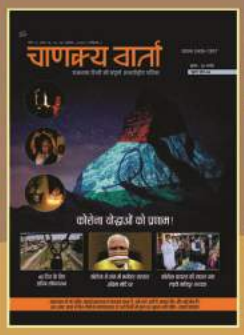

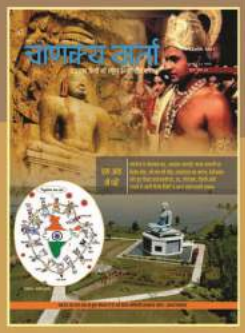

शुल्क
वार्षिक सदस्यता शुल्क : रुपये 500 मात्र
पंच वार्षिक 2000 रुपये मात्र

संपर्क
ई-मेल : chanakyavarta@gmail.com
मो. 8571841127, 9871909808

आपकी पसंदीदा पत्रिका अब
ई-बुक रूप में पढ़ें
ऑनलाइन मात्र 20 रुपये में NotNul

chanakya.varta2016 YouTube chanakyachannelandwebinar www.chanakyavarta.com